अखण्ड ज्योति

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वार्षिक मूल्य ३),] १ मई सन् १९५७ ई० [एक अंक का ।).

* गायत्री महिमा *

(श्रीमती विद्यावती जी, ज्वालापुर.)

प्रकाशकीय निवास
[illegible], [illegible]

चारों वेदों में तीन विषय, जो ऋषियों ने बतलाये हैं ।
दे इस गागर गायत्री में, सागर की तरह समाये हैं ॥
जो इस गागर को गा-गा-कर, सारे जग में गुंजा देगा ।
उसको भगवान सुगमता से, भव सागर पार लगा देगा ॥
इस महामन्त्र को जो निशिदिन, नर तन पाकर नहिं ध्याता है ।
वह ज्ञान हीन होकर जग में, नर पशु की पदवी पाता है ॥
यह सारे भव--भय हरणी है, यह सत्य ज्ञान की सरणी है ।
तर जाओगे जो ध्याओगे, यह भव सागर की तरणी है ॥
वेदों की है एक जान यही, योगियों का है यह ध्यान सही ।
गन्धर्वों का है गान यही, भक्तों की है एक शान यही ॥
देवों की है सुर तान यही, ज्ञानियों का है धन मान यही ।
वह महामलिन मानव होगा, जिस हृदय में इसका स्थान नहीं ॥
मां ने अपने अनन्त ज्ञान से, दिया है एक इनाम यही ।
नसनस को इसमें स्नान करा, है सबसे सुन्दर काम यही ॥
जो गायत्री मां के चरणों में, निशिदिन शीश नवाता है ।
रहती न उसको चाह कोई, वह शहनशाह बन जाता है ॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धर्म तंत्र का मूल तत्व

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसने अन्य जीवों की अपेक्षा जो उन्नति की है उसका प्रधान कारण उसकी सामाजिक सामूहिक मनोवृत्ति है। मिल जुल कर काम करने और एक दूसरे की सहायता देने के स्वभाव ने ही शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, विज्ञान, शिल्प, आदि अनेक दिशाओं में मनुष्य को बढ़ाया है। विवाह, कुटुम्ब, जाति, सम्प्रदाय, राष्ट्र, सभा, सम्मेलन, संगठन आदि इसी मनोवृत्ति के आधार पर बने।

मनुष्य ने यह भली प्रकार जान लिया है कि वह एक दूसरे से अलग अलग होकर नहीं, मिल जुल कर एक दूसरे को सहयोग देकर ही आगे बढ़ सकता है। अपनी कठिनाइयों और कमियों को दूर कर सकता है।

इस सामूहिकता की मनोवृत्ति को 'देव' तत्व कहते हैं। क्योंकि इस भावना को बढ़ाने में त्याग, संयम, सेवा, प्रेम, उपकार आदि गुणों की आवश्यकता पड़ती है। इसके विपरीत एक और मनोवृत्ति मनुष्य में काम करती है जिसे 'स्वार्थ परता' कहना चाहिए। इसकी प्रेरणा दूसरों से अपने लिए अधिकाधिक लाभ लेना, और बदले में कम से कम देने की इच्छा प्रबल होती है। [illegible] बेईमानी, छल, शोषण, अन्याय, संग्रह, विलासिता आदि की वृद्धि होती है। इस मनोवृत्ति को 'असुर' तत्व कहते हैं। यह दोनों ही देव, असुर मनोवृत्तियां परस्पर निरन्तर संघर्ष करती रहती हैं। गीताकार ने तत्वतः इसी देवासुर संग्राम का वर्णन किया है और अर्जुन को निमित्त बना कर जन साधारण को असुरता—स्वार्थ परता—को पराजित करने और केवल—लोक हित—को विजयी बनाने के लिए आन्तरिक संघर्ष करते रहने का निर्देश किया है।

चलता रहता है। परिस्थितियों के कारण कभी देवत्व प्रबल हो जाता है तो कभी असुरता की चढ़ बनती है। व्यक्ति गत जीवन की भाँति, सामूहिक जीवन में भी यह उतार चढ़ाव आते रहते हैं। कोई काल सज्जनों की अधिकता का होता है तो किसी में दुर्जनों की भर मार रहती है। सतयुग कलियुग आदि का यही आधार है। बात यह है कि मनुष्य के अन्दर असुरता, पाशविकता, स्वार्थ परता की मात्रा अधिक रहती है। निम्न गामी मनोवृत्तियाँ सरल और प्रबल होती हैं उन्हें बढ़ते देर नहीं लगती। ऊर्ध्व गामी, देवत्व प्रधान प्रवृत्तियां कठिन और परिणाम में मन्द, सौम्य एवं साधारण होती हैं जिनके कारण भौतिक दृष्टि से अधिक लाभ मिलते नहीं दीखते इस लिए उनमें उतना आकर्षण नहीं होता जितना असुरता के सिद्धान्तों में। इसलिए बहुधा मन की प्रवृत्ति व्यक्तिगत स्वार्थ साधन की ओर ही अधिक रहती है। पानी को फैलाया जाय तो वह नीचे की ओर बिना किसी प्रयत्न के बह निकलेगा किन्तु यदि पानी को ऊपर चढ़ाना हो तो उसके लिए अनेक प्रकार के साधन जुटाने पड़ते हैं तब कहीं धीरे धीरे थोड़ी सफलता मिलती है।

आसुरी तत्वों की प्रबलता और देवत्व में सौम्यता के कारण बार बार ऐसे अवसर आ जाते हैं कि व्यक्तियों में तथा समाज में सामूहिकता की प्रवृत्ति घट जाती है और स्वार्थ परता बढ़ जाती है। उस असंतुलन की स्थिति को सँभाल कर संतुलन कायम करने के लिए कोई महापुरुष देवदूत, अवतार आते हैं और बुराइयों को घटाने, अच्छाइयों को बढ़ाने के अपने उद्देश्य को पूरा करके चले जाते हैं। यह तो हुई विशेष परिस्थितियों को, विशेष रूप से समाधान करने वाले विशेष महापुरुषों की बात। पर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

को नियंत्रित करने और देवत्व को प्रोत्साहन देने के लिए कुछ आत्माओंको प्रयत्न करते रहना होताहै यदि यह प्रयत्न न हों तो भ्रष्टाचार अत्यन्त तीव्र गति से फैलता है और जन मन की स्थति असुरता से आछन्न हो जाती है।

हर वस्तु से एक मैल निकलता है। समय समय पर उसकी सफाई करते रहना पड़ता है। यदि वह सफाई न की जावे तो गन्दगी और बीमारी फैलती हैं। बर्तन, कपड़ा, मकान शरीर आदि किसी भी वस्तु को लें–उन पर मैल जमने की प्रक्रिया होती रहती है। मिट्टी, साबुन, बुहारी, जल आदि वस्तुओं से उनकी जल्दी जल्दी सफाई करनी पड़ती है। यदि सफाई की यह क्रिया बन्द करदी जावें तो यह वस्तुऐं मलीनता से भर जाती हैं। मानवीय मन तथा समाज की भी यही स्थिति है। मन में भी एक प्रकार की गन्दगी और मलीनता उत्पन्न होती रहती है जिसे स्वार्थपरता, वासना, तृष्णा आदि नाम दिये जाते हैं। इसकी सफाई जल्दी जल्दी न की जाती रहे तो मन की यह गन्दगी बहुत बढ़ जाती है और कुछ ही दिनों में वह बढ़ी हुई मानसिक मलीनता वाला व्यक्ति एक प्रकार से विषाक्त रक्त वाले छूत के रोगी की तरह–अपने लिए ही नहीं–निकट वर्ती अन्य लोगों के लिए भी हानिकारक एवं कष्ट कारक बन जाता है। उसकी बुरी नीयत, बुरी आदत, बुरी भावना, बुरी विचार धारा–उससे इस प्रकार के कार्य बलात् कराती रहती है जो दूसरों के लिए समस्त समाज के लिए कष्ट कारक होते हैं। अपने भौतिक लाभ की बात सोचते रहने से मनुष्य के स्वभाव में काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्षा, द्वेष, असत्य, दंभ, आलस्य, चोरी, अनीति, निष्ठुरता आदि अनेकों बुराइयां पैदा हो जाती हैं और वे बुराइयां जब मनः क्षेत्र से बाहर निकल कर वाणी तथा क्रिया में प्रकट होती हैं तो उनका रूप कलह एवं कुकर्म के रूप में ही सामने आता है।

यह प्रवृत्ति एवं प्रक्रिया जब अधिक लोगों में अधिक मात्रा में बढ़ जाती है तब लोग, हैजा, चेचक आदि महामारियों की तरह "सामाजिक अनाचार" का रोग फैल जाता है और उसकी कष्ट कारक परिणित से सभी लोग नाना प्रकार के दुख पाते हैं। चोरी, बेईमानी, अनीति, हत्या, लूट, व्यभिचार, उद्दंडता, आलस्य, शोषण, विलासिता, संघर्ष, द्वेष आदि की अनेकों दुष्प्रवृत्तियां अनेक रूपों में फूट पड़ती हैं। जिससे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सर्वत्र अशान्ति दीख पड़ती है। घर, परिवार, मुहल्ले, ग्राम, देश, राष्ट्र, समाज अनेक छोटी मोटी घटनाओं एवं परिस्थितियों को लेकर आपस में टकराते, घायल होते, दुख पाते और बर्बाद होते हैं।

यों नदी नालों में होकर असीम मात्रा में पानी बह कर व्यर्थ जाता रहता है। पर यदि उसका सदुपयोग करना होता है तो उस जल को काम में लाने के लिए अनेक व्यवस्थाएँ बनानी पड़ती है। घाट, बाँध, नहर, पम्प, नाव, जहाज आदि साधनों की सहायता से वह भयङ्कर जल धारा जिससे हानि की ही आशा की जाती थी–बदल कर बड़ी उपयोगी एवं लाभदायक बन जाती है। यदि यह उपाय न किये जांय तो नदी नालों से लाभ मिलना तो दूर उलटे वे अनेक प्रकार से बाधक बनेंगे। यही बात मनुष्य की प्रवृत्तियों के संबंध में भी है। उसके भीतर से जो असुरता–स्वार्थ परता–हर घड़ी फूटती रहती है उसे नियंत्रित करने के लिए घाट, बांध, नहर आदि की तरह धार्मिक–नैतिक–दैवी–भावनाओं के नियंत्रण स्थापित करने पड़ते हैं। यह तंत्र जब तक मजबूत रहता हैं–लोग एक दूसरे के प्रति अधिक उत्तम व्यवहार करते हैं, एक दूसरे के लिए त्याग और प्रेम का परिचय देते हैं फल स्वरूप सब के मन प्रसन्न रहते हैं, सामाजिक सुव्यवस्था कायम रहती है और साथ ही भौतिक उन्नति के साधन भी बनते हैं। पर जब यह धर्मतंत्र शिथिल होने लगता है तब असुरता की प्रवृत्ति अन्तरात्मा के भीतर सौम्य गति से काम करने वाली दैवी वृत्ति को परास्त करके अपनी प्रभुता स्थापित कर लेती है। और इस पृथ्वी पर नरक के दृश्य उपस्थित हो जाते हैं। नर तनुधा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

व्याघ्र ही हाट बाजारों में, घर द्वारों में, खेत खलिहानों में, सभा संस्थाओं, मन्दिर मसजिदों में दफ्तर राजद्वारों में, घूमते दिखाई पड़ते हैं। अपनी कुटिलता को छिपाने के लिए बातें बढ़ चढ़ कर बनाते हैं पर उनके कार्यों पर बारीक निगाह डालते ही नाक को सड़ा देने वाली गन्दगी उड़ती दिखाई पड़ती है।

जब धर्म तंत्र अधिक अस्त व्यस्त हो जाता है तब उसकी मरम्मत करने के लिए—बड़े देवदूतों अवतारों—पैगम्बरों—महापुरुषों के रूप में अत्यन्त प्रभाव शाली आत्माएँ आती हैं और अपने महान व्यक्तित्व; प्रबल पुरुषार्थ, एवं सत्पुरुषों के सहयोग से उस अव्यवस्था को रोक कर पुनः उस देवत्व की—सामूहिकता की—भावना को जन मन में प्रवाहित कर देने में सफलता प्राप्त करती हैं। पर यह तो उस समय की बात है जब दुर्घटना की घोर विपन्न स्थिति आ जाय। साधारण समय में अवतारों की नहीं, ऋषियों की आवश्यकता रहती है। उन्हें ही ब्राह्मण भी कहते हैं। इस श्रेणी के व्यक्ति अपने आपको तप त्याग, संयम, ज्ञान उदारता एवं लोक हित जैसी प्रवृत्तियों को कूट कूटकर अपने अन्दर भरते हैं और एक मजबूत बांधकी तरह सुदृढ़ आधार पर खड़े होते हैं। फिर वे एक वज्र शिला की भाँति जन मानस की धारा को उचित दिशा में मोड़ने के लिए दृढ़ता पूर्वक अड़ जाते हैं। अपनी सीमित सामर्थ्य के अनुसार सीमित क्षेत्र वे चुनते हैं पर उसी क्षेत्र में अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व, उच्च आदर्श एवं प्रचण्ड पुरुषार्थ द्वारा सहस्रों मनुष्यों के भीतर असुरता—स्वार्थ परता—को घटाने एवं देवत्व—सामूहिकता को बढ़ाने में सफलता प्राप्त करते हैं। यह ब्राह्मण एवं ऋषि ही किसी जाति की सच्ची सम्पत्ति होते हैं। इनका मूल्य सोने की खानों और रत्न राशियों से भी असंख्य गुना अधिक होता है। जिस देश में, जिस समाज में, सच्चे ब्राह्मण पैदा करते रहने की प्रसव शक्ति होती है उसकी विजय वैजन्ती सदा दशों दिशाओं में फहराती रहती है।

धर्म तंत्र का कलेवर अत्यंत विस्तृत है। वेद, शास्त्र, दर्शन, स्मृति, पुराण आदि के सहस्रों ग्रन्थ मौजूद हैं। जप, तप, संयम, ध्यान, साधन आदि के अनेक विधान हैं। तीर्थयात्रा, ब्रह्मभोज, दान-पुण्य, कथा, कीर्तन, व्रत, उपवास, त्यौहार, संस्कार आदि अनेक कर्मकाण्ड हैं। इन सब का एक-मात्र उद्देश्य यह है कि व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा में ऐसे विचार, विश्वास, भाव एवं संस्कार धारण करे जिनके द्वारा उस की व्यक्तिगत स्वार्थपरता घटे और लघुता को महत्ता में—आत्मा को महान आत्मा-परमात्मा—में विकसित करने की प्रेरणा मिले। सब के अन्तःकरण में निवास करने वाली—प्राणिमात्र की एकता को सब के साथ आत्म भाव स्थापित करने की—विश्व मानव की उपासना ही, ईश्वरा राधन का तत्व ज्ञान है। इस दार्शनिक तथ्य को स्वाध्याय, सत्संग, साधन, कर्मकाण्ड, दान-पुण्य आदि अनेक प्रकारो के माध्यम से हृदयंगम करने का प्रयत्न किया जाता है। परम्पराओं के अनुसार धर्म तंत्र के यह विधि-विधान तो चलते रहते हैं पर कालान्तर में उनके भीतर छिपे हुए—सिद्धान्तों आदर्शों और तथ्यों को लोग भूलने लगते हैं। ब्राह्मणों-ऋषियों का कार्य जनता को इन उपचारों की सहायता से जन-साधारण की अन्तरात्मा में देवत्व की मनोवृत्ति को प्रदीप्त करना होता है। साधरण जनता के उथले मानसिक स्तर को देखते हुए वे अनेक आयोजनों की व्यवस्था करते हैं पर मूल लक्ष एक ही रहता है कि मनुष्य अपनी शक्तियों से केवल अपना ही लाभ न सोचे—उसे अपनी क्षमता द्वारा दूसरों का हित करते रहने के महान तथ्य का भी ध्यान रहे—कम से कम दूसरों के अधिकारों का अनीतिपूर्वक हनन तो न करे। मनुष्यों की यह मनोवृत्ति जितनी ही प्रबल होती जाती है उतनी ही सुख शान्ति की संभावना संसार में बढ़ती जाती है।

धर्मतंत्र की स्थापना एवं व्यवस्था का उद्देश्य यही है। अरबों रुपयों के विशाल भवन, देव-मन्दिर इसी दृष्टि से बने हैं। करोड़ों रुपयों का वार्षिक खर्च सन्त-महन्त, पंडे, पुजारी, साधु ब्राह्मण अनेकों

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

माध्यमों से जोकुछ करते हैं उसका उद्देश्यमूल यही है अवतार भी इसी कार्य के लिए होते हैं। साधु ब्राह्मण भी इसीलिए तप त्याग करते हैं। पर आज तो स्थिति दूसरी हो रही है। धर्म तंत्र का कलेवर खड़ा है, इमारतें खड़ी हैं; कर्मकाण्ड और विधि-विधान भी होते हैं; साधु ब्राह्मणों की ५६ लाख मनुष्यों की एक बड़ी सेना भी मौजूद है; पर उद्देश्य का—आदर्श का—लक्ष का—पता नहीं। फलस्वरूप जन-मानस के अन्तस्तल में धार्मिकता की-आध्यात्मिकता की-श्रद्धा की—भावनाऐं दिन-दिन शिथिल होती जाती हैं।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य की व्यक्तिगत और संसार की सामूहिक सुख शान्ति उस की अन्तरात्मा में निवास करने वाली—सामूहिकता पर, एक दूसरे के लिए त्याग और सहयोग करने की भावना पर ही निर्भर है पाशविक वृत्ति-स्वार्थपरता पर नियंत्रण स्थापित करना ही असंख्य प्रकार के कष्टों पर विजय प्राप्त करना है। चूंकि यह कार्य भौतिक नहीं आन्तरिक है इसलिए इसे राजदंड आदि किसी बाह्य उपाय से पूरा नहीं किया जा सकता। इसके लिए तो धर्म तंत्र ही सर्वश्रेष्ठ प्रक्रिया है। इसकी रक्षा के लिए सत्पुरुष अपना जीवन बलिदान करते हैं और इसी के लिए भगवान तक दौड़े आते हैं। हमें इस धर्म तंत्र की वर्तमान दुरवस्था पर विचार करना होगा और उसे पुनः सुव्यवस्थित करने के लिए मजबूत कदम उठाना होगा। तभी संसार की सुखशान्ति को स्थिर रखने वाली मनुष्य की एकमात्र दैवी-प्रवृत्ति-सामाजिकता एवं सामूहिकता-को सुव्यवस्थित रखा जा सकेगा।

❀ हिन्दू धर्म का वास्तविक स्वरूप ❀

(श्री सर्वपल्लन राधाकृष्णन्)

हिन्दू धर्म की एक बहुत बड़ी विशेषता "तर्क-प्रेम" है। यहाँ के विद्वानों ने विश्व की समस्याओं का जो समाधान किया है वह किसी एक व्यक्ति के कथन या किसी एक धर्म-पुस्तक के आधार पर नहीं है, वरन् चार-पाँच हजार वर्ष तक लगातार दार्शनिक और धार्मिक समस्याओं पर निष्पक्ष भाव से विचार करके उन्होंने कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। इसे ब्राह्मण सभ्यता कहते हैं, क्योंकि इसका संचालन उन ब्राह्मणों के हाथ में था जो किसी बात का निर्णय करते समय मन के किसी विकार या क्षोभ से विचलित नहीं होते थे और आत्मा की सच्ची अनुभूति के आधार पर ही जीवन के उच्चतम् सिद्धान्तों की खोज करते थे।

जगत की जिस विशेषता ने हिन्दू दार्शनिकों को सत्य के अनुसन्धान की ओर आकर्षित किया, वह है इसकी—अनित्यता। उन्होंने देखा कि हम जिस जगत को देखते हैं उसमें बराबर परिवर्तन होता रहता है। उन्होंने अपने मन में प्रश्न किया कि—"क्या यह अनित्यता ही संसार का वास्तविक सत्य स्वरूप है, अथवा इस परिवर्तन और विनाश की कोई सीमा भी है?" उन्हें उत्तर मिला—"जगत में एक ऐसी वस्तु भी है जो नित्य है, अविनाशी है—वह है परब्रह्म।" हम सब के जीवन में कभी ऐसा समय आ जाता है जब हम इस अनन्त सत्य की अनुभूति करते हैं, जब हमें इस महान रहस्य का किंचित आभास मिलता है। जब हमारे जीवन में कोई बहुत बड़ी शोक पूर्ण घटना होती है और जब हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि हम बिलकुल दीन, हीन और सर्वथा अनाथ हैं, उस समय भी हमारे हृदय में स्थित परमात्मा हमें बराबर यह अनुभव कराता है कि ये सांसारिक दुःख, आपत्तियाँ तो उस बड़े नाटक की क्षुद्र घटनाऐं मात्र हैं जिसका अंत शक्ति, सौन्दर्य और प्रेम में होगा। उपनिषद् स्पष्ट वाणी में कह रहे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं कि—"यदि इस विश्व में आनन्द न होता तो यहाँ कोई जीव प्राण धारण ही कैसे करता ?" वास्तव में यह दिखलाई पड़ने वाला जगत उसी एक ब्रह्म की तरह-तरह के रूपों में अभिव्यक्ति है, जो समस्त सृष्टि का आधार है।

इस प्रकार अति प्राचीन काल से एकेश्वरवाद ही हिन्दू धर्म का मुख्य आदर्श रहा है। ऋग्वेद में सर्वत्र उस एक ही परमात्मा—"एकम् सत्"—का जिक्र आया है, जिसका वर्णन पंडित लोग नाना रूपों में करते हैं। उपनिषदों में बताया गया है कि एक ही ब्रह्म अनेक रूपों में प्रकट होने के कारण अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। त्रिमूर्ति—ब्रह्मा, विष्णु, महेश की कल्पना महाकाव्य रचने वालों ने की और पुराणों के लेखकों ने उसे खूब अच्छी तरह पका कर दिया। सृष्टि के तीन गुण—सत, रज, तम, से ही इन देवताओं की कल्पना की गई। विश्व के रक्षक विष्णु परमात्मा के सत्व-प्रधान रूप हैं, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा उसी ईश्वर के रजोगुण प्रधान रूप हैं, और सृष्टि संहारक शिव उसी ईश्वर के तमः प्रधान रूप को प्रकट करते हैं। एक ही ईश्वर के तीन विभिन्न गुणों को विकसित करके तीन विभिन्न व्यक्ति बना दिये गये हैं और इनमें से प्रत्येक अपनी ही विशेष शक्ति से काम करता है। इस विचार से रमा, सरस्वती और उमा की भी कल्पना करली गई। सच तो यह है कि ये सभी गुण एक ही परमात्मा में इस प्रकार मिले हुये हैं कि हम यह भी नहीं कह सकते कि परमात्मा निर्गुण है। एक ही अज्ञेय, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान ईश्वर भिन्न-भिन्न लोगों को भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रतीत होता है। एक प्राचीन शास्त्र का कहना है कि साधकों की सुविधा के लिये ही निराकार परमात्मा को साकार कल्पित कर लिया गया है।

दार्शनिक मनोवृत्ति के व्यक्ति उदार विचारों के होते हैं। उसी की प्रेरणा से विभिन्न श्रेणी के व्यक्तियों की बुद्धि के अनुसार हिन्दू लोग विभिन्न सम्प्रदायों में दोष नहीं समझते। भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न धर्मों या मतों के अनुयायी बनें यह तो बिलकुल स्वाभाविक ही है। डंडे या तलवार के जोर से किसी का धर्म परिवर्तन कराना हिन्दू-मस्तिष्क को सर्वथा निरर्थक बात जान पड़ती है। जब आर्य लोग इस देश के उन आदि निवासियों से मिले जो भांति-भांति के देवताओं की पूजा करते थे तो उन्होंने—एकाएक उनके मतों को दबा देने की बात नहीं सोची क्योंकि उनके मत से आखिर सभी लोग उसी एक परमात्मा की तलाश में हैं। भगवत गीता का कथन है कि—"यदि कोई उपासक भगवान के श्रेष्ठतम स्वरूप तक नहीं भी पहुँच सका है; तो भी उसकी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं करते।" हिन्दू दार्शनिक यद्यपि स्वयं बहुत ऊँचे आदर्श का पालन करते थे; पर वे यह भी जानते थे कि साधारण मनुष्य एकाएक उनतक नहीं पहुँच सकते। इसलिये उन्होंने आदि वासियों पर किसी प्रकार बर्बरता पूर्ण बल प्रयोग नहीं किया; वरन् बड़ी सावधानी से उनके विचारों का विकास करने लगे। अज्ञान के कारण लोक में जिन नीचे दर्जे के देवताओं की उपासना हो रही थी; उसे भी उन्होंने स्वीकार कर लिया; केवल इतना कहा कि वे सब भी उसी एक परम महान ईश्वर के आधीन हैं—

अप्सु देवा मनुष्याणां, दिवि देवा मनीषिणाम्।
बालानां काष्ठ लोष्टेषु, युक्तास्त्वात्मिन देवतः॥

"कुछ लोगों के देवता जल में, कुछ के स्वर्ग में, और कुछ के लकड़ी, पत्थर आदि सांसारिक पदार्थों में पाये जाते हैं, पर विद्वान अपने सच्चे परमात्मा को अपनी आत्मा में ही पाते हैं।" इसी प्रकार के एक अन्य श्लोक में कहा गया है—

अग्नौ कृत्यवतो देवो, हृदि देवो मनीषणाम्।
प्रतिमा स्वोल्पल बुद्धीनाम् ज्ञानिनां सर्वतः शिवः॥

"कर्मशील व्यक्ति का ईश्वर अग्नि में, भावुक का भगवान हृदय में, मन्द बुद्धि का मूर्ति में, एवं ज्ञानी का परमात्मा सर्वत्र ही निवास करता है।"

हिन्दू धर्म तथा दर्शन में माना जाता है कि समय-समय पर आने वाला सृष्टि और प्रलय का चक्र उस एक ही विश्वात्मा के विकसित तथा संकुचित होने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

का चिह्न है। वह विश्वात्मा सदा अपरिवर्तन शील भी रहता है, और परिवर्तनशील भी। समस्त संसार उसी ईश्वर का व्यक्त अथवा दिखाई पड़ने वाला रूप है। सायणाचार्य का कहना है कि "परमात्मनःसर्वेऽपि पदार्थाः—आविर्भावोपाधेयाः" अर्थात् संसार में दिखलाई पड़ने वाले समस्त पदार्थ परमात्मा के आविर्भाव के उपाधेय माना है। ये पदार्थ भिन्न-भिन्न दर्जों में बाँट दिये गये हैं। "इनमें से जो सांस लेते हैं वे श्रेष्ठ हैं; उनमें वे श्रेष्ठ हैं। जिनके मस्तिष्क या बुद्धि का विकास हुआ है; उनमें वे श्रेष्ठ हैं जो ज्ञान का प्रयोग करते हैं; और सर्वश्रेष्ठ वे हैं— जिन्होंने प्राणिमात्र में ब्रह्म की एकता का अनुभव कर लिया है अर्थात् जो समस्त प्राणियों को ब्रह्म का अंश और इस प्रकार आत्मवत् समझते हैं" (मनु०)

मनुष्य के भीतर जो अनन्त की भावना है वह इस 'सान्त' (अन्त होने वाले) संसार के नाशवान रूप से संतुष्ट नहीं होती। मनुष्य के दुःखों का वास्तविक कारण यही है कि वह अपने भीतर ईश्वर को नहीं देख पाता। अपने भीतर की अनन्त की भावना को हम जीवन में जितनी अधिक व्यवहार में लाकर दिखला सकेंगे, हम उतने ही उच्च समझे जायेंगे। इस प्रकार की अनन्त भावना की बहुत प्रबल अभिव्यक्तियाँ ही अवतार कहलाती हैं। अवतार कोई अद्भुत चमत्कार पूर्ण ईश्वर का संसार में प्रकट होना नहीं है। वे तो उसी महानशक्ति की उच्च अभिव्यक्तियाँ हैं जिनकी सामान्य अभिव्यक्ति मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों में पाई जाती हैं। गीता का वचन है कि— "यद्यपि ईश्वर सभी पदार्थों में है, पर वह विशेष रूप से उसी पदार्थ में व्यक्त होता है जिसमें महत्ता पाई जाती है।" हिन्दू धर्म किसी ऐसे परमात्मा में विश्वास नहीं करता जो अपने सिंहासन पर बैठा-बैठा प्रत्येक व्यक्ति को जाँचता है और उसके भले बुरे कर्मों का निर्णय किया करता है। हिन्दू धर्म के अनुसार तो ईश्वर मनुष्य में ही है, और वह कर्म करके उन्नति के किसी भी शिखर पर चढ़ सकता है।

---

* भगवान की लीला और हमारी लीलाएँ *

(श्री० जगत नारायण जी)

संसार में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जितने कार्य हो रहे हैं उनमें एक प्राकृतिक नियम काम कर रहा है। यद्यपि एक साधारण मनुष्य को समस्त प्राणियों तथा विभिन्न जातियों और सभ्यताओं के जन्म-मरण अथवा आविर्भाव और नाश में कोई खास तथ्य नहीं जान पड़ता, पर उन पर गम्भीर रूप से विचार करने से यही विदित होता है कि विश्व में जो कुछ भी हो रहा है वह ईश्वरीय-विधान का अंग है। इसको हम भगवान की लीला भी कह सकते हैं।

साधारणतः लोग भगवान की लीला से प्राकृतिक लीला का भाव नहीं लेते। भगवान के भिन्न-भिन्न अवतारों को ही वे भगवान की लीला समझते हैं। अवतारों में भी रामावतार और कृष्णावतार की लीलाएँ ही विशेष प्रसिद्ध हैं। आज भी लोग इन लीलाओं की नकल करते हैं, पर दुःख की बात है कि वे न तो उनके असली मतलब को समझते हैं और न उन अवतारों के दिखाये रास्ते पर चलते हैं। इसके विपरीत वे उन लीलाओं की नकलों को अपनी पतित रुचि के अनुसार ऐसा विकृतकर देते हैं कि वे हमारा कल्याण करने के बजाय अकल्याणकारी बन जाती हैं!

भगवान के अवतार लेने के अनेक गूढ़ कारण होते हैं जिनका पता शास्त्रों का गहन अध्ययन करने से लग सकता है। यदि हम उन सब को न भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमें यह तो सीखना चाहिये कि हम अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करें। रामलीला और कृष्ण लीला करने का यही असली तात्पर्य है।

पर इस समय इस अभिप्राय को लोगों ने बहुत कुछ भुला दिया है। इसके बजाय वे यह समझ बैठे हैं कि भगवान की इन लीलाओं की नकल करने से वे हम पर खुश होंगे और हमारे पापों का नाश कर हम को स्वर्ग के सुख देंगे तथा इस लोक में भी हमारा कल्याण करेंगे। इस प्रकार का विचार करने वाले लोगों में से बहुत से बड़े भोले होते हैं और उनके हृदय में भक्ति भाव भी होता है, पर उनको अच्छाई-बुराई का विवेक बहुत कम रहता है। खास कर जो लोग मंडलियाँ बनाकर इन लीलाओं को करते हैं वे तो अर्थ का अनर्थ ही कर डालते हैं। साधारण जनता को अधिक संख्या में आकर्षित करने के उद्देश्य से वे इन लीलाओं के बीच में ऐसी-ऐसी भद्दी नकलें मिला दिया करते हैं कि जो मनुष्यों की पाशविक वृत्तियों को उत्तेजित करने वाली होती हैं। विशेष कर ऐसी बातें कृष्ण भगवान की लीलाओं में और खास कर उनकी रासलीला में पाई जाती हैं। श्री रामचन्द्र जी और श्री कृष्ण भगवान के जीवन-ऐसे पवित्र, आदर्श तथा प्रेम पूर्ण थे कि यदि उन पर थोड़ा भी विचार किया जाय तो मनुष्य के हृदय में अवश्य ही उच्च वृत्तियाँ जागृत हो सकती हैं और उसमें स्वभावतः ऊँचे आदर्शों पर चलने की अभिलाषा उत्पन्न हो सकती हैं। पर हमारे समाज के मुखियों का ध्यान इधर कम रहता है और साधारण श्रेणी के लोग तो ऊँची शिक्षाओं के बजाय हँसी मजाक की तथा वासनाओं को उत्तेजित करने वाली बातों को ही अधिक पसंद करते हैं। इस लिये आजकल लीलाओं से लाभ के बजाय हानि ही अधिक होने लगी है।

हमारा उद्देश्य लीलाओं का विरोध करना नहीं है। यह तो एक ऐसी अच्छी रीति है जिसके द्वारा साधारण अपढ़ जनता को अच्छी से अच्छी शिक्षा चरित्र पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। पर इनका सदुपयोग करने से जिस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है उसी प्रकार इनका दुरुपयोग करने से मनुष्य का चरित्र सहज में भ्रष्ट भी किया जा सकता है। आजकल इनका दुरुपयोग करके समाज को हानि ही अधिक पहुँचाई जा रही हैं। सौ-पचास वर्ष पहले जब वर्ष में एकाध बार कृष्ण लीला हुआ करती थी तब लोग भक्ति के साथ जाकर उसका तमाशा देखते थे। पर आजकल इस कार्य को करने वाली जो अनेकों मंडलियाँ बन गई हैं उनकी लीलाओं और तमाशे के प्रभाव से अनेक नवयुवकों तथा नवयुवतियों का चरित्र भ्रष्ट हो जाता है इसमें तनिक भी संदेह नहीं। इस बुराई का अनुभव सभी सज्जन पुरुष करते हैं और समय-समय पर उनके विरुद्ध शिकायतें भी सुनने में आती हैं।

इस लिये हमारा कहना यही है कि आप रामलीला और कृष्ण लीला तो अवश्य कीजिये, पर उनको उचित रीति से, उचित भाव से, उचित श्रद्धा के साथ करना चाहिये। ऐसी महत्व पूर्ण, प्रभावशाली और पवित्र लीलाओं में गन्दे भावों और विचारों के प्रवेश करने का मौका कभी नहीं आने देना चाहिये। इनका उद्देश्य मनुष्य का चरित्र गठन करना है। इसलिये इन लीलाओं को करते समय या देखते समय चरित्र तथा जीवन के सुधार के लक्ष्य को सदैव ध्यान में रखना चाहिये। जो लोग इनको भक्ति के भाव से देखते हैं वे भी अच्छा ही करते हैं, पर भक्ति के असली तत्व पर भी कुछ विचार करना चाहिये। हम अक्सर ऐसा समझा करते हैं कि भाई हम भगवान के नाम को रट लें अथवा भगवान की लीला को देख आयें तो भगवान हमारे सभी पापों का नाश करके हमारे दुखों को दूर करेंगे। इस भाव का नतीजा यह होता है कि जब हम भगवान के नाम पर पूजा, पाठ, जप आदि करते हैं तो हम समझते हैं कि उस समय तक किये पापों का नाश हो गया, और फिर हम जान बूझ कर उन्हीं पाप के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उसका भी कुछ असर मनुष्य के ऊपर पड़ता ही है, पर इसके साथ-साथ अपने चरित्र और जीवन को सुधारने की भी कोशिश करनी चाहिये। ऐसी कोशिश न करके केवल भगवान के भरोसे बैठे रहना कि उनका नाम लेने से ही सब पाप कट जायेंगे, यह अपने आपको धोखा देना है। याद रखिये कि भगवान अन्तर्यामी हैं, उनसे कोई भी बात नहीं छिप सकती, मनुष्यों के हृदय की गुप्त से गुप्त बात को वे जानते हैं, इस लिये उनको धोखे में नहीं डाला जा सकता। भगवान के नजदीक वही मनुष्य सच्चा हो सकता है जिसका हृदय साफ है, और भगवान उसी की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता को स्वयम् उद्यत होता है। इन बातों को ध्यान में न रख कर आज भगवान को हमने अपने पापों तथा अकर्मण्यता को छिपाने की एक आड़ बना रखा है।

गीता में भी भगवान ने भक्ति की बड़ी बड़ाई की है, पर साथ ही उन्होंने यह भी बतलाया है कि सच्ची भक्ति वही है जो ज्ञान युक्त है और कर्म का भी त्याग नहीं करती। भगवान की भक्ति तभी उचित रीति से पालन की जा सकती है जब मनुष्य उनकी लीला के अभिप्राय को समझ कर सर्वांङ्ग भाव से उसे पूरा करने में अपने आपको लगा देता है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि इस समय भगवान की लीला का जो दुरुपयोग होने लगा है उसे सुधार का हम प्रयत्न करें और लीलाओं को उनके वास्तविक रूप में करके उनसे लाभ उठायें।

---

* विलासी मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकता *

(महात्मा टाल्सटाय)

वर्तमान समय में संसार में जो अनेकों प्रकार के भ्रम फैले हैं उनमें से एक मुख्य भ्रम यह भी है कि मनुष्य अपनी वासनाओं की पूर्ति में लगे रहते हैं, इस वासनामय जीवन को अच्छा समझते हैं, और साथ ही यह भी खयाल करते रहते हैं कि उनका जीवन उपयोगी, न्याय तथा प्रेम पूर्ण माना जा सकता है। यह बात इतनी आश्चर्यजनक है कि मेरे ख्याल से आने वाली पीढ़ियाँ यह समझ ही न सकेंगी कि 'उत्तम जीवन' से हमारे पूर्वजों का तात्पर्य क्या था ? जब धनिक वर्गके ठूँस-ठूँसकर खाने वाले विलासी और कामुक लोगों के लिये यह कहा जाय कि वे उत्तम जीवन बिताते थे, तो फिर यह समझ सकना बड़ा कठिन है कि खराब जीवन किसको कहा जा सकता है ? आप धर्म और अध्यात्म के सिद्धान्तों को तो दूर रख दीजिये अगर न्याय और मानवता के साधारण नियमों के अनुसार भी विचार करें तो आप यही कहेंगे कि धनिक वर्ग के इन विलासी लोगों को 'उत्तम जीवन' की चर्चा करने का कोई अधिकार नहीं है।

इसलिये हमें यह कहने में तनिक भी शङ्का नहीं कि जो कोई आदमी उत्तम जीवन बिताने का निश्चय करें उसके लिये यह आवश्यक है कि वह सब से पहले बुरा जीवन व्यतीत करना त्याग दे, और उस दुष्ट जीवन के वातावरण को ही नष्ट कर दे जिससे वह घिरा रहता है। यदि हमारा समस्त जीवन सच्चा, न्याय पूर्ण और दयालु हो तभी हमारा कोई काम सत्कार्य माना जा सकता है यदि हमारा आधा जीवन अच्छा हो और आधा बुरा हो तो हमारे कार्य अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी। पर यदि हम सर्वथा बुरा और गलत जीवन बिता रहे हैं, तो हम जो काम करेंगे वह बुरा ही हो सकता है, अच्छे काम की आशा करना ही व्यर्थ है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हमारे धनिक वर्ग का जीवन आजकल ऐसा हो गया है कि उसके वातावरण में रह कर मनुष्य से अच्छे कार्यों का हो सकना असम्भव है। हम यह कहना चाहते हैं कि जो मनुष्य भोग विलास में डूबा है वह कभी सत्यतापूर्ण जीवन नहीं बिता सकता। जब तक वह अपने जीवन में परिवर्तन नहीं करता, सत्य की ओर जाने वाली पहली सीढ़ी पर पैर नहीं धरता, जब तक सद् जीवन के लिये वह जो भी प्रयत्न करेगा, सब निष्फल जायेंगे। आध्यात्मिक दृष्टि से जीवन को नापने का एक ही तरीका है और वह यह कि मनुष्य खुद को कितना प्रेम करता है और दूसरों को कितना? हम खुद को जितना कम प्रेम करेंगे, अपने लिये जितनी कम चिन्ता करेंगे, और अपने स्वार्थ के लिये दूसरों से जितना ही कम काम करायेंगे उतने ही उत्तम हम हो सकते हैं। दूसरों से जितना अधिक प्रेम करके हम उनके लिये जितना परिश्रम करेंगे उतना ही हमारा जीवन उत्तम माना जायगा। संसार के सभी सन्त पुरुषों ने अच्छाई का यही अर्थ बतलाया है, सभी सच्चे धार्मिक पुरुष ऐसा ही कहते हैं, और आजकल जन-साधारण भी इसी सिद्धान्त को ठीक मानते हैं। मनुष्य जितना ही अधिक दूसरों को देता है और दूसरों से जितना ही कम अपने लिये चाहता है, उतना ही वह श्रेष्ठ होता है। इसके विपरीत जितना ही कम वह दूसरों को देता है और अपने लिये जितना ही अधिक चाहता है, उतना ही वह बुरा होता है।

जो मनुष्य दूसरों के लिये अधिक से अधिक प्रेम भावना रखता है, और अपनी खुद की ओर से उदासीन रहता है उसके लिये श्रेष्ठ बनना उतना ही सुगम होता है। इसके विपरीत जो मनुष्य अपने को जितना अधिक प्रेम करता है और दूसरों से अपनी जितनी ही अधिक सेवा कराता है, उतना ही वह दूसरे लोगों की भलाई कम कर सकता है। एक मनुष्य जो दूसरों को खिलाने के बजाय खुद ही बहुत अधिक खा लेता है, तो वह अन्य लोगों की दो प्रकार से हानि करता है। एक तो उसके अधिक खाने से दूसरों के भोजन में कमी पड़ जाती है और दूसरे अधिक खा लेने से वह अपनी शक्ति को भी खो बैठता है और दूसरों का हित करने के योग्य नहीं रहता।

बहुत से लोग ऐसा प्रकट करते हैं कि वे दूसरों से प्रेम करते हैं, पर उनका प्रेम केवल शब्दों तक ही सीमित रहता है। हम दूसरों के साथ तभी वास्तविक प्रेम कर सकते हैं जब कि अपने साथ प्रेम करना या अपना अनुचित स्वार्थ छोड़ें। ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं जिनमें हम समझते हैं कि हम दूसरों से प्रेम करते हैं, पर वास्तव में हमारा प्रेम शब्दों तक ही सीमित होता है। दूसरों के लिये भोजन खिलाना या आश्रय देना हम भूल जाते हैं, पर अपने लिये भोजन तथा आश्रय प्राप्त करना कभी नहीं भूलते। इसलिये दूसरों को सचमुच प्रेम करने के लिये हमको वास्तव में अपने आपको अधिक प्रेम करना छोड़ना होगा।

हम विलासी जीवन बिताने वाले और अपने सुख के ही लिये प्रयत्न करने वाले व्यक्ति के लिये भी कुछ ऊपरी बातों को देख कर अनेक बार कह देते हैं कि "वह श्रेष्ठ जीवन बिता रहा है।" किन्तु ऐसा व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, और चाहे उसमें चरित्रशीलता के कितने ही अच्छे गुण-नम्रता, अच्छा स्वभाव आदि-क्यों न हों, अच्छा आदमी नहीं हो सकता और न अच्छा जीवन बिताने का दावा कर सकता है। जिस प्रकार एक चाकू कैसे भी बढ़िया लोहे का क्यों न बनाया गया हो और उसका बनाने वाला भी कैसा ही कारीगर क्यों न हो, पर जब तक उसमें धार न लगाई जायगी वह तेज और कारगर नहीं हो सकता। अच्छा आदमी बनने और अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य दूसरों से जितना ग्रहण करे, उससे अधिक उन्हें लौटा दे। किन्तु स्व-भोगी (अपने सुख का ध्यान रखने वाला) मनुष्य, जो ऐश आराम की जिन्दगी बिताने का अभ्यस्त है ऐसा कर ही नहीं सकता। इसका पहला कारण तो यह होता है कि हमेशा उसको अपने लिये बहुत से पदार्थों की जरूरत रहती है। यह उसकी स्वार्थपरता के कारण नहीं होता वरन् इसलिये

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भी होवा है कि वह भोग विलास का अभ्यस्त होता है, और जिन पदार्थों का वह अभ्यस्त होता है उनसे वंचित रहना उसको कष्ट कर जान पड़ता है। दूसरे, वह अन्य लोगों से जो कुछ प्राप्त करता है उस सब का उपयोग स्वयं ही करके अपने आपको कमजोर और काम करने के अयोग्य बना लेता है और इस प्रकार दूसरों की सेवा करने में असमर्थ हो जाता है। एक स्वयं-भोगी मनुष्य, जो देर तक कोमल शैय्या पर सोता है, गरिष्ठ और मीठे पदार्थों का सेवन करता है, हमेशा बढ़िया और फैशनेबिल कपड़े पहिनता है, कभी मेहनत का काम नहीं करता, वह कभी किसी का उपकार या सेवा करने योग्य नहीं रहता। ऐसा मनुष्य अपने भोग विलासमय जीवन को तिलांजलि दिये बिना किस प्रकार दूसरों का भला कर सकता है ? किस प्रकार सद्जीवन व्यतीत कर सकता है ?

मैं समझता हूँ कि मेरा बार-बार इन शब्दों का दुहराना अधिकांश साधन-सम्पन्न श्रीमानों को अच्छा न लगेगा और वे इन शब्दों के प्रति उदासीनता या विरोध-सूचक मौन का ही परिचय देंगे। पर एक नीतिमान व्यक्ति चाहे वह उच्च-श्रेणी का हो या मध्यम श्रेणी का इस विषय पर विचार करके कभी इस प्रकार की सामाजिक पद्धति का समर्थन नहीं कर सकता। वे जानते हैं कि जिन पदार्थों का वे व्यवहार करते हैं वे बहुसंख्यक पददलित श्रमजीवियों द्वारा तैयार किये जाते हैं। हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये ही इन गरीब लोगों को ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है कि उनको न तो स्वास्थ्य कर भोजन मिलता है, न स्वास्थ्य कर मकान, न काफी कपड़े मिलते हैं, न मनोरञ्जन के उचित साधन ही नसीब होते हैं। वृद्ध, बालक और स्त्रियाँ, जो श्रम, मजदूरी के लिये रात-रात भर जगाने और रोगों आदि से जर्जर हो गये हैं, वे ही हमारे लिये आराम और विलास की ऐसी चीजें तैयार करने में अपना जीवन खपा देते हैं, जो उन्हें कभी नसीब नहीं होती, पर जो हमारे लिये जरूरी होती है। इसलिये कोई भी मनुष्य तब तक नीतिमान और धार्मिक होने का दावा नहीं कर सकता जब तक मनुष्यता तथा न्याय की रक्षा के लिये वह अपने विलासमय जीवन में परिवर्तन करने को तैयार न हो।

महापुरुषों के जीवन हमारे पथ प्रदर्शक हैं

(श्री० गोपाल दामोदर तामसकर)

भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि-"जो-जो वस्तु वैभव या प्रभाव से मुक्त है, वह सब मेरे ही तेज के अंश से पैदा हुई है।" इसका अर्थ यही है कि जहाँ कहीं किसी गुण का अत्यन्त विकास है, उस वस्तु में ईश्वरांश समझ कर उसे पूज्य दृष्टि से देखना चाहिये। उसका सम्मान करना चाहिये।

यह नियम जिस प्रकार अन्य पदार्थों पर लागू है उसी प्रकार महापुरुषों पर भी लागू होता है। महापुरुष भी तेज, शोभा, प्रभाव या किसी गुण का अत्यन्त विकास होने से ही प्रसिद्ध होते हैं। वह महापुरुष चाहे योद्धा हो, चाहे कवि या तत्ववेत्ता हो, चाहे गृहस्थी हो या राजा हो, वह कोई क्यों न हो, वह हमारे लिये वन्दनीय ही होगा। प्राचीन काल में हम अपने पूर्वजों की, विशेष कर जिन्होंने कोई बड़ा कार्य किया था, उनकी पूजा करते थे। एक दृष्टि से यह कार्य सर्वथा सराहनीय भी है। जहाँ तेज है, प्रभाव है वहाँ हम अवश्य नतमस्तक हुये हैं, और आदर-भाव दर्शाते आये हैं। जग में एक परमेश्वर की सत्ता मानते हुये भी हम तेजस्वी पुरुषों को देवदूत या परमेश्वर का अवतार मानते आये हैं। हमारे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

न्दू-धर्म की यह प्रवृत्ति ही है ! पर खेद है कि अब स प्रवृत्ति का ह्रास हो रहा है। अब हम महापुरुषों ा उतना आदर नहीं करते जितना पहले करते थे। ले से जो उत्सव प्राचीन महापुरुषों के नाम पर ले आते हैं, उनको हम धर्म का अङ्ग समझ कर सी प्रकार चला रहे हैं, पर उस प्रकार के नये उत्सव न नहीं चलाते । तो भी आदर की यह प्रवृत्ति नुष्य में स्वाभाविक है और इसे सर्वथा भूल जाना भव नहीं। सभी देशों में महापुरुषों की पूजा किसी किसी रूप में होती ही है।

लाभ की दृष्टि से भी यह प्रवृत्ति बड़े महत्व की । मनुष्य में पुण्य-पाप, सुकर्म-दुष्कर्म, उच्च और च प्रवृत्तियाँ स्वभावतः होती हैं। हमें नीच प्रवृत्ति उच्च प्रवृत्ति से हमेशा दबाते रहना चाहिये, न्यथा हमारे पतन का डर पैदा हो जाता है। इस र्य में महापुरुषों के गुणानुवाद से बड़ी सहायता लती है। मनुष्य, प्रकृति से ही अनुकरण शील णी है। वह जान कर और अनजान में भी अनेक तों की अनुकरण करता रहता है । यह उसकी तः प्रवृति का ही काम है । हम यदि अपनी त्मा को उच्च बनाना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि ी ऊँची आत्माओं के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संसर्ग रहें। उनमें ऐसी शक्ति होती है कि वे हमें बरबस गति की ओर खींचले जा रही हैं। उनका दर्शन र भाषण हमारे लिये परम कल्याण जनक है। यदि ाग्य वश किसी को जन्म भर किसी महापुरुष के न और भाषण का लाभ नहीं मिल सकता महापुरुषों के लिखित विचारों के मनन से, उनके त्र का दर्शन करने से, उनका नाम लेकर भी हम म उठा सकते हैं। शिवाजी के नाम में जो जोर वह औरंगजेब की प्रचण्ड सेना में भी न था। । कारण शिवाजी का स्वर्गवास होने के बाद भी रंगजेब मराठों को न हरा सका। पर जब मराठे ाजी का नाम भूल गये तो उनके शासन की भी श्री हो गई।

सच्चा महापुरुष वही है जिसके संसर्ग से हमारी इन्द्रियाँ शिथिल न होकर नित्य प्रति बलवान बनती जायें। उनके दर्शन होते ही हम में नई शक्तियों का का संचार होने लगता है, नई बातें हमें दीखने लगती हैं, हमें विश्वास हो जाता है कि इसमें हमें धोखा न होगा । कुछ भी हो साधारण जनता का कल्याण इसी में है कि वह इन महापुरुषों के चरित्रों को सुने, समझे और उनके अनुसार थोड़े या अधिक अंशों में आचरण करके अपना कल्याण करे। महापुरुषों के सम्मान के लिये नहीं तो अपने ही कल्याण के लिए, इन बातों की तरफ ध्यान देना हमारा कर्तव्य है। हम में जो उच्च प्रवृत्ति है उसका विकास होने से हमारा हर तरह से लाभ ही हो सकता है ।

प्रत्येक महापुरुष के जीवन का कोई खास उद्देश्य होता है। वैसे तो प्रत्येक मनुष्य अपना कुछ उद्देश्य बतला सकता है, पर उनके उद्देश्यों में कोई विशेषता नहीं होती, वे जो कुछ दृष्टि के सामने आ जाय या जो कार्य संयोग वश करना पड़े उसी को उद्देश्य समझ लेते हैं। पर महापुरुषों का उद्देश्य समझ बूझ कर आन्तरिक स्फूर्ति से निश्चित किया जाता है और वह बहुधा पारलौकिक एवं परोपकार पूर्ण होता है। उसके लिये वे घर-बार, स्त्री-पुत्र, धन-सम्पत्ति सब कुछ त्याग ने को तैयार रहते हैं। वे समझते हैं कि हम एक ऊँचे उद्देश्य की पूर्ति के लिये उत्पन्न हुये हैं, और वही उनके लिये सब कुछ होता है। दुनियाँ के अन्य सब पदार्थ उनकी दृष्टि में उसी उद्देश्य की पूर्ति के साधन मात्र होते हैं। यदि उनका उपयोग साधन के तौर पर नहीं हो सकता तो वे उन्हें सर्वथा त्याग देने को तैयार रहते हैं। भगवान बुद्ध ने जब देखा कि राज्य के धन, वैभव और विलास में रह वे संसार के उद्धार का कार्य नहीं कर सकते तो उन्होंने निस्सङ्कोच-भाव से उनका परित्याग कर दिया। श्री रामचंद्र जी ने मिलते हुये राज्य को क्षण भर में त्याग कर वनवास स्वीकार किया तो वह भी एक बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही किया गया । महापुरुषों के सामने सांसारिक लोभ अपना जोर नहीं दिखला सकते। इतिहास से भी यही सिद्ध होता है कि उनका

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आविर्भाव या अवतार कोई बड़ी आवश्यकता या समस्या उपस्थित होने पर ही हुआ करता है। ऐसे महापुरुषों ने चाहे जिस क्षेत्र में काम किया हो और चाहे उनके साधन एक दूसरे से कैसे भी भिन्न क्यों न रहे हों, पर उनका उद्देश्य देश और समाज की रक्षा करना और उसके किसी बड़े अभाव की पूर्ति करना ही रहा है और उसके लिये उन्होंने हर तरह का त्याग और सब प्रकार का कष्ट सहन स्वीकार किया है।

इस प्रकार के महापुरुष सभी देशों और सभी कालों में उत्पन्न हुये हैं, और उन्हीं के त्याग, तप और बलिदान के प्रभाव से इस समय मानव समाज अनेक प्रकार के सङ्कटों से मुक्त होकर, अपेक्षाकृत सुविधापूर्ण जीवन बिता रहा है। ईसा मसीह के समय में धार्मिक ढोंग बहुत अधिक बढ़ गया था, और लोगों को कठोर बंधनों में बँध कर जीवन व्यतीत करना पड़ता था। ईसा मसीह ने उनके विरुद्ध आवाज उठाई और यद्यपि उसे अपने प्राण सूली पर चढ़ कर त्यागने पड़े, पर उसके कारण योरोप की काया पलट होगई। अमरीका के प्रेसीडेण्ड अब्राहमलिंकन ने गुलामी के विरुद्ध झण्डा ऊंचा किया और यद्यपि अंत में उसे दुष्ट लोगों की गोली का शिकार बनना पड़ा, पर आज करोड़ों हबशी गुलाम उसी के कारण पशुवत् अवस्था से निकल कर मनुष्यों की तरह रहने का सुयोग पा सके हैं। ज्यादा दूर जाने की क्या आवश्यकता हमारी आँखों के सामने महात्मा गांधी ने हानिकारक सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों को मिटाने के लिये आपने प्राणों का बलिदान कर दिया, जिसके प्रभाव से हमारा देश पराधीनता के अभिशाप से मुक्त होकर संसार के सम्मुख मस्तक ऊंचा करके खड़ा होने में समर्थ हो सका है।

इन सभी महापुरुषों के चरित्र पढ़ना, उनका—मनन करना, और जहाँ तक सम्भव हो सके उनसे शिक्षा ग्रहण करके उन पर अमल करना, साधारण लोगों के लिये उन्नति तथा कल्याण का एक सहज साधन है। जिस देश में ऐसे महापुरुषों का मान नहीं किया जाता उसे मृत प्रायः ही समझना चाहिये महापुरुषों के चरित्र और कार्य ही हमारे सच्चे पथ प्रदर्शक हैं—"महाजनो येन गतः स पन्थः।"

मृत्यु से डरे क्यों ?

(श्री० कमलेश्वर प्रसाद, विशारद)

संसार में सबसे बड़ा भय मृत्यु का माना गया है। फाँसी का दण्ड इसीलिये सबसे बड़ा माना जाता है कि उससे डर कर लोग अपराध करने से हिचकें। वैसे भी कहावत है कि "मरता क्या न करता" अर्थात् जब आदमी के सर पर मृत्यु का भय आ पहुँचता है तो फिर उसके लिये कोई बाधा नहीं रह जाती। मृत्यु के भय से संसार के कितने लोग कर्तव्य पालन से विमुख हो जाते हैं इसकी गिनती कर सकना कठिन है।

भय के सम्बन्ध में तत्व की बात तो यह है कि जो सब विषय हम लोगों के इच्छाधीन या शक्ति के भीतर हैं उन्हीं के प्रयोग पर हम लोगों की भलाई या बुराई निर्भर करती है। पर जो विषय हम लोगों के इच्छाधीन या शक्ति के भीतर नहीं हैं—जो अनिवार्य है, जिनसे हम पार नहीं पा सकते—वे हम लोगों के लिये अच्छे भी नहीं और बुरे भी नहीं हैं। इस विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि—"जो सब विषय हम लोगों के इच्छाधीन नहीं हैं उन के विषय में निडर रहना चाहिये, और जो हम सब लोगों के इच्छाधीन हैं, अर्थात् जिनको हम अपनी मर्जी से करें चाहे न करें—उन्हीं के लिये भय करना चाहिये। "यदि किसी प्रकार की बुरी वासना के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कारण इसको बुरा कहा जाता है तो हमको उसी से बच कर रहना चाहिये। पर जो विषय हमारी शक्ति से बाहर हैं, जो हमारी इच्छा के वश में नहीं हैं उस के सम्बन्ध में डरना या भागने की कोशिश करना मूर्खता है।

पर खेद है कि अधिकांश मनुष्य ऐसी ही विपरीत बुद्धि का परिचय दिया करते हैं। वे हिरन की तरह व्यर्थ में भयभीत होकर आफत में जा फँसते हैं। हिरन को जब भय होता है और वह डर कर भागने की चेष्टा करता है तो वह सुरक्षित समझ कर किस जगह का आश्रय लेता है ? वह प्रायः उस जगह जाता है जहाँ शिकारी ने जाल फैला रखा है और वह उसी जाल में फँस कर प्राण गँवा बैठता है। इसका कारण यह है कि वह नहीं जानता कि कहाँ भय करना चाहिये और कहाँ नहीं करना चाहिये ! हम लोग भी बिना जाने बूझे साधारणतः ऐसी बातों में भयभीत हुआ करते हैं जो हमारी इच्छा-शक्ति के परे हैं। और जो विषय हमारी इच्छा के वश में है उनसे हम भय नहीं करते। किसी प्रकार के लोभ या मोह में पड़ कर कोई लज्जा जनक या निन्दनीय काम करना वास्तविक भय के विषय है, और हम चाहें तो इनसे दूर भी रह सकते हैं। पर हम इन्हीं से न डर के खोटे मार्ग पर चलते रहते हैं।

इसके विपरीत मृत्यु, जो अटल है और किसी मनुष्य के वश में नहीं है, तथा अन्य दुःख जिनका टालना हमारी शक्ति के बाहर है, उन्हीं से हम लोग डरते हैं और डर कर भागने की कोशिश करते हैं। वास्तव में मृत्यु और दुःख भयङ्कर नहीं होते वरन् उनका भय ही भयङ्कर है। इसीलिये किसी कवि ने कहा है—

"मृत्यु से मत भूल कर भी तुम डरो।
कायरों की मृत्यु का ही भय करो॥"

मृत्यु से डरना ना समझी की बात है। हम लोग मृत्यु और कष्टों से भागते हैं पर वे क्या चीज हैं ? सुकरात इन विषयों को 'हौआ' कहा करते थे। कारण यह कि विकराल चेहरा केवल अबोध बालकों को ही भीषण और डरावना मालूम होता है। यह "हौआ" देख कर छोटे बच्चे जिस प्रकार डर जाते हैं वैसे ही सांसारिक जन भी संसार की किसी-किसी घटना से विह्वल हो जाते हैं। मृत्यु क्या है ? एक "हौआ" है ! चाहे शीघ्र हो या देर से हो, एक दिन यह शरीर आत्मा से अलग होगा ही—पहले भी हो चुका है। यह काल-चक्र का भ्रमण है और इसका चलते रहना ही आवश्यक है।

❋ समाज के पुनर्निमाण का आधार ❋

(श्री० चन्द्रशेखर शास्त्री)

मानवीय सभ्यता का आरम्भ धन या सम्पत्ति के संग्रह से हुआ है। सभ्यता की रानी-सम्पत्ति की अटारी में रहती है और धन की गाड़ी पर चलती है। भय उसका सहचर है। धनी निर्भय हो ही नहीं सकता ! इस सम्बन्ध में गुरु नानक की एक कथा सुनिये—

एक बार गुरु नानक अपने शिष्य मर्दाना के साथ भ्रमण करते एक वन में आये। वहाँ से नगर एक कोस की दूरी पर था गुरु ने शिष्य से कहा—यह स्थान बड़ा रमणीक है। आज हम लोग यहीं रहें।

शिष्य ने कहा—भला जङ्गल में भी कोई रहता है। रात में जङ्गली जानवर निकलते हैं, वे कुछ हानि पहुँचायें तो ?

गुरुजी ने बहुत समझाया, पर शिष्य राजी न हुआ। तब गुरुजी ने कहा—अच्छा संध्या का कृत्य इसी तालाब में करलें, तब नगर में चलेंगे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यही सलाह पक्की ठहरी ! गुरुजी स्नान और भजन पूजन करके ऊपर चले आये। तब तक शिष्य जल के किनारे सीढ़ी पर बैठा हुआ भजन ही कर रहा था। गुरुजी ने ऊपर आकर शिष्य की झोली खोली। उसमें दो पोटलियाँ निकलीं। एक पोटली, जो कुछ सख्त जान पड़ी, गुरुजी ने खोल डाली। उसमें दो अशरफियाँ निकलीं। गुरुजी ने अशरफियाँ निकाल लीं और जब शिष्य ऊपर आया, तब वे उसे दिखाकर गहरे पानी में फेंक दीं। शिष्य बेचारा ताकता ही रह गया। करता भी क्या !

थोड़ी देर बाद गुरुजी ने कहा—अच्छा, अब भजन पूजन हो चुका, चलो अब गाँव में चलें।

चेला जला-भुना बैठा ही था। वह झुझलाकर बोला—अब क्या है, अब यहीं रहें। जिसके लिये मैं गाँव में चलना चाहता था उसे तो आपने तालाब के हवाले कर दिया। अब आप चाहे जहाँ रहें।

कथा इतनी ही है। धन के कारण मनुष्य निर्भय नहीं रह सकता। धनी मनुष्य को रक्षक की आवश्यकता होती है। जब मनुष्यों का सांसारिक पदार्थों से परिचय हुआ, उन वस्तुओं के उपयोग की रीति उन्हें मालूम हुई, उन वस्तुओं से होने वाली इन्द्रिय-तृप्ति का जब उन्हें अनुभव हुआ, तब सुखकी लालसा उनके हृदयों में बद्धमूल हो गई। वे सुख की सामग्रियाँ इकट्ठी करने लगे। अब परिव्राजक का जीवन उन्हें दुखकर मालूम होने लगा। अब उन्होंने एक साथ समूह बनाकर रहना आवश्यक समझा। उस समय तक जो लोग निर्भय थे, जिनके बच्चे बच्चे सिंहों के साथ खेलते थे, जिनके जङ्गली आश्रमों में जङ्गली वस्तुओं का बेरोक-टोक प्रवेश था, अब उन्हें आत्म रक्षा की चिन्ता ने आ घेरा। अब आत्म रक्षा के लिये उन्हें कई आदमियों का मिलकर उपयोगी जान पड़ा और फल स्वरूप टोले बांधे गये, पुरवा बसाये गये जो धीरे-धीरे गाँव, कस्बा और नगरों के रूप में बदले।

इस प्रकार सामूहिक रूप में रहने पर मनुष्यों की कुप्रवृत्तियाँ और सुप्रवृत्तियाँ बलवती हुईं। वे कार्य करने के योग्य हुईं। नई-नई इच्छायें उत्पन्न हुईं और मनुष्य उनको पूरा करने को उत्सुक हुये। इस प्रकार समय के सीधे-सीधे और अज्ञान प्राणी दूसरे ही रूप में प्रकट हुए। उन्हें तरह-तरह की आवश्यकताओं का अनुभव होने लगा, और जब वे पूरी न हो सकीं तो वह अपने को दुखी समझने लगे। संभवतः उसी समय मनुष्य जाति के दुख-सुख, क्रोध, साहस, उत्साह आदि अपने गुणों या अवगुणों का ज्ञान हुआ। अपनी आवश्यकतों की पूर्ति के लिए वे इन वृत्तियों का ढङ्ग से उपयोग न कर सके और थोड़े ही समय में लोगों में छीना-झपटी शुरू हो गई। एक दूसरे को लूटने और सताने लगे। अपनी आवश्यकता पूरी होनी चाहिए, इसके लिए खून भी करना पड़े, तो कोई बात नहीं। कल्पना कीजिये उस समय इस जाति की क्या अवस्था हुई होगी। उस समय लोगों का जीवन कैसा भयानक तथा आतंक पूर्ण हो गया होगा, यह समझना कुछ कठिन नहीं है।

जो दूसरों को सताते हैं, समय बदलने पर वे स्वयम् भी सताये जाते हैं। आज जिस बलवान् ने अपने से किसी दुर्बल को सताया, आगे चल कर वह भी अपने से अधिक बलवान के द्वारा सताया जाता है। इस प्रकार दलबन्दी बढ़ती जाती है और मनुष्यता की कसौटी वीरता ही मानी जाने लगती है यही वह काल था जब कन्या को पाने का अधिकारी सबसे बड़ा वीर माना जाता था और इसके लिए तरह-तरह की परीक्षायें रखी जाती थी, वहीं लक्ष्य-वेध की, कहीं धनुष तोड़ने की और कहीं अन्य किसी प्रकार की।

पर इस तरह की चढाऊपरी में कौन कब तक बलवान रहेगा इसका निश्चय कर सकना बड़ा कठिन था। आज का बलवान कल दुर्बल हो सकता था। आज के अत्याचार करने वाले को कल अत्याचार सहना पड़ता था। कुछ समय बाद लोग इस अवस्था से परेशान होने लगे। किसी के घर में आग लगी, पर उसने बहुतों पर अत्याचार किया था, इस लिये आस पास के लोगों ने आग बुझाने में मदद न दी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लोगों ने सोचा, अच्छा है जलने दो, हमारा क्या जाता है! इसने कौन सी भलाई की है, जो हम इसकी रक्षा करने जायें। इस प्रकार विचार करके वे सब चुप बैठे रहे। पर जब अग्नि ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया और एक एक करके गाँव के सारे घरों को जला दिया तब लोगों को अपनी भूल मालूम हुई और पारस्परिक सहयोग के महत्व की बात समझ में आई। लोगों ने समझा कि दूसरों को दुख देने से खुद भी दुःख उठाना पड़ता है, इसलिये किसी को दुख देना अच्छा नहीं। इसी प्रकार की मनोवृत्ति के उत्पन्न होने से लोगों में समाज की स्थापना का विचार फैलाने लगा। उनमें से जो लोग कुछ अधिक समझदार और सहनशील प्रकृति के थे उन्होंने पारस्परिक सहयोग के अनुसार पहले चलना आरम्भ किया। उसके बाद उनको सुखी व समृद्ध देखकर दूसरे दल वालों का भी ध्यान उधर गया। इस प्रकार सामाजिक सङ्गठन बढ़ता गया, उसके लिये कुछ आवश्यकीय नियम भी बनाये गये, कर्तव्य अकर्तव्य का निर्देश किया गया, दण्ड और पुरस्कार की व्यवस्था हुई। इससे लोगों की बुरी वृत्तियाँ दबीं और अच्छी वृत्तियों का विकास हुआ। भय और अरक्षित अवस्था से निकल कर लोगों को अपेक्षा कृत सुरक्षा का अनुभव हुआ। लोगों को ज्ञान-विज्ञान के अनुशीलन करने का सुयोग मिला। लड़के पढ़ने में और बूढ़े आध्यात्मिक चर्चा में समय बिताने लगे। जवानों और प्रौढ़ों ने गृहस्थी के संचालन का भार अपने कन्धों पर रखा। सर्वत्र शांति और सुख का प्रसार होने लगा तथा समाज सभ्यता तथा उन्नति की ओर वेग पूर्वक अग्रसर होने लगा।

उस समय समाज की स्थापना धर्म पर हुई थी। धर्म का अर्थ नियम या कानून भी है। अतएव प्रौढ़ होने पर भी समाज धार्मिक बना रहा। समाज ने व्यक्तियों को धार्मिक बनाया, उन्हें धर्म पालन की शिक्षा दी। धर्म में कलह नहीं होता, अशांति नहीं होती। मत्सर, द्वेष आदि तो अधर्म के लक्षण हैं। इसलिये धर्म की छत्रछाया में समाज कल्याण-मार्ग पर अग्रसर हुआ।

---

* राम-राज्य कैसे स्थापित हो? *

(सन्त विनोबा भावे)

इस जमाने में जो राज्य होता है, वह राज्य नहीं, बल्कि राज्य (पूजा का राज्य) है। पहले जमाने में जो लोगों को दबाता था वही राजा होता है। इसका अर्थ यह कि जो जङ्गल के प्राणियों को खा जाता है, वह जङ्गल राजा होता है। इस प्रकार की राज सत्ता अब नहीं चलेगी। अब आगे राज्य-सत्ता का अर्थ होगा सेवा की सत्ता।

गाँव-गाँव में जो बुद्धिमान, संपत्तिमान और समझदार लोग हों, वे गाँव के माता-पिता बन जायँ और गाँव की सेवा करके वहाँ का राज्य चलायें। जो बुद्धिमान पिता होते हैं, वे अपने लड़कों के लिये यही इच्छा करते हैं कि हमारे लड़के हमसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। इसलिये गाँव के जो बुद्धिमान लोग होंगे, वे इस तरह काम करेंगे कि वहां के सब लोग उन्नति करके उनसे भी अधिक समझदार बन जायें। ऐसा ही ग्राम ही ग्राम-राज्य फिर राम राज्य बनेगा।

स्वराज्य के अर्थ है-सारे देश का राज्य। जब दूसरे देश की सत्ता अपने देश पर नहीं रहती है, तो स्वराज्य हो जाता है। लेकिन जब हर एक गाँव में स्वराज्य हो जाता है तो उसको रामराज्य कहा जाता है। गाँव के सब लोग बुद्धिमान बने हैं किसी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पर सत्ता चलाने की जरूरत नहीं पड़ती है, उस उसका नाम है 'रामराज्य'। जब गाँवके झगड़े शहर की अदालत में जाते हैं और शहर के लोग उनका फैसला करते हैं,तो उसका नाम है—गुलामी,दासता या परतंत्रता। गाँव के झगड़े गाँव में ही मिटाने का नाम है स्वतंत्रता पर स्वराज्य। और जब गाँव में झगड़े ही न हों उसका नाम है रामराज्य।

जो राज सत्ता दिल्ली में इकट्ठी हुई है उसे गाँव-गाँव में बांटना है। हम तो परमेश्वर के भक्त हैं। इस लिये ईश्वर का ही उदाहरण सामने रखें। ईश्वर ने अगर अपनी सारी बुद्धि बैकुण्ठ में ही रखी होती, और किसी प्राणी को बुद्धि दी ही न होती, तो दुनियां कैसे चलती ? फिर तो जब किसी मनुष्य को बुद्धि की जरूरत पड़ती, तो उसे बैकुण्ठ को टेलीग्राम भेज कर बुद्धि मँगानी पड़ती। आज जब बात-बात पर आपके मंत्रियों को विमान से दौड़ना पड़ता है,तो फिर भगवान को कितना दौड़ना पड़ता ! लेकिन भगवान ने ऐसी सुन्दर योजना की है कि सबको बुद्धि बाँट दी है।

पहले लंदन में सत्ता थी। वहाँ से पार्सल द्वारा वह दिल्ली आयी है। यह तो बड़ी कृपा हुई। लेकिन वह पार्सल दिल्ली में ही अटक गया है,उसे अब गाँव में पहुँचाना है। हमें लोगों को स्वराज्य की शिक्षा देनी है। इसका रूप होगा 'शासन-विभाजन'। शासन का आज जो केन्द्रीकरण हुआ है, उसके बदले शासन का विभाजन करना होगा और हर गाँव में शासन या सत्ता बाँटनी होगी। फिर जब गाँव के सबके सब लोग राज्य-शास्त्र के ज्ञाता हो जायेंगे और गाँव के सब लोग जब झगड़ा करेंगे ही नहीं तो उस हालत में शासन से छुटकारा हो जायेगा और रामराज्य आयेगा।

यह सब काम सरकारी कानून से नहीं होगा। कुछ लोग कहते हैं कि गाँवों के लिए जमीन वाले लोगों को भूदान द्वारा जमीन देने की क्या जरूरत है, सरकार खुद क्यों नहीं जमीन दे देती। पर सरकार जमीन बाँटेगी तो गाँवों का राज्य नहीं होगा, दिल्ली-राज्य होगा। लन्दन-राज्य के बदले अब दिल्ली राज्य आया है, पर हम चाहते हैं कि दिल्ली-राज्य के बदले गाँव का राज्य आये। जिस प्रकार अपनी भूख मिटाने के लिए हमको ही खाना पड़ता है, दूसरा कोई हमारे लिए नहीं खा सकता, उसी तरह हमारे गाँव में रामराज्य लाने के लिए हमें ही भूदान करके व्यवस्था ठीक करनी होगी। फिर आज जैसे दिल्ली में बैठकर लोग सोचते हैं कि अपने देश में बाहर से कौन-कौनसी चीजें आनी चाहिए और देश की कौन-कौनसी चीजें बाहर जानी चाहिए, उसी तरह गाँव-गाँव के लोग सोचेंगे कि अपने गाँव में कौनसी चीजें शहरों से आनी चाहिए और कौन-कौन सी बाहर जानी चाहिए। आज तो जिसकी मर्जी में जो आता है उसके अनुसार वह बाहर की चीजें खरीदता जाता है, लेकिन आगे यह नहीं चलेगा। सारे गाँव वाले मिलकर चर्चा करेंगे और निर्णय करेंगे। अगर किसी को गुड़ की जरूरत हुई, तो गाँव वाले सोचेंगे और तय करेंगे कि इस साल गाँव में गुड़ नहीं बन सकता, इसलिये एक साल के लिए बाहर से गुड़ खरीदना होगा। लेकिन गाँव के लोग बाजार से जाकर गुड़ नहीं खरीदेंगे, गाँव की दुकान से खरीदेंगे। इस तरह गाँव के लोग बाहर का गुड़ गाँव की दुकान से एक साल तक खरीदेंगे फिर अगर लाभदायक समझेंगे तो गाँव में ही गन्ना बोकर अगले साल के लिए गुड़ तैयार कर लेंगे।

इस तरह सारा गाँव एक हृदय से सोचेगा। गाँव में पाँच सौ लोग रहेंगे तो गाँव में एक हजार हाथ होंगे, एक हजार पाँव होंगे, पाँच सौ दिमाग होंगे, लेकिन मन एक होगा।

गीता के एकादश अध्याय में विश्व रूप दर्शन की बात है। विश्व रूप दर्शन में हजारों हाथ हैं, हजारों पाँव हैं, कान हैं, आखें है, लेकिन उसमें आपको यह नहीं मिलेगा कि हृदय हजारों हैं। विश्व रूप का हृदय एक ही होगा। उसी तरह गाँव का हृदय एक होगा। पाँच सौ दिमाग होंगे। वे सलाह करके बात तय करेंगे। यह योजना सबका हित

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करने वाली—सर्वोदय की होगी।

अब आप बताइये कि यह सर्वोदय का काम गाँव वाले या आपकी राजधानी वाले और दिल्ली वाले करेंगे? यह ठीक है कि आप लोग अपनी योजना करेंगे, तो इसमें राजधानी वाले और दिल्ली वाले आपको कुछ मदद देंगे। लेकिन योजना तो आपको ही अपने गाँव के लिए करनी होगी। अगर गाँव-गाँव में जाकर यह बात अगर समझा देंगे, तो बुद्धिमान् किसानों को यह बात समझने की अक्ल है। फिर आपको एक-एकड़ दो एकड़ का दान नहीं मिलेगा। फिर तो एक-एक गाँव के लोग आपके सामने आकर कहेंगे कि हमने अपने गाँव के भूमिहीनों का मसला हल कर दिया है। अपने गाँव के भूमिहीनों को और कम भूमि वालों को हमने पूरी जमीन दे दी है। फिर इस तरह सब लोगों के दस्तखत के दानपत्र वे आपकी भूदान-समिति के आफिस के पास पहुँचा देंगे। अब गांव की सारी जमीन गांव की बना दीजिये। आज आपके गांव में भूमिहीन कोई नहीं रहा है। अब भूमिमालिक कोई नहीं रहना चाहिये!

यह ठीक है कि इन सब कामों में समय लगेगा, लेकिन ज्यादा समय की आवश्यकता नहीं। अगर गाँव के लोग समझलें तो एक साल में ऐसा संगठन कर सकते हैं। आवश्यकता यही है कि हम इसके मूल सिद्धान्त को समझ जायें। इनमें पहली बात है केन्द्रीय स्वराज्य, दूसरी है विभाजित स्वराज्य और तीसरा है रामराज्य।

कुछ लोग इस योजना के विषय में कहते हैं कि यह स्वावलम्बन की योजना है, जबकि इस समय परस्परालंबन की योजना आवश्यकीय है। हम भी परस्परालंबन चाहते हैं, परन्तु वह दो प्रकार का होता है। एक अंधे और लंगड़े का परस्परालंबन होता है। अंधा देख नहीं सकता, परन्तु चल सकता है; और लंगड़ा देख सकता है परन्तु चल नहीं सकता। इसलिए दोनों परस्परालंबन या सहयोग करते हैं। लंगड़ा अंधे के कंधे पर बैठता है। वह रास्ता दिखलाने का काम करता है और अन्धा चलने का। इस तरह क्या आप समाज के कुछ लोगों को अंधा रखना चाहते हैं और कुछ को लंगड़ा रखना चाहते हैं, और फिर दोनों का परस्परालम्बन चाहते हैं? हम ऐसा परस्परालम्बन चाहते हैं कि दोनों आँख वाले हों और फिर हाथ में हाथ मिलाकर दोनों साथ २ चलें। हम समर्थों का परस्परालंबन चाहते हैं और वे लोग अपाहिजों का परस्परालम्बन चाहते हैं।

हम जानते हैं कि सारी की सारी चीजें एक गाँव में नहीं बन सकतीं। एक गाँव को दूसरे गाँव के साथ और गाँवों को शहरों के साथ सहयोग करना होता है। लेकिन हम यह नहीं चाहते कि गाँवों में शहरों से चावल कूट कर, आटा पिसवाकर और चीनी बनवाकर लाई जाय। हम चाहते हैं कि ये चीजें गाँव में ही बनें। लेकिन गाँवों में चश्मा, थर्मामीटर, लाउडस्पीकर जैसी चीजों की जरूरत पड़ी, तो वे चीजें शहर से लाई जायँ। आज यह होता है कि शहर वाले गाँव वालों के उद्योग खुद करते हैं। गाँव में कच्चा माल होता है और उसका पक्का माल गाँव में ही बन सकता है। लेकिन आज शहरों में यन्त्रों के द्वारा पक्का माल बनाया जाता है और उधर परदेश का माल शहरों में आता है, उसे रोकते नहीं। हम चाहते हैं कि गाँव के उद्योग गांव में चलें, और परदेश से जो माल आता है उसे रोकने के लिए वह माल शहरों में बनाया जाय। अगर गांवों के उद्योग खत्म होंगे, तो न सिर्फ गांवों पर सङ्कट आयेगा, बल्कि शहरों पर भी आयेगा। फिर गांव के बेकार लोगों का शहरों पर हमला होगा और ऊपर से परदेशी माल का हमला तो होता ही रहेगा। इस तरह दोनों हमलों के बीच में शहर वाले पिस जायेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि गांवों और शहरों के बीच ऐसा सहयोग रहे कि गांव वाले अपने उद्योग गाँव में चलायें और शहर वाले परदेश से आने वाली चीजें बनायें। इस तरह प्रत्येक गाँव पूर्ण हो जायगा और उनमें पूरा सहयोग होगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

* वर्ण व्यवस्था का आदर्श *

(आचार्य क्षितिमोहन सेन शास्त्री, एम०ए०)

वर्णाश्रम धर्म भारतीय समाज सङ्गठन का मूलाधार माना जाता है। यद्यपि इस समय 'चातुर्वर्ण्य' का केवल नाम ही शेष रह गया है और उनका स्थान अनगिनती जातियां ने ले लिया है तो भी इन जातियों का निकास मुख्यतः चारों वर्णों से ही माना जाता है।

इसमें संदेह नहीं कि जब वर्णाश्रम धर्म की स्थापना की गई तो लोक नेताओं के सामने उसका एक बहुत ऊँचा आदर्श रहा होगा। यही कारण है कि उन्होंने ब्राह्मण का स्थान जितना ऊँचा रखा उसकी जवाबदेही—उत्तरदायित्व भी उसी प्रकार असीम रखा। जहाँ सब लोगों को यह आदेश दिया गया कि वे ब्राह्मण को पूज्य मानें, और उनके प्रत्येक आदेश को अक्षरशः शिरोधार्य करें वहाँ ब्राह्मण के लिए भी अनिवार्य रूप से यह विधान बना दिया गया कि वे सरल, आडम्बरहीन, जीवन बितावें और अपना लक्ष्य ज्ञान की प्राप्ति और कठोर तपस्या ही रखकर समाज का संचालन करें।

पर दुर्भाग्यवश यह ऊँचा आदर्श बहुत दिन नहीं टिक सका। जब श्रद्धा सम्मान सहज ही मिलने लगा और कठोर तपस्या की आवश्यकता न रही, तो आदर्श से भ्रष्ट होने में कितनी देर लगती है? परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे प्राचीन ऋषियों की तपोभूमियाँ तीर्थों और मठों के रूप में बदल गईं और वहाँ के आचार्यों और तपस्वियों के उत्तराधिकारी महन्तों और पण्डों के रूप में प्रकट हुए। जिन लोगों के ऊपर समाज के नेतृत्व, संचालन का भार था वे सीधसादा जीवन छोड़कर ऐश आराम की जिन्दगी बिताने लगे।

शास्त्रों में बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि ब्राह्मण का आदर्श उच्च और महान होना चाहिये। उस आदर्श से भ्रष्ट होने पर जन्म से ब्राह्मण होने पर भी उसका ब्राह्मणत्व जाता रहता है। 'स्कन्द पुराण' में कहा गया है कि "राजद्वार पर वेद बेचने वाला ब्राह्मण पतित है। सदाचारहीन, सूदखोर और दुर्विनीत ब्राह्मण शूद्र हैं।" 'पद्म पुराण' में कहा गयाहै कि "केवल वेद पढ़ना ही ब्राह्मणत्व के आदर्श के लिये पर्याप्त नहीं है। वेद पढ़कर भी विचारपूर्वक जो उसका तत्व न समझ सके वह ब्राह्मण शूद्र-कल्प अपात्र है।"

इस प्रकार उस समय जो लोग लोक-मत का परिचालन या निर्माण करते थे, उनके हृदय में एक महान आदर्श था, और समाज को उस आदर्श पर अग्रसर करना ही उनका उद्देश्य था। इसीलिए वर्णाश्रम धर्म में ऐसी व्यवस्था की गई थी कि उससे प्रत्येक मनुष्य समाज का उपयोगी अङ्ग बनकर अपना जीवन सार्थक कर सके। जहाँ आदर्श और उद्देश्य रहते हैं वहाँ मनुष्य की विचार-बुद्धि जाग्रत रहती है। जहाँ कोई भी आदर्श और लक्ष्य नहीं वहाँ विचार किस बात का होगा? इसलिये जब उस समय के नेताओं ने देखा कि वर्णाश्रम धर्म से जो महान् उद्देश्य पूरा होना चाहिए वह सफल नहीं हो रहा है तो उन्होंने उपर्युक्त प्रकार के तीव्र विचार प्रकट किये थे। आज एक मात्र धन की सत्ता ने हमारा उद्देश्य और आदर्श लुप्त-कर दिया है इसलिए विभिन्न समुदायों के कर्त्तव्यों पर जोर देने का विचार भी जाता रहा। प्राचीन काल की तुलना में आज कल हमारा समाज तामसिकता से भर गया है। फिर भी कभी-कभी कुछ लोगों के मन में विचार बुद्धि जागृत हो जाया करती है। कबीर, रैदास, तुकाराम, नानक, दादू आदि मध्ययुग के महापुरुष बारम्बार इस आदर्श हीनता और अन्याय की तीव्र आलोचना करते रहे हैं, इसके पहले भी अनेक विद्वानों ने इस झूँठे जात्यभिमान की निन्दा की है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

महाभारत में ही इस विषय में सैकड़ों श्लोक पाये जाते हैं, जिनमें नाम मात्र की जाति के महत्व को अस्वीकार किया गया है। पर इस सम्बन्ध में सबसे स्पष्ट विवेचन 'वज्र सूची–उपनिषद' में मिलता है। यह तो अभी तक ठीक-ठीक पता नहीं लग सका कि इसका रचयिता कौन है,पर सन् ६७३ में इसका अनुवाद चीनी भाषा में हुआ था, इससे इसकी प्राचीनता का अनुमान किया जा सकता है। इस ग्रंथ में मुख्य रूप से इस सम्बन्ध में विचार किया गया है कि ब्राह्मण कौन है। इसके आरम्भ में ही यह प्रश्न किया गया है—

"तत्रचोद्यमस्ति कोवा ब्राह्मणोनाम, किं जीवः किं देहः,किं जातिः,किं ज्ञानम् ,किं धार्मिक, इति।"

अर्थात् "प्रश्न यह है कि ब्राह्मण कौन है ? जीव देह, जाति, ज्ञान, धर्मी, इनमें ब्राह्मण कौन है ?"

"पहले विचार किया जाय कि क्या जीव ब्राह्मण है ? ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि जीव भूतकाल से भिन्न-भिन्न देहों में निवास करता आ रहा है। वह एक रूप है, एक ही जीव को कर्मवश अनेक देह मिलती हैं। इस प्रकार सब देहों के जीव एक ही रूप के हैं और इसको ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता।"

"तो फिर क्या देह ब्राह्मण है ? नहीं, क्योंकि ब्राह्मण से चाण्डाल तक सभी लोगों की पंचभौतिक देह एक ही तरह की है। सब में बुढ़ापा और मृत्यु एक तरह ही आता है। ऐसा तो कोई नियम दिखाई नहीं पड़ता कि ब्राह्मण श्वेतवर्ण का, क्षत्री रक्तवर्ण का, वैश्य पीले वर्ण का और शूद्र काले वर्ण का ही हो। देह अगर ब्राह्मण होता तो पिता की मृत देह का दाह करने पर पुत्र को ब्रह्म हत्या का पाप लगता। इस विचार से देह ब्राह्मण नहीं है।"

"तो फिर क्या जाति ब्राह्मण है ? नहीं। ऐसा होता तो अन्य प्राणियों में भी अनेक जातियाँ होतीं। मनुष्य जाति के सिवा भी अन्य जाति से अनेक महर्षियों का उत्पन्न होना बतलाया गया है। जैसे श्रृङ्गीऋषि मृगी से, कौशिक ऋषि कुश से, जाम्बुक ऋषि जम्बुक (स्यार) से, व्यासजी मल्लाहिन से, वशिष्ट जी उर्वशी (स्वर्ग की वेश्या) से, अगस्तजी घड़े से उत्पन्न हुए कहे जाते हैं। जाति के बिना भी अनेक ज्ञान सम्पन्न ऋषि हुए हैं। इससे जाति ब्राह्मण नहीं है।"

"तो फिर क्या ज्ञान ब्राह्मण है ? नहीं, शास्त्रों के ज्ञाता और परमार्थदर्शी अनेक क्षत्रिय भी हैं। इसलिए ज्ञान ब्राह्मण नहीं है।

"तो फिर ब्राह्मण कौन है ? वह, जो अद्वितीय, जाति, गुण, क्रिया हीन, सत्य, अनन्तज्ञान स्वरूप आत्मा का साक्षात्कार प्रत्यक्ष भाव से करता है। यही स्मृति, श्रुति, पुराण, इतिहास का अभिप्राय है। अन्यथा और किसी प्रकार से ब्राह्मणत्व की सिद्धि नहीं हो सकती।"

इसी प्रकार 'भविष्य पुराण' में कहा गया है—

सामग्र्यानुष्ठानगणैः समग्रः
शूद्रायतः सन्ति समाद्विजानाम्।
तस्माद्विशेषो द्विज शूद्रनाम्नो—
नाध्यात्मको बाह्य निमित्त को वा॥ (४१-२६)

"क्योंकि सम्मान्य शूद्र और सम्मान्य ब्राह्मण ये दोनों सामग्री और अनुष्ठान में समान ही हैं, इसलिये ब्राह्मण और शूद्र में बाह्य या आध्यात्मिक कोई भेद नहीं है।"

इस प्रकार भारतीय वर्णाश्रम धर्म जहाँ जाति-भेद का उत्पादक है, वहाँ उसमें गुणों और कर्तव्यों पर भी बहुत अधिक जोर दिया गया है। यह बात दूसरी है कि संसार में हीन प्रकृति के लोगों की ही अधिकता रही है और वे प्रत्येक अच्छे से अच्छे नियम में भी अपनी स्वार्थ सिद्धि का छिद्र ढूँढ़ लेते हैं। यही कारणहै कि अनेक लोग ब्राह्मण-वंशमें उत्पन्न होने का अनुचित लाभ उठाते रहे हैं, तो भी कुछ लोग अपने कर्तव्य पालन में भी सचेत रहे हैं। इसका एक प्रमाण यही है कि जिन लोगों ने प्राचीन समय से अब तक जातिभेद और ब्राह्मणत्व की त्रुटियों के विरोध में आवाज उठाई है, वे अधिकांश में उच्चवर्ण के ब्राह्मण ही थे।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विश्वव्यापी अशांति और उसका प्रतिकार

(श्री० सत्यभक्त, पूर्व सम्पादक 'सतयुग')

मनुष्य यद्यपि एक मामूली, दुर्बल, परिवर्तनशील देह और सीमित इन्द्रिय शक्ति को लेकर ही इस दुनियाँ में आता है, पर उसके अन्दर कर्मशक्ति की एक ऐसी प्रेरणा रहती है, जिससे वह संसार के प्रत्येक कार्य को करने का साहस रखता है। वह समस्त प्रकृति पर अधिकार जमाने की चेष्टा करता है और चाहता है कि भूमि, जल, पवन, अग्नि सब मेरे वशीभूत रहें। इस उद्देश्य में इस समय मनुष्य ने बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर भी ली है, पर उसकी भूख कभी शांत होने वाली नहीं है। जल, थल और आकाश में भी अपना अधिकार जमा कर अब वह चंद्रमा, मंगल तथा अन्य ग्रहों में पहुँचने का स्वप्न देख रहा है।

यद्यपि मनुष्य ने नई-नई खोजें करके और एक से एक अद्भुत यंत्र बना कर अपनी शक्ति को बहुत बढ़ा लिया है, पर अभी तक वह उस वस्तु को प्राप्त नहीं कर सका है जिससे वह पूर्ण तृप्ति का अनुभव कर सके, और अपने को हर तरह से सफल मनोरथ समझ सके। इसके विपरीत इस प्रकार की भौतिक उन्नति में संलग्न सभी व्यक्ति महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर आपस में घोर प्रतिद्वन्दिता का भाव रखते हैं जिससे संसार में और भी अशांति तथा असंतोष का भाव बढ़ता है इस प्रकार वह उन्नति अनेक अवसरों पर जन समूह का कल्याण करने के बजाय दुःखदायी और नाशकारी सिद्ध होने लगती है। इस लिये विचारकों के सामने स्वभावतः ही यह समस्या उपस्थित होती है कि मनुष्य की कर्मशक्ति का विकास किस मार्ग से हो कि वह दूसरे के प्रतिकूल सहायक सिद्ध हो। प्रत्येक मनुष्य दूसरे को घटाने का प्रयत्न करने के बजाय अपने ही भीतर "स्वराज्य" या "विश्वराज्य" का अनुभव करे। इस समय संसार के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जो घोर प्रतिद्वन्दिता छिड़ी है और जिसे मिटाकर विश्व शक्ति का प्रयास बड़े-बड़े मनीषी और विशेषकर हमारे भारतीय नेता कर रहे हैं, वह उपरोक्त समस्या का ही स्पष्ट रूप है।

प्रत्येक जीव में भोग की कामना प्राकृतिक रूप से ही पाई जाती है। पर जिस प्रकार अन्य सब प्राणियों की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने पर उनकी तृप्ति हो जाती है, वैसी बात मनुष्य में नहीं पाई जाती। उसके मस्तिष्क का जो विकास हुआ है वह इस प्रकार का है कि उसके मनमें सदा नई-नई भोग वासनायें उत्पन्न होती रहती हैं। किसी मनुष्य को चाहे संसार भर का ऐश्वर्य मिल जाय तो भी उसकी लालसा और भी बढ़ती जाती है। इस सम्बन्ध में एक छोटी सी कहानी नीचे दी जाती है–

एक बड़ा गरीब मछुआ था। एक दिन नदी में जाल डालने पर उसे एक ऐसी सुन्दर मछली मिल गई जैसी उसने जन्म भर नहीं देखी थी। मछुआ अब उसे मारने को उद्यत हुआ तो वह बोली कि मैं मछलियों की रानी हूं, तुम मुझे छोड़ दो और बदले में जो चाहे सो तीन वर माँगलो। मछुआ को उसकी बात पर विश्वास हो गया और उसने बहुत सा रुपया माँग कर उसे जल में छोड़ दिया। मछुये ने सोचा था कि इतने रुपये से मैं और मेरे घर वाले समस्त जीवन सुख से निर्वाह कर सकेंगे। पर जब घर आकर उसने सब हाल अपनी स्त्री को बतलाया तो वह बड़ी नाराज हुई और कहने लगी कि तुम बड़े मूर्ख हो जो ऐसा सुयोग पाकर भी दस-पाँच हजार रुपये से संतुष्ट हो गये। जाओ उस मछली से कहो कि मेरी स्त्री रानी बनना चाहती है, इसलिये उसके लिये महल, फौज, पलटन, खजाना आदि बना दो। मछुआ नदी पर गया और मछली को पुकार कर अपनी स्त्री का संदेश सुना दिया। मछली रानी ने उसे स्वीकार कर लिया और मछुआ के घर पर एक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

राज्य की पूरी सामग्री तैयार हो गई। पर मछुआ की स्त्री ने देखा कि हमारा राज्य तो मामूली-सा है और संसार में हमसे बड़े-बड़े बहुत से राजा मौजूद हैं, तो वह फिर मछुये को तंग करने लगी कि जाओ और मछली से कहो कि वह मुझे संसार की सबसे बड़ी रानी बनादे। विवश होकर मछुआ फिर नदी पर गया और मछली रानी से स्त्री की बात कही। मछली ने उसे भी स्वीकार कर लिया और उस समय उसका राज्य पृथ्वी भर में सब से बड़ा और शक्तिशाली हो गया। पर मछुआ की स्त्री को चैन न पड़ा और वह सोचने लगी कि ऐसे राजा, रानी तो पृथ्वी पर बहुत हो चुके हैं, मुझ में कोई सबसे बढ़ कर विशेषता होनी चाहिये। उसने मछुआ से कहा कि मछली से कहो कि वह मुझे चंद्रमा और तारों की रानी बना दे। मछुआ झल्लाकर फिर मछली के पास गया और उसे स्त्री की आकांक्षा की बात बतलाई। मछली ने कहा कि तुम्हारी स्त्री किसी चीज के लायक नहीं है और वह फिर जैसी की तैसी हो जायगी। उसी समय सारा राज पाट गायब हो गया और वही टूटी-फूटी झोंपड़ी और फटे पुराने कपड़े फिर दिखलाई पड़ने लगे।

बाल मनोरञ्जन की एक पुस्तक में वर्णित इस कहानी में बहुत बड़ी शिक्षा निहित है। मनुष्य एक के बाद दूसरी सफलता प्राप्त करता जाता है, पर उसकी लालसा तृप्त नहीं होती। इतना ही नहीं मनुष्यों में प्रतिस्पर्धा का भाव भीषण रूप धारण करता जाता है और एक चंद्रमा तक जाने का मंसूबा बाँधता जाता है तो दूसरा मंगल लोक तक की दौड़ लगाने का दावा करता है। इसका परिणाम एक दिन स्वभावतः यह होगा कि वह फिर उसी अर्धनग्न अवस्था में पहुँच जायगा। हिन्दू शास्त्रकारों का यह कथन है कि लोभ से लोभ नहीं मिटता, लालसा से लालसा का अन्त नहीं किया जा सकता, वर्तमान परिस्थिति को देख कर सर्वथा सत्य प्रतीत हो रहा है।

इस अवस्था के सुधार का, इस भयंकर नाश के भँवरजाल में से मनुष्य के उद्धार का एक ही मार्ग है, और वह यह है कि निरी भौतिकता में संलग्न न हो कर आध्यात्मिकता की तरफ भी ध्यान देना। भौतिकता जहाँ मनुष्य को एक दूसरे का प्रतिस्पर्धी—विरोधी बनाती है, वहाँ आध्यात्मिकता के प्रभाव से एकात्मता या अद्वैतभावना का उदय होता है। वह यह अनुभव करने लगता है कि संसार में एक ही आत्मतत्व व्याप्त है और उसकी दृष्टि से एक मनुष्य दूसरे का विरोधी या शत्रु कदापि नहीं हो सकता। अगर एक मनुष्य ऐसा आचरण करता है तो हमको यही समझना होगा कि उसके ऊपर अज्ञान का आवरण पड़ा है जिससे वह मूर्खता पूर्ण कार्य कर रहा है। जब एक मनुष्य मूर्खता का कार्य करता है तो दूसरा भी वैसा ही करे तो यह कोई प्रशंसा की बात नहीं है। जो बात व्यक्तियों की है वही राष्ट्रों के लिये भी है। अगर कोई राष्ट्र सम्पत्ति के लालच से पागल होकर संसार भर को नाश करने की तैयारी कर रहा है—समस्त मनुष्य जाति का संहार करने के लिये एटम और हाइड्रोजन बम बना के रखता जाता है—तो इस अवस्था का प्रतिकार इससे नहीं हो सकता कि दूसरे सभी देश भी वैसे ही प्रलयकारी शस्त्र बनाकर उसी प्रकार की आत्मघाती नीति का अवलंबन करते जायें। किन्तु इसके प्रतिकार का सच्चा उपाय वही है जो गौतम-बुद्ध और महावीर से लेकर महात्मा गाँधी तक ने हम लोगों को सिखाया है। प्राचीन काल में भी क्षात्रय-बल से ब्रह्मबल प्रबल सिद्ध हो चुका है और आज भी हिंसा को अहिंसा द्वारा पराभूत करके दिखाया जा चुका है। यह भौतिक या पाशविक शक्ति पर आत्मिक शक्ति की विजय थी और अब भी अगर संसार का उद्धार किसी प्रकार हो सकता है तो उसका एक मात्र यही मार्ग है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धर्म परिवर्तनशील है या अपरिवर्तनशील ?

(सुश्री लीलारानी)

विद्वानों और महात्माओं ने धर्म को संसार का सर्वश्रेष्ठ तत्व बतलाया है। उनका कहना है कि संसार की स्थिति धर्म के आधार पर ही है और जिस मनुष्य में धर्म का अभाव है उसकी कोई गिनती ही नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि अभी तक संसार के इतिहास में सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति धर्म की ही रही है। इसी के प्रभाव से मनुष्य क्रमशः पशु की सी अवस्था से निकल कर एक सज्ञान और सामाजिक प्राणी की स्थिति तक पहुँच सका है।

इतना होने पर भी धर्म के सम्बन्ध में जितना मतभेद पाया जाता है उतना अन्य किसी विषय में देखने में नहीं आता। भिन्न-भिन्न देशों के लिये अलग-अलग धर्म प्रवर्तकों का होना तो समझ में आ सकता है, क्योंकि सब देशों की परिस्थितियां एक-सी नहीं होतीं, और परिस्थितियों का प्रभाव धार्मिक विधियों पर अवश्य पड़ता है। पर एक ही देश में बार-बार नये-नये धर्म क्यों चलाये जाते हैं? क्या धर्म में भी परिवर्तन किया जा सकता है? क्या धर्म थोड़े ही दिन ठहरने वाली वस्तु है? यदि धर्म इसी प्रकार बदल सकता है, तो धर्म में भी अनिश्चितता है। फिर धर्म की दुहाई देना भी व्यर्थ है। जिसे आज धर्म कहते हैं, वही कल धर्म न रहेगा। ऐसी अवस्था में किसी भी धर्म प्रवर्तक के उपदेश को कैसे स्वीकार किया जाय?

यथार्थ में धर्म के दो अंग होते हैं। एक तो नित्य अथवा अपरिवर्तनशील और दूसरा अनित्य अथवा परिवर्तनशील। सदाचार या सद्गुण तो नित्य या अपरिवर्तनशील धर्म हैं। उन सद्गुणों के अनुसार बर्ताव करने, इन गुणों को बढ़ाने का प्रयत्न करने, और आपस में व्यवहार करने की विधियाँ समय-समय पर बदलती रहती हैं। जैसे-जैसे मनुष्य का मानसिक विकास होता है, ये विधियाँ पहले से अच्छी निकलती आती हैं। नये-नये धर्म प्रवर्तकों का कार्य पहले से अधिक श्रेयस्कर अथवा बदली हुई परिस्थिति के अनुकूल विधियाँ बनाने का होता है।

उदाहरण के लिये देखिये कि सत्य, दया, न्याय-प्रियता, उदारता आदि सद्गुण अपरिवर्तनशील हैं। कोई धर्म इनको कभी बुरा न कहेगा! ये प्रायः सभी धर्मों में पाये जायेंगे। कोई धर्म-प्रवर्तक इनका निषेध न करेगा। इसलिये ये नित्य-धर्म हैं। लेकिन सत्य, दया, उदारता आदि के सूक्ष्म रूप, जैसे जैसे मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती जायेगी वैसे-वैसे प्रकट होंगे। जैसे कोई तो झूँठ बोलने को ही सत्य का उलङ्घन समझे। दूसरा ऐसे सभी कार्यों को भी झूँठ समझे जिनको उसे छिपाना पड़े, या मनमें किसी अनुचित इच्छा को लाना भी सत्य का उलङ्घन समझे। यह उस मनुष्य के विचारों की सूक्ष्मता पर निर्भर है। इस प्रकार सत्य-धर्म में तो कोई परिवर्तन नहीं हुआ, पर उसके प्रयोग में विकास अथवा उन्नति अवश्य हुई।

सद्गुणों की वृद्धि करने वाली क्रियाएँ, जैसे—उपासना, सद्ग्रन्थों का अध्ययन, दान, तीर्थाटन आदि भिन्न-भिन्न जातियों, देशों व समयों में भिन्न-भिन्न होती हैं। यह सब धर्म का अङ्ग होते हुये भी परिवर्तनशील हैं। उनका उद्देश्य सदैव एक ही होता है, परन्तु एक ही उद्देश्य से कार्य करने वाले मनुष्यों की कार्य प्रणाली पृथक्-पृथक् होती है। इसी प्रकार जन समुदायों अथवा सम्प्रदायों की धार्मिक शैलियाँ भिन्न हो सकती हैं। और एक ही जाति में महापुरुष नई-नई शैलियों का आविष्कार करते हैं। इसी प्रकार धार्मिक संस्कार पृथक्-पृथक् और परिवर्तनशील होते हैं तो सभी जातियों, सभी देशों, सभी समयों में। मनुष्य जब प्राकृतिक शक्तियों को अपने से बहुत अधिक प्रबल देख कर उन में देवताओं की कल्पना करता है, तो उन शक्तियों को प्रसन्न करने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के लिये पूजा करना, उन को भेंट चढ़ाना, बलिदान करना, आवाहन करना स्वाभाविक ही है, जिससे वे प्रसन्न होकर मनुष्यों का अनहित न करें, और उसके लिये सुखकारी सिद्ध हों। यही धार्मिक संस्कारोंका मूल है। पर देश-काल के अनुसार हमारी प्रणाली बदलती रही है और आगे भी बदलती रहेगी। उदाहरणार्थ किसी विधि में किसी ठण्डे देश में ऊनी वस्त्र पहिने जाते हैं और फिर यदि वे ही लोग किसी गर्म देश में आ बसें तो ऊनी वस्त्रों के स्थान में सूती वस्त्र पहिनने लगेंगे. अथवा यदि किसी समय किसी पूजा में मिट्टी की साधारण सी मूर्ति बनाकर रखने की प्रथा हो और फिर वे मूर्तियाँ सुन्दर पत्थर की बनने लगें तो मिट्टी की मूर्ति की जगह पत्थर की मूर्तियों का प्रचलन हो जायगा। लगभग पचास साठ वर्ष पहले ही महाराष्ट्र में गणपति पूजन के अवसर पर शास्त्रानुकूल वेषभूषा की मूर्तियाँ बनती थीं, पर अब हमने देखा कि ये मूर्तियाँ अङ्गरेजी फौजी अफसर के भेष में, राष्ट्रीय नेताओं के भेष में, फैशनेबिल जौंटिलमैनों के भेष में बनाई जाने लगी हैं।

धार्मिक संस्कारों का मूल चाहे कुछ हो परन्तु उनका प्रभाव विशेष रूप से पड़ता ही है। उस अवसर का महत्व संस्कार करने वाले के मन पर अङ्कित हो जाता है। संस्कार के साथ जिस क्रिया को मनुष्य करता है उसे बिना सोचे समझे, हँसी खेल के समान नहीं करता वरन् उसकी महानता उसके हृदय पर जम जाती है। इस प्रकार अनेक धार्मिक संस्कार धार्मिक भावों अथवा सद्गुणों की बढ़ती करने वाले होते हैं।

पर जैसे जैसे समय बीतता जाता है परिवर्तित परिस्थितियों के प्रभाव से धार्मिक संस्कारों तथा अन्य धार्मिक क्रिया कांडों की विधि कोरा दिखावा या आडम्बर मात्र रह जाती है। जिन सद्गुणों को उनके द्वारा बढ़ाना अभीष्ट होता है उसके विपरीत इसके कारण दुर्गुणों की वृद्धि होने लगती है। लोग उसके सार को भूल कर बाहरी स्वरूप पर ही जोर देने लगते हैं। कभी-कभी वह विधि इतनी पेचीदा और लम्बी चौड़ी होती है कि साधारण मनुष्य न तो उसे समझ सकता है न याद रख सकता है। ऐसी अवस्था में पंडितों या पुजारियों की एक श्रेणी बन जाती है जो उसे कराने के अधिकारी समझे जाते हैं। ये पुजारी जब अपने अधिकार को दृढ़ता के साथ स्थापित देखते हैं तो वे भी उस विधि के पूर्ण अध्ययन की चिन्ता नहीं करते, वरन उसके द्वारा अधिक से अधिक धन प्राप्त करने को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं। परिणाम यह होता है जो धार्मिक कृत्य मानव-कल्याण के लिये प्रचलित किये गये थे वे ही फिर स्वार्थ-साधन, अभिमान, द्वेष आदि के उत्पत्ति करने वाले बन जाते हैं। संसार में धर्म के नाम पर जो अनर्थ हुये हैं, उसका मूल कारण यही है।

ऐसी अवस्था देखकर किसी महापुरुष का हृदय सहानुभूति और करुणा से द्रवित हो जाता है। वह ऐसे पुजारियों और ऐसे आडम्बर का विरोध करने लगता है। जब किसी धार्मिक कृत्य से सद्गुणों के बदले दुर्गुण बढ़ने लगें तो वह त्याज्य हो जाता है। इसलिये फिर से सार-धर्म के उपदेश और नवीन धार्मिक-विधियों के प्रचार की आवश्यकता होती है। कभी-कभी पुजारियों का गुरुडम मिटाने को धार्मिक कृत्यों की पेचीदा विधियों को दूर करके साधारण व्यक्तियों के समझने और आचरण कर सकने योग्य रास्ता बताना आवश्यक होता है। इस प्रकार धार्मिक व्यवस्था में महान परिवर्तन हो जाता है। परन्तु धर्म का सार रूप, सद्गुणों का आचरण अब भी वैसा ही महत्वपूर्ण रहता है जैसा कि पहले था। अथवा यह कहना चाहिये कि वह पहले से भी अधिक आवश्यक हो जाता है, क्योंकि उसी की रक्षा के लिये बाहरी विधियों और क्रियाओं में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार नित्य धर्म की रक्षा के लिये ही महापुरुषों द्वारा धर्म के ऊपरी रूपमें परिवर्तन किया जाताहै जिसे सामान्य व्यक्ति नवीन धर्म अथवा सम्प्रदाय की स्थापना का रूप दे देते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

❋ चमत्कार को नमस्कार ❋

(श्री० सत्यदेव शर्मा)

अविकसित मानसिक स्तर की जनता में चमत्कारों के प्रति बड़ा आकर्षण होता है। जो बात साधारणतया नित्य देखने में नहीं आती—उस अनोखी बात या वस्तु को देखकर लोग आश्चर्य करते हैं और उसे देखने दौड़ते हैं। पहाड़ी तराइयों में हाथियों के झुंड वैसे ही घूमते फिरते हैं जैसे यहाँ खेतों और मैदान में हिरन घूमते हैं। इसलिये उन वन्य प्रदेशों के निवासी हाथियों के देखने में कुछ आश्चर्य वहीं मानते। पर जिन स्थानों में हाथी नहीं पहुँचते वहाँ कभी एकाध हाथी का आजाना तमाशे से कम नहीं समझा जाता। बाजीगर, नटविद्या, अजायबघर, चिड़ियाघर आदि अनेकों आविष्कार मनुष्य की इस कौतुक, कौतूहल अथवा चमत्कार की आकांक्षा रखने वाला बुद्धि को तृप्त करने के लिए ही हुए हैं।

कोई बात हमको तभी तक चमत्कार लगती है, जब तक वह आमतौर पर प्रचलित नहीं होती। पर जब उसका रहस्य प्रकट हो जाता है या वह बात प्रायः देखने में आने लगती है, तो फिर वह चाहे कितने भी महान चमत्कार की क्यों न हो, उसका आकर्षण जाता रहता है। वैज्ञानिक आविष्कारों के आरम्भिक दिनों में, जब रेल, तार, टेलीफोन, हवाई जहाज, मोटर आदि का नया-नया प्रचलन हुआ था तब लोग इन्हें देखने के लिए सौ-दो सौ मील पैदल चल कर आते थे, और इन वस्तुओं को देखकर आश्चर्य के समुद्र में डूब जाते थे। पर धीरे-धीरे जब ये वस्तुऐं नित्य के व्यवहार में आने लगीं तो कुछ दिनों में उनका आकर्षण जाता रहा—चमत्कार समाप्त हो गया।

असामान्य वस्तुओं और घटनाओं को देख कर मनुष्य उनके पीछे किसी असामान्य अथवा गुप्त शक्ति होने की कल्पना करता है। अनगिनती, देवी देवताओं का आविर्भाव आदिम युग में इसी मनोवृत्ति से हुआ था। बिजली चमकने जैसी प्राकृतिक बात का ठीक कारण मालूम न होने से इसका कोई 'तुक' बिठाने के लिये इन्द्र के हाथमें वज्र चमकने की बात सोच ली गई। बीमारियों अथवा महमारियों के पीछे किसी देवी, देवता का प्रकोप होने की बात, शरीर-शास्त्री और आरोग्य-विज्ञान से अनभिज्ञ लोगों में अभी तक प्रचलित है। तरह-तरह के रोगों को दूर करने के लिये भूतों और जिन्नों को भगाने वाले ओझा लोगों की मान्यता अभी पिछड़े हुए लोगों में मौजूद हैं। पर ये बातें विचारशील लोगों में मूर्खतापूर्ण समझी जाती हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि बीमारी स्वास्थ्य-सम्बन्धी नियमों के उलङ्घन का परिणाम है किसी देवी देवता की नाराजी या प्रसन्नता का इससे सम्बन्ध नहीं।

जब मनुष्य जाति की सभ्यता का विकास होने ही लगा था तब किसी वस्तु, व्यक्ति, शक्ति या घटना की महानता नापने की कोई बुद्धिसङ्गत कसौटी उसके पास न थी। उस समय चमत्कार ही बड़प्पन का एक मात्र लक्षण मान लिया गया। इसलिये बिजली चमकना, वर्षा होना, भूकम्प, तूफान, अकालमृत्यु, बीमारी, संतान होना या न होना, संपत्ति-विपत्ति आदि सभी घटनाओं से किसी न किसी देवी-देवता का सम्बन्ध जोड़ा गया। नवग्रहों की पूजा इसी आधार पर चल पड़ी। किसी व्यक्ति को यदि ऋषि, महर्षि, देवदूत या अवतार सिद्ध करना होता तो उसके द्वारा कुछ चमत्कार होने की बात अवश्य बतानी पड़ती। जो चमत्कार न दिखा सके वह भी महापुरुष हो सकता है, इस बात को मानने के लिए कोई तैयार न होता था। इसलिये जिन स्वर्गीय सत्पुरुषों को उनके अनुयायी 'महान' सिद्ध करना चाहते थे उनके साथ कुछ न कुछ चमत्कारी घटनाओं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की किम्वदंतियाँ अवश्य जोड़ते। भले ही उन्हें यह कार्य अनिच्छापूर्वक ही करना पड़ता हो।

हम देखते हैं कि पौराणिक काल के सभी देवी, देवता ही नहीं, महापुरुष भी ऐसी ही सिद्धियों या जादूगरी जैसी अलौकिक घटनाओं से पूरी तरह सुसज्जित हैं। हर देवता या महापुरुष के अनुयाइयों ने अपने उपास्य की महिमा बढ़ाने और उसे अन्यों से बढ़कर अलौकिक शक्ति सम्पन्न सिद्ध करने के लिये प्रयत्न किया है। इस प्रकार की प्रशंसा के गीत गाने की घुड़दौड़ में पौराणिक काल में एक अत्यन्त विशालकाय साहित्य तैयार हो गया है। यद्यपि उनमें शिक्षा और विचारोत्तेजक सामग्री भी पर्याप्त है, पर मुख्य उद्देश्य अमुक देवता या महापुरुषों को बढ़ा-चढ़ाकर सबसे अधिक चमत्कारी सिद्ध करना ही है। योगेश्वर कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के द्वारा मानव-जातिके लिये किये गये महान कार्यों को पर्याप्त न समझा गया, वरन् अनेक साधारण घटनाओं को अलौकिकताओं के पुट देकर तिल का ताड़ बना दिया गया। उस कालकी स्थिति के अनुसार यह सब सिद्ध करना अनिवार्य ही हो गया था।

पिछले समय में साधु महात्माओं के संबन्ध में भी इसी प्रकार की मान्यता जन साधारण में रही है कि जो जितना पहुँचा हुआ फकीर-सिद्ध, महात्मा होगा, वह उतना ही चमत्कार दिखला सकेगा। इस गलत कसौटी के कारण अनेक सत्पुरुष, जो अपनी सत्य निष्ठा पर कायम रहे, जनता में सम्मान प्राप्त न कर सके और न किसी पर अपना प्रभाव जमा सके। इस असफलता से खिन्न होकर कई सत्पुरुषों ने मौन-स्वीकृति से अपने चमत्कारी होने की बात स्वीकार करली, और अनेक अपने भक्तों द्वारा गुण गाथा गाये जाने से सिद्ध बन गये, कुछों ने जान बूझकर इस प्रकार का आडम्बर स्वयं बना लिया। धूर्तों की इस अज्ञानान्धकार में खूब बन आई। आज भी अनेक साधु और महात्मा नामधारी ऐसे ही अड्डे जगह-जगह लगाये बैठे हैं।

सौभाग्यवश यह अज्ञानान्धकार का युग अब धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है और महापुरुषों की महानता का मूल्यांकन दूसरी कसौटी पर किया जाने लगा है। अब यह बात नहीं रही कि सूर्य को गाल में बन्द किये बिना हनुमान जी की महत्ता को स्वीकार न किया जाय। उनका अखंड ब्रह्मचर्य, न्याय पक्ष का समर्थन और अन्याय पक्ष से लड़ने में निःस्वार्थ भाव से अपनी जान की बाजी तक लगा देना आदि ऐसी महान बातें हैं कि अगर हम हनुमानजी के सूरजको मुँहमें रखलेने वाली कथाको छोड़भी दें तो उनके व्यक्तित्वमें किसी प्रकार की कमी नहीं आती। अमुक टीले पर गाय के थन में से अपने आप दूधकी धार निकलती थी, वहाँ खोदने पर अमुक देवता की मूर्ति निकली और उसका यह मन्दिर बना है। अनेकों मन्दिरों के विषय में फैली हुई यह किम्वदंती अब उतनी महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती, जितनी कि यह बात अमुक देवस्थान द्वारा जन हित के क्या-क्या कार्य सम्पादन होते हैं? यह रुचि परिमार्जन सत्य की प्रतिष्ठा के लिए एक शुभ लक्षण है। चमत्कारों की पुरानी, खोटी कसौटी पर तो केवल अज्ञान और धूर्तता की वृद्धि होना ही संभव है।

चमत्कारों की इस युग की कसौटी यह है कि कौन व्यक्ति, वस्तु या घटना किस हद तक सदुद्देश्य पूर्ण, मानवता की सेवा करने वाली एवं धर्म मर्यादा के अनुकूल है। अब किसी को सच्ची सती सिद्ध करने के लिये छः महीने तक सूरज को रोके रखने, और ब्रह्मा, विष्णु, महेश को बालक बना देने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। चित्तौड़ की रानियों का आत्मत्याग अब किसी अनुसुइया से कम नहीं समझा जाता। अब अवतार माने जाने के लिये बाराह भगवान की तरह दाँत पर या कच्छप भगवान की तरह पीठ पर पृथ्वी उठाने का प्रकरण ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है, वरन् अब कुछ भी चमत्कार न करने वाले परमत्यागी और सच्चे संत बुद्ध भगवान को केवल उनके ज्ञान, सेवा, तपस्या, त्याग के आधार अवतार मान लिया गया। महात्मा गाँधी, स्वामी दयानन्द, शङ्कराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आदि अनेकों युग-निर्माता महापुरुषों के जीवन-चरित्र में कोई चमत्कार या जादूगरी की बात नहीं है। ये सभी सीधे सादे सत्पुरुष और समाज सेवी थे, फिर भी जनता ने उनको महान और दैवी शक्ति सम्पन्न मान लिया।

तप एक विज्ञान है और प्रत्येक विज्ञान एक शक्ति उत्पन्न करता है। कोई भी साधारण साधक या विशेष तपस्वी यदि साधना करता है, तो निश्चित है कि उसे अपने परिश्रम के अनुकूल आत्मबल प्राप्त होगा। जिस प्रकार बुद्धिबल, बाहुबल, धनबल, संगठनबल, पुण्यबल आदि बलों के द्वारा अनेक प्रकार की सफलताएँ और विशेषताऐं प्राप्त की जा सकती हैं, कठिनाइयों को परास्त और समृद्धि को वरण किया जा सकता है, उसी प्रकार तप द्वारा उत्पन्न आत्मबल के बदले में भी भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। जप, अनुष्ठान, यज्ञ, दान आदि का यही रहस्य है। जिस प्रकार अपने पास धन न होने पर किसी से उधार, दान या सहायता के रूप में प्राप्त करके अपना रुका हुआ काम चलाया जा सकता है, उसी प्रकार एक व्यक्ति दूसरे को अपने तप का पुण्यफल देकर मनोवांछित सहायता कर सकता है। तप-साधना का विज्ञान यही है कि कोई मनुष्य चाहे तो स्वयं परिश्रम करके तप-शक्ति एकत्रित करे, या कोई तपस्वी किसी के दुख पर द्रवित होकर अपना पुण्यफल उसे दान करके सुखी बनादे। बस, इतनी ही तप-शक्ति की मर्यादा है।

जो व्यक्ति लोगों को आश्चर्य में डालने वाली करामातें दिखाते हैं वे या तो धूर्त हैं या मूर्ख। एक-दो करामात दिखाने में ही वर्षों की संचित तपस्या व्यय हो जाती है। केवल बाजीगर जैसा कौतुक करने में कोई बुद्धिमान व्यक्ति अपनी तपस्या के फल को निरर्थक नष्ट करेगा यह बात समझ में नहीं आती। यदि कोई करता है तो उसे अवश्य महामूर्ख समझा जायगा। अन्यथा ऐसे व्यक्ति में धूर्तता का छिपा होना निश्चित है। इस प्रकार की अगणित घटनाओं का भंडाफोड़ होते रहने के कारण जनता अब बहुत सतर्क हो गई है और उसने अपने महानता नापने के गज को ठीक कर लिया है। अब जनता उन व्यक्तियों तथा कार्यों में महानता का दर्शन करना चाहती है जिनमें स्वार्थत्याग, आत्मसंयम, परोपकार, लोकहित का कुछ अंश पाया जाता है।

कुछ दिन पहले तक किसी से कोई वास्ता न रखने वाले, अपनी मुक्ति-साधना में लगे हुये साधु-महात्माओं की लोग इस विचार से सेवा करते थे कि उन्होंने जो तप, बल, इकट्ठा कर रखा है उसमें से वे हमारी सहायता के लिये कुछ हिस्सा दे देंगे। पर अब किसी एकान्तसेवी की महानता में भी संदेह किया जाता है। क्योंकि जिस पकार कोई सेठ अपने स्वार्थ के लिये दिन-रात धन संग्रह में जुटे रहते हैं और अपने आस-पास वालों के सुख-दुख की कुछ परवाह नहीं करते, उसी प्रकार वे साधु-संत भी आध्यात्मिक क्षेत्र के स्वार्थी सेठ हैं। उनको जनता के दुःखों, संकटों की कोई परवाह नहीं होती, वे केवल अपनी मुक्ति के लिये प्रयत्न करते रहते हैं। ऐसे संकीर्ण और स्वार्थी विचार वालों से न तो भगवान प्रसन्न हो सकता है और न कोई असाधारण सिद्धि उनको दे सकता है। यह मान्यता अब लोक-समाज में दिन पर दिन जोर पकड़ती जाती है और जनता कोरे 'भजनानन्दी' लोगों की अपेक्षा उन लोकसेवी व्यक्तियों को अधिक महत्व देने लगी है जो अपने निजी लाभ की उपेक्षा करके जन-हित के कार्यों में निःस्वार्थभाव से लगे हुये हैं।

जन-समुदाय की मनोवृत्तियों के विकास के साथ-साथ सत्य का मूल्य सही दृष्टिकोण से आँका जाने लगा है। विवेकशील आत्माऐं वास्तविक तथ्य का दिग्दर्शन करने लगी हैं। जिनके अन्तर में महान बनने की आकांक्षा है वे अब ऋद्धि-सिद्धियों का जादू ढूँढ़ने पहाड़ों में नहीं जाना चाहते, क्योंकि वैज्ञानिक उन्नति ने अनेकों ऋद्धि-सिद्धियों को व्यर्थ बना दिया है। आकाश में उड़ने की सिद्धि को हवाई जहाज ने, जल पर चलने की सिद्धि को अग्निबोटों ने, दूर-श्रवण की सिद्धि को रेडियो ने, दूर-दर्शन की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सिद्धि को टेलीविजन ने, अन्तरदृष्टि को एक्सरे ने अनावश्यक बना दिया है। और भी जो तथा-कथित सिद्धियाँ शेष हैं वे अन्य लोकों में भ्रमण करने की सुविधा की भांति विज्ञान की उन्नति के द्वारा कुछ समय में सर्व साधारण के लिये सुलभ हो जायेंगी। जो चीज गुप्त नहीं है—अनोखी नहीं है उसमें क्या सिद्धि मानी जाय? सुधरा हुआ जन मानस अब महानता का अनुभव किसी के धन बल, मान अथवा तप में नहीं करता, वरन् उसकी उदारता, सेवा दूसरों को सुखी बनाने के लिये किये हुये आत्मत्याग में ही करता है।

जब जो वस्तु कम होती है या नहीं होती, तब वही वस्तु चमत्कार जैसी लगती है। आज व्यक्तिवाद का बोलबाला है, हर आदमी खुदगर्जी में डूबा है। बिना मतलब के कोई किसी की रत्ती भर मदद करना नहीं चाहता। ऐसे स्वार्थवादी युग में 'परमार्थवाद' के दुर्लभ आदर्शों का कहीं दर्शन होना सचमुच एक चमत्कार ही है। आज "परहित के लिये स्वार्थ त्याग" बड़ा कठिन कार्य है। यह आदर्श किसी जमाने में अधिकाँश भारतवासियों का रहा था, यह ठीक है, पर आज तो नवीन सभ्यता ने उसे जड़मूल से उखाड़ फेंका है। इसलिये अब उसका दर्शन होना चमत्कार से कम नहीं है, और वास्तव में मनुष्य की महानता की, उसके अन्तःकरण में स्थित सतोगुण, ज्ञान, परमात्मा की प्रतिष्ठा की कसौटी भी यही है। इसलिये इस परमार्थवादी मनोवृत्ति को चमत्कार कहा जाना चाहिये, और जिन सत्पुरुषों में यह प्रवृत्ति समुचित मात्रा में विकसित हुई हैं, उन्हें चमत्कारी कहा जा सकता है।

"अखण्ड ज्योति" का गायत्री परिवार सच्चे सत्पुरुषों से भरा एक रत्न भंडार ही है। इसके बहुसंख्यक सदस्य गृहस्थी में रहते और साधारण कपड़े पहिनते हैं। वे लाल-पीले कपड़े नहीं पहिने हैं और न सिर पर जटाजूट बढ़ाये हैं। फिर भी उनमें से अनेकों का आत्म-संयम, स्वार्थ-त्याग और सेवा-भाव ऐसा है, जिस पर हजारों लाल-पीले कपड़े वालों को निछावर किया जा सकता है। इस परिवार के कितने ही सदस्य मानवता की, धर्म और संस्कृति की सेवा के निमित्त जो प्रयत्न कर रहे हैं उसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की जा सकती है। युग-निर्माण की इस महत्व पूर्ण वेला में ऐसे ही लोगों के चरित्र और कार्य, जनतामें प्रकाश उत्पन्न कर सकते हैं। अन्धकार को चीर कर उदय होता हुआ प्रातःकाल का सूर्य एक चमत्कार है और सभी लोग इस चमत्कार को नमस्कार करते हैं। व्यक्ति गत स्वार्थ परता में, वासना और तृष्णा में, मानव देह को जलाने वाले अज्ञानियों के बीच सचमुच ही वे लोग अन्धकार को दूर करने वासे प्रातःकालीन सूर्य की तरह एक चमत्कार हैं, जो अपनी व्यक्तिगत हानि उठाकर—धर्म और संस्कृति की सेवा में आश्चर्य जनक श्रद्धा के साथ सच्चे हृदय से संलग्न हैं।

गायत्री-परिवार के ऐसे चमत्कारी सत्पुरुषों को सचित्र-परिचय इसी अङ्क से आरम्भ किया जा रहा है। पाठक देखेंगे कि यह संस्था बलिदान, आत्मदान और जन-सेवा के आदर्शों को कियान्वित करने वाले कितने ही नररत्नों से जगमगा रही है। इस युग में यह एक चमत्कार ही है। चमत्कार को नमस्कार करने की परिपाटी के अनुसार विश्व-मानव की अन्तरात्मा इसे नमस्कार ही कहेगी।

तपोभूमि के आश्रमवासी

गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार पुस्तक में गायत्री उपासना द्वारा अनेकों व्यक्तियों को प्राप्त हुए अनेक प्रकार के लाभों का वर्णन है। जब सामान्य उपासना से साधारण लोगों को इतना चमत्कार दिखाई दे सकता है तो जहां माता स्वयं निवास करती हैं वहाँ कोई विशेषता न होगी? अवश्य ही वहां भी सद्बुद्धि प्रेरित चमत्कारी आत्माओं का रहना स्वाभाविक है। इन दिनों यों लगभग २० व्यक्ति तपोभूमि में रहते हैं, वे सभी सज्जनता और सत्पात्रता की ओर दिन-दिन तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। उनमें से कुछ वरिष्ट-तपस्वियों का परिचय यहाँ लिखा जा रहा है। कुछ का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अगले अङ्कों में छपेगा। तपोभूमिसे बाहर भी गायत्री परिवार के व्यापक क्षेत्र में जो उपासना परायण, आदर्शचरित्र एवं जनहित के लिए त्याग करने वाले सज्जन हैं उनके चित्र एवं परिचय हर महीने छापे जाते रहेंगे। अखण्ड ज्योति प्रेमी सज्जन अपने क्षेत्र के सभी आदर्श आत्माओं के चित्र और परिचय भिजवाते रहने की कृपा करते रहेंगे ऐसी आशा है।

गायत्री तपोभूमि की परम्परा बड़ी ही पुनीत है। प्राचीन काल के धर्म संस्थानों एवं ऋषि आदर्शों की परम्परा को पुनः जीवित करने की दृष्टि से ही इस आश्रम के निर्माण का संकल्प किया था। २४ दिन केवल गंगाजल पीकर जीवनको संकट में डालने वाले कठोर उपवास के साथ २ आचार्यजी ने इस आश्रम की नींव रखते हुए यही भावना रखी कि यह आश्रम उन लोगों से भरा पूरा रहे जिन्हें आदर्शवादी कहा जा सके, जो अपने तप और त्याग से श्रम और साधना से जनता को प्रकाश देते रह सकें। प्रसन्नता की बात है कि आचार्य जी का वह संकल्प निष्फल नहीं जा रहा है। आदर्शों को अपने जीवन में प्रत्यक्ष करने वाले ही व्यक्ति यहाँ ठहर पाते हैं। कभी कोई व्यक्ति दुर्बुद्धि से यहाँ घुस आता है तो थोड़े ही दिनों में उसे भाग खड़ा होने को विवश होना पड़ता है। इन दिनों जो तपस्वी तपोभूमि में निवास कर रहे हैं उनमें से कुछ के परिचय इस प्रकार हैं:—

(१) श्री० अशर्फीलालजी

बिजनौर के सुप्रसिद्ध वकील बा० अशर्फीलालजी उन सभी बौद्धिक योग्यताओं से सुसज्जित हैं जो वकीलों में होनी चाहिए। किसी बात की तह तक बड़ी बारीकी से पहुँच जाना और वास्तविकता का समझ लेना उनके लिए बहुत ही सरल है। अन्तरात्मा में अनेक वर्षों से धार्मिक जीवन व्यतीत करने और नर तन को सफल बनाने की उनकी तीव्र आकांक्षा बहुत समय से थी। अखण्ड-ज्योति से उनका सम्पर्क हुआ तो इस दिशा में उनकी प्रकृति दिन-दिन बढ़ती ही गई। कईबार उनका मथुरा आना और ठहरना हुआ। जितनी ही बारीकी से इस संस्था के कार्यों पर उनने दृष्टि डाली। उतना ही संतोष होता गया और निश्चय किया कि इस असाधारण उच्चकोटि के कार्यक्रम को असफल होने से बचाने के लिए मुझे सक्रिय सहयोग देना चाहिए।

कार्य की महानता स्पष्ट थी। सुयोग्य सहकर्मियों के अभाव से संस्था के सञ्चालन के भार से आचार्य की गरदन टूटी जा रही थी यदि यही स्थिति रहती तो या तो संस्था की महान गतिविधि बन्द हो जाती या आचार्यजी का रहा बचा स्वास्थ्य भी समाप्त हो जाता। इन दोनों ही विपन्न परिस्थितियों को बचाने के लिए उन्होंने अपना रक्त संस्था की नसों में प्रवेश करना उचित समझा और अपने परिवार की अनेक जिम्मेदारियों की, चलती हुई वकालत की, अपनी अस्वस्थता की, तपस्वी जीवन में उपस्थित होने वाली अगणित असुविधाओं की, परवा न करके जीवन उपलब्ध सभी आकर्षणों को लात मार कर गायत्री तपोभूमि में आ गये। गत नरमेधयज्ञ में आपने गायत्री माता को आत्मदान किया था। सच्चेदानी अपनी प्रतिज्ञा से मुकरते नहीं। जिस शरीर को दान कर चुके वह अब अपने किस काम का? माता के चरणों पर अर्पित की हुई देही को सब प्रकार के मोह बधन काट कर माता के चरणों पर रख दिया है। वकील के जीवन में उपलब्ध रहने वाली अनेक सुख सुविधाओं को त्याग कर अब तपस्या का कठोर साध्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। धर्मोपदेशक तैयार करने वाले तपोभूमि में संस्कृति विद्यालय के प्रिंसिपल एवं सञ्चालक का गुरुतर भार आपके कंधों पर डाल दिया गया है।

(२) श्री सत्यभक्त जी

हिन्दी साहित्य के महारथी, उच्च कोटि के दर्जनों ग्रंथों के प्रणेता, प्रणवीर, चाँद, भविष्य, सत, मजदूर समाचार, ज्ञान आदि अनेकों सार्वजनिक मासिक दैनिक पत्रों के भूतपूर्व सम्पादक, सत्य प्रेस के मालिक, उद्भट विचारक श्री सत्यभक्त

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के नाम से समस्त हिंदी जगत भली भाँति परिचित हैं। अखंड-ज्योति के पाठक भी उनके लेखों का रसा स्वादन समय-समय पर करते रहे हैं। श्री० सत्यभक्त जी, तर्क, विवेक और बुद्धिवाद की मूर्तिमान प्रतिमा हैं। आपका उज्वल चरित्र और असाधारण कर्मनिष्ठा सादा जीवन एवं उच्च विचार का परिपूर्ण समन्वय देखते ही बनता है।

लगभग १६ वर्षों से श्री० सत्यभक्त जी का अखंड-ज्योति तथा उसके संचालकों से घनिष्ट संबंध है। यहाँ की कार्यपद्धति, निस्पृहता एवं सत्यनिष्ठा से वे आरम्भ के दिन जितने प्रभावित हुए संपर्क बढ़ते जाने पर वे उससे दिन-दिन अधिक ही प्रभावित होते गये और अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि अलग काम करते रहने की अपेक्षा अखंड-ज्योति के महान मिशन से घुल जाना और अपनी शक्तियों को इस संस्था के लिए समर्पित करके अधिक लोकहित संपादन किया जा सकता है। नाम के अनुरूप उनकी सत्यनिष्ठ-आत्मा ने यही निश्चय किया कि संसार में सत्य सिद्धांतों की अभिवृद्धि के लिए गायत्री तपोभूमि के मिशन की सेवा करनी चाहिए। इस निश्चय को उन्होंने चरितार्थ कर ही डाला। अपना विशाल पुस्तक व्यवसाय, साहित्य रचना से होने वाली भारी आजीविका, सुव्यवस्थित निज का सतयुग प्रेस सभी को छिन्न-भिन्न करके अपरिग्रही वानप्रस्थ साधु की भाँति गायत्री तपोभूमि में अपनी धर्मपत्नी समेत आ गये हैं। अपनी विचारकता और साहित्य सृजन शक्ति द्वारा इस संस्था की सेवा में दिन रात जुटे रहते हैं।

(३) श्री०जी०श्री कण्ठम्

दक्षिण भारत मैसूर राज्य के २४ वर्षीय तेजस्वी ब्राह्मण कुमर निवासी श्री० जी श्रीकण्ठम् एक वेदपाठी परिवार के सुपुत्र हैं। आपके पूर्वज तथा वर्तमान कुटुम्बी वेदों के प्रकाण्ड पंडित हैं। श्री० जी. श्री कंठम् को बचपन से ही संस्कृत धर्मशास्त्र एवं वेद की शिक्षा मिली। समग्र सामवेद उन्हें सस्वर कंठाग्र है। बिना पुस्तक खोले वे पूरा सामवेद सुना सकते हैं। इनका परिवार सब प्रकार सुसम्पन्न एवं इस प्रदेश में सर्वत्र सुविख्यात है।

दो वर्ष पूर्व कुछ समय के लिए वे गायत्री तपोभूमि में कुछ समय निवास करने तथा सांस्कृतिक विषयों की शिक्षा प्राप्त करने आये थे। उन्हें थोड़े ही दिन इधर ठहरना था, पर यहाँ के वातावरण से उन्हें जो प्रकाश दिखाई पड़ा, उससे उनकी आत्मा आनंद विभोर हो गई और अपना जीवन इस संस्था में ही घुला डालने की बात मन ही मन सोचने लगे। जैसे-जैसे यहाँ की विचारधारा, कार्यशाली एवं वास्तविकता को गहराई से समझते गये वैसे ही वैसे इन विचारों में अधिक परिपक्वता आती गई। अब के तपोभूमि को ही अपना घर मान कर यहाँ रहने लगे हैं और यहाँ की व्यवस्था संभालते हैं आगे अधिक योग्यता एवं शिक्षा का संपादन करके भारतीय संस्कृति की ठोस सेवा करने का इनका विचार है।

(४) ब्रह्मचारी योगेन्द्र जी

फतेहपुर जिले के एक ग्राम में खाते पीते, भरे पूरे जमींदार परिवार में पैदा हुए। घर में किसी बात की कमी न थी। हाई स्कूल की पढ़ाई को अधूरी छोड़कर वे सत्य को खोज एवं आत्म कल्याण का मार्ग ढूँढ़ने के लिए निकल पड़े। अनेक संत महात्माओं का सत्संग करने एवं योग साधना के लिए अनेक स्थानों में भ्रमण करने रहे। चित्रकूट में रह कर तप किया। अन्त में उनकी आत्मा यही पुकारी कि सच्ची साधुता एकान्त भजन में नहीं वरन् आत्म शुद्धि के साथ साथ लोक सेवा करने में ही है। साधु बाबाजियों में इस लक्ष्य का अभाव देखकर वे उधर से बड़े निराश हुए और अन्त में ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उन्हें अपनी अन्तरात्मा के अनुरूप गायत्री तपोभूमि मिल गई। अब वे लगभग दो वर्ष से तपोभूमि में निवास करते हैं। और अपनी साधना के सथ साथ यहाँ के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिशन को देश भर में फैलाने के लिए संगीत प्रवचन आदि की योग्यता बढ़ाने में संलग्न हैं।

(५) श्री० रामलाल जी

विन्दकी–फतेहपुर निवासी श्री० रामलाल जी अपने व्यापारी परिवार के प्रमुख हैं। घर का काम काज व्यापार धन्धा भाई भतीजों पर छोड़कर सुर दुर्लभ मानव शरीर को धन्य बनाने के लिए, आत्म-कल्याण और लोक सेवा की साधना के लिए तपो-भूमि में आये हैं। आयुर्वेद तथा होम्योपैथी के आप अच्छे विद्वान हैं छात्रों को चिकित्साशास्त्र का शिक्षण देने तथा चिकित्सालय चलाने की जिम्मेदारी आपने अपने ऊपर उठाई हुई है।

(६) ब्रह्मचारी कृपा शङ्कर जी त्रिपाठी

हँसवर (फैजाबाद) निवासी यह ब्रह्मचारी जी गृहस्थ जीवन के जिम्मेदारी परेशानी और आपत्तियों से आरम्भ से ही सजग हैं। विद्याध्ययन करने के साथ ही उनके मन में परमार्थ के बीजांकुर उगे और अपने खेत हार कुटुम्बियों को सौंप कर आत्म कल्याण की खोज में निकल पड़े। अनेक स्थानों पर विद्याध्ययन, सत्संग, साधना, समाज सेवा आदि का कार्य करते रहे। बाराबंकी में एक संस्कृत पाठ-शाला स्थापित की अलावलपुर में एक स्कूल स्थापित किया। अब अपनी अभिरुचि के अनुरूप गायत्री तपोभूमि का कार्यक्रम देखकर यहीं निवास कर रहे हैं। साधना के अतिरिक्त ज्ञान संग्रह और ज्ञान दान में आपकी प्रधान रुचि है।

(७) ब्रह्मचारी लक्ष्मी नारायण जी

साठ वर्षीय जटाजूट धारी वयोवृद्ध पं० लक्ष्मी-नारायण जी ब्रह्मचारी परम नैष्ठिक गायत्री उपासक है। रात को दो बजे उठकर नित्य कर्म से निवृत्त गायत्री माता के मन्दिर की सफाई, शोभा, पूजा, आरती आदि में लगे रहना, दर्शनार्थियों को चरणा-मृत देना, उपासना का महत्व बताना उनका नित्य कर्म है। शिक्षा उनकी अधिक नहीं पर सज्जनता और कर्तव्य परायणता में वे सुशिक्षितों को मीलों पीछे छोड़ चुके हैं। पुजारी लोग आमतौर से पूजा के पैसे तथा भोग प्रसाद की चीजें हड़प जाने में प्रसिद्ध होते हैं। ब्रह्मचारी लक्ष्मी नारायण जी उनके लिए एक आदर्श है। वे न तो वेतन लेते हैं और न चढ़ौती के पैसों में गड़बड़ी करते हैं। एक एक पाई खजाने में जमा करते हैं। कोई भक्त भोग प्रसाद चढ़ाये तो उसे तुरन्त सब आश्रम वासियों को बांट देते हैं। उनकी इस उदारता एवं निस्वार्थता से सभी लोग उनके प्रशंसक हैं।

(८) महात्मा ब्रह्मस्वरूप जी महाराज

महात्मा श्री ब्रह्मस्वरूप जी महाराज, का त्याग और वैराग्य जहाँ आदर्श है वहाँ उनकी धर्म प्रचार संबंधी लगन भी भूरि भूरि प्रशंसा के योग्य है। उन्हें दिन रात गायत्री प्रचार की धुनि रहती है। अलीगढ़, बुलन्दशहर और मुरादाबाद जिलों में उन्होंने अनेकों गायत्री परिवार स्थापित किये हैं और यज्ञ कराये हैं। आज कल अधिकांश साधु बाबाजी अपना पेट पालने और 'सीताराम बचा' करने तक सीमित रहते हैं, वहाँ महात्मा ब्रह्मस्वरूप जी धर्म प्रचार और लोक शिक्षण की प्राचीन ऋषि परम्परा को पुनर्जीवित कर रहे हैं। यदि इन महात्मा जी का अनुकरण करने वाले सौ पचास साधु सन्त भी निकल आवें तो देश की काया ही पलट सकती है। इन महात्मा जी के उपदेश से हजारों व्यक्ति गायत्री उपासना में लगे हैं और आशा की जाती है कि भविष्य में सहस्रों नर नारियों के अन्तः करणों में धर्म के बीज बोने में सफल होगी। आज भी ब्रह्मस्वरूप जी जैसे कर्मयोगी महात्माओं की देश को भारी आवश्यकता है। गायत्री तपोभूमि पर महात्मा जी का अत्यन्त स्नेह है और समय समय पर यहाँ पधारने और निवास करने की कृपा करते रहते हैं।

(९) तपस्विनी विद्यावती

यह ४२ वर्षीय तप और संयम की साक्षात् मूर्ति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पूर्व जन्मों के संचित ऋषि संस्कार लेकर इस पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई है। प्रारंभ से ही इनके रोम-रोम में धर्म की हिलोरें उठतीं। घर वालों से विवाह न करने के लिए दोटूक इनकार कर दिया और अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत को बड़ी शान के साथ निबाह लाई। जीवन के प्रारंभिक दिनों में वेदान्त सिद्धान्तों का इन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। स्वयं वेदान्त विचारों में मग्न रहना और दूसरों को उसी की शिक्षा देना इनका प्रधान मार्ग था। पर जब आचार्य जी से सम्पर्क हुआ तो उनने समझा कि भजन के साथ-साथ लोक सेवा भी आत्मकल्याण का अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य है। तब से वे बड़ी लगन और धुनि के साथ जन-साधारण को विशेषतया महिला समाज को सन्मार्ग पर लगाने में जी जान से जुटी हुई हैं। घर घर जाकर महिलाओं को समझाना और उनकी अनेकों बुराइयों को छुड़वाना तथा कुछ सद्गुणों की प्रतिज्ञा देना उनका नित्यकर्म रहता है। बहुत दिन तक यह व्रत रहा कि रोज दस नये गायत्री उपासक बना लेने पर ही अन्न जल ग्रहण करना। बिजनौर में इनके प्रयत्न से दर्जनों बड़े गायत्री यज्ञ हुए हैं। पक्की यज्ञशाला बनी है। ७०० नैष्ठिक उपासक हैं। लुधियाना, पठान कोट, रोहतक, दिल्ली, देवबंद, मुहम्मद पुर आदि अनेकों जगह गायत्री परिवारों की स्थापना की है। नरमेध में आत्मदान करके यह वीरव्रती तपस्विनी अपने दुर्बल स्वास्थ्य की परवा न करते हुए अब शेष जीवन में अगणित गायत्री उपासक उपासिकाऐं बनाने में बड़े उत्साह और साहस पूर्वक कटिबद्ध हो रही है। ऐसी वीर व्रती देवियों को सच्चे अर्थों में भारत की विभूति कहा जा सकता है।

(१०) श्री० मगनीदेवी शर्मा

उत्साह और कर्तव्य परायणता की प्रतिमा मगनी देवी बिजनौर के गर्ल्स स्कूल में अध्यापका हैं। यों इनका सारा जीवन सेवा और सत्कार्यों में बीता है पर जब मथुरा पूर्णाहुति में आईं तो जीवन को सत्कर्म के लिए उत्सर्ग करने की प्रेरणा उन की अन्तरात्मा में से फूट पड़ी और नरमेध में आत्मदान करके अपना सर्वस्व राष्ट्र में सद्बुद्धि उत्पन्न करने की सेवा के लिए समर्पण कर दिया। गत एक वर्ष से वे बिजनौर क्षेत्र में बड़े उत्साहपूर्वक गायत्री प्रचार एवं संगठन का कार्य कर रही हैं। अब इसी १२ मई से पेन्शन लेकर वे एक प्रकार का सन्यास धारण करेंगी और शेष जीवन का एक भी क्षण निजी कार्यों में न लगाकर निरन्तर गायत्री माता के उद्देश्यों का अलख घर-घर जगाने के लिए जुट जावेंगी।

(११) श्री० रतनकुमारी देवी

नेपाली परिवार की सम्भ्रान्त महिला श्रीमती—रतनकुमारी देवी अपने भाई श्री बेनीप्रसाद एवं पुत्री चि० मोना के साथ सांस्कृतिक शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। उस प्रान्त के पुरुषों में बहु विवाह प्रथा होने के कारण उनके पति की एक और भी धर्मपत्नी है। इस लिए उनके ऊपर परिवार की विशेष जिम्मेदारी नहीं है। उनका लक्ष सदा से बहुत ऊँचा रहा है और साधारण नरनारियों की भांति पेट भरने में ही जीवन समाप्त नहीं करना चाहती। साधना और सेवा में उनकी अभिरुचि असाधारण है। सौभाग्य की ही बात है कि उनके पितृकुल और पतिकुल उनकी इस विचारधारा में बाधक नहीं वरन् सहायक हैं। आम-तौर से संकुचित मनोवृत्ति के लोग अपने घर की स्त्रियों को घर से बाहर जाने में अपनी 'नाक-कटना' मानते हैं।

श्री० रतनकुमारी बहुत समय से अखंड ज्योति पढ़ती हैं। वे उस प्रदेश के अनेक गायत्री उपासकों के साथ विशद् गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के समय आई थीं। यहाँ की अत्यन्त महान परम्पराओं से प्रभावित होकर वे अपना आत्मदान करना चाहती थी पर बिना पतिकुल और पितृकुल की स्वीकृति के उन्हें वैसा नहीं करने दिया गया। फिर भी आत्मा के सच्चे संकल्प पर किसी का प्रतिबन्ध चल नहीं सका। उस समय उन्हें वापिस जाना पड़ा। अब अपने भाई और कन्या के साथ पुनः आई हैं और अध्ययन कर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रही है। उनका विचार माता भगवती देवी के साथ नारी जाति की सांस्कृतिक सेवा के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने का है।

१२—श्री० बेनी प्रसाद

रेनोक (सिक्कम) बंगाल के अध्यापक श्री० बेनी प्रसाद अपना अध्यापन कार्य छोड़कर तपोभूमि की सांस्कृतिक शिक्षा ग्रहण करने अपनी बहिन श्री रत्नेश कुमारी और भानजी चि० मीना के साथ तपोभूमि में आये हैं। बड़े उत्साह और मनोयोग के साथ अध्ययन चला रहे हैं। बंगाल, नैपाल, आसाम आदि भारत के पूर्वीय प्रांतों में इनके द्वारा गायत्री माताका संदेश पहुँचेगा ऐसी आशा है।

१३—श्री० वृजनारायण द्विवेदी

उरई (जालौन) का यह मेधावी छात्र बड़ा उत्साही और भावुक है। यहाँ होते रहने वाले प्रवचनों और कार्यक्रमों से इसका अन्तरात्मा में भारी उमंगे उठती हैं। यह छात्र निरन्तर अपने संकल्प प्रकट करता है कि मैं भविष्य में अपना सारा जीवन ब्राह्मण परम्परा का आदर्श उपस्थित करने के लिए उत्सर्ग करूंगा।

१४—श्री० चमनलाल सूरी

बरेली निवासी यह कर्मवीर युवक अपनी नौकरी घरेलू काम, अध्ययन उपासना आदि से बचा कर गायत्री प्रचार के लिए इतना अधिक कार्य किस प्रकार कर पाता है इससे सभी को आश्चर्य होता है। मनुष्य के भीतर लगन और आग हो तो वह कितना ही जिम्मेदारियाँ और व्यस्त कार्यक्रमों से लदा होने पर भी कितना अधिक कार्य कर सकता है यह बात सूरी जी भाषणों से नहीं अपने कार्यों से प्रकट करते करते है। बरेली में घर-घर घूम कर इस अकेले धुन के धनी व्यक्ति ने ८०० से अधिक नैष्ठिक गायत्री उपासक बनाये हैं। आये दिन बड़े २ यज्ञों का आयोजन मुहल्ले-मुहल्ले में कराते रहते हैं। मनों गायत्री साहित्य लोगों के गले उतार दिया। सूरी जी की धर्मपत्नी सुलोचना भी अपने पति की तरह ही धर्म प्राण है उसने "गायत्री से समाज सुधार" और "यज्ञ ही क्यों करना चाहिए" यह दो पुस्तकें निर्माणकी है तथा अपने पति के गायत्रीप्रचार संबंधी कार्यों में सदा सहायक रहती है। गायत्री तपोभूमि में यह दम्पति कुछ समय रहे थे। विचार विनिमय के पश्चात् इनकी अन्तरात्मा ने यह मान लिया है कि वर्तमान परिस्थितियों से गायत्री और यज्ञ प्रचार से बढ़कर और कोई जप तप हो नहीं सकता। इस विश्वास को केवल विचारों तक ही सीमित न रख कर, कार्य रूप में दिन रात जुटे रहने वाले यह कर्मवीर युवक चि० सूरी गायत्री परिवार के अन्यसदस्योंके स मने अपना एक अनोखा आदर्श उपस्थित करता है।

१५—श्री० ज्वालाप्रसाद शर्मा

नगला मेवा अलीगढ़ निवासी श्री० ज्वालाप्रसाद जी तपोभूमि के सांस्कृतिक विद्यालय में लगभग ८ मास से पढ़ रहे हैं। यहाँ की विद्या पूर्ण करने के पश्चात् इनका विचार अपने क्षेत्र में गायत्री प्रचार में लगने का है। आपका सारा ही परिवार गायत्री माता का परम उपासक है।

१६—बाबा रघुनाथदास जी

निवार नदी के तट परतप करने वाले महात्मा रघुनाथ दास जी ने अभी गतमास ११ कुंडों में यज्ञ कराया था जिसके समाचार अखंड-ज्योति में छप चुके हैं। जहाँ यज्ञ हुआ था उस भूमि पर बाबा जी की प्रेरणा से गायत्री मंदिर, यज्ञशाला, बिजली पम्प नल बन कर तैयार हो गया है। इस केन्द्र से आसपास के क्षेत्र में गायत्री प्रचार का कार्य उत्साह पूर्वक होगा। बाबा जी की प्रेरणा से पदुवा ग्राम में एक बड़ा गायत्री यज्ञ फिर होने वाला है बाबाजी का उत्साह गायत्री माता की महिमा बढ़ाने में लगने से उस क्षेत्र में बहुत धर्म प्रचार होने की आशा है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

देशव्यापी नवरात्रि आयोजन

निवार (कटनी) में नवरात्रि में गायत्री चालीसा के २५० पाठ और ५००० आहुतियों का हवन किया। गायत्री माता की कृपा से मैं नास्तिक से आस्तिक बन गया हूँ। —राम गोपाल श्रीवास्तव

झांसी में नवरात्रि में यज्ञानुष्ठान सुसज्जित झाँकी के सामने किया गया। महिलाओं द्वारा प्रतिदिन हारमोनियम पर गायत्री चालीसा का गायन पाठ होता रहा। अन्तिम दिन तीन वेदियों पर सामूहिक यज्ञ हुए। एक हजार गायत्री चालीसा बाँटें गये। ता० १७, १८, व १९ मई १९५७ को झाँसी में गायत्री महायज्ञ होगा। जिसमें पूज्य आचार्य जी भी भाग लेंगे। —बालकृष्ण अग्रवाल

दिगौड़ा (टीकमगढ़) के गायत्री परिवार के २० व्यक्तियों ने मिलकर सामूहिक जप, पाठ, हवन, व्रत किया। नौमी की पूर्णाहुति को देखने देहातों से भी जन समूह एकत्रित हुआ। कन्याओं को भोजन कराया गया। यह समारोह गायत्री मंदिर दिगौड़ा में हुआ जो बड़ा ही रमणीक स्थान है।

—वैजनाथ प्रसाद

राजपुर (निमाड़) में गायत्री परिवार के उपासकों ने गायत्री जप के अनुष्ठान किये। एक सदस्य ने गायत्री चालीसा के २४० और एक महिला ने १०८ पाठ किये। गायत्री चालीसा वितरण किये गये। —नाथूराम सोलंकी

रोहीशाला (सौराष्ट्र) में गायत्री परिवार के सदस्यों ने अनुष्ठान किया। यज्ञ में गाँव भर के लोग शामिल हुए। ब्रह्मभोज भी हुआ। इससे गायत्री-प्रचार को बहुत बल मिला है।

—चन्द्रकान्त मूलशङ्कर व्यास

रिसिया (बहराइच) में नवरात्रि में गायत्री जप और चालीसा का पाठ बड़े उत्साह से किया गया। बालिकाओं को भोजन कराया और सब लोगों को गायत्री चालीसा बाँटे गये। रामायण, गीता, उपनिषद आदि पर उपदेश भी हुये।

—कन्हैयालाल श्रीवास्तव

बिछियवां (इलाहाबाद) गायत्री परिवार के सदस्यों ने सवालाख जप, ६३३६ मंत्रलेखन, १२१५ चालीसा का पाठ और ४२१२ आहुतियों का अनुष्ठान किया। ४०० चालीसा वितरण किये गये। अनुष्ठान में मुझे सूर्य के प्रकाश के से दर्शन होते रहे और उसके बीच में माता की मूर्ति भी दिखलाई पड़ती थी। —रामसिंह

पाडल्या (निमाड़) की शाखा की तरफ से ११ हजार जप और १६०० आहुतियों का अनुष्ठान किया गया। —रामेश्वर पंढरीलाल अत्रे

कटाहन (मुरेना) में सामूहिक जप और हवन बड़ी धूमधाम से किया गया। ता० ९ को ३३ कन्या और ५ साधुओं को भोजन कराया गया है। उत्सव गायन वादन के साथ बड़े समारोह से हुआ।

—रामस्वरूप शर्मा

राठ (हमीरपुर) में दो स्थानों पर सामूहिक अनुष्ठान किये गये और कुछ सज्जनों ने घर पर जप किये। सामूहिक यज्ञों में स्थानीय जनता भी बड़ी संख्या में शामिल हुई। कुल मिला कर २४ हजार आहुतियों का हवन हुआ। पं० श्याम सुन्दर जी 'बादल' का बड़ा सरगर्भित प्रवचन हुआ। एक छोटा गायत्री मंदिर बनाने पर विचार किया गया।

—राम स्वरूप चचौंदिया

हमलौटा (झाँसी) में नवरात्रि में प्रतिदिन यज्ञ तथा गायत्री जप और २८ पाठ गायत्री चालीसा अनुष्ठान किया गया।

—देवकीनन्दन विश्वकर्मा

दमदम (शाजापुर) में सामूहिक हवन किया गया। घूरालाल जी ने १०८, यागीलाल वर्मा ने २४० और राजमल वर्मा ने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

१०८ सेवाराम शर्मा ने १०८, रामलाल वर्मा ने१०८ पाठ गायत्री चालीसा के किये। —रामप्रसाद शर्मा

बुलन्दशहर के गायत्री सदस्यों ने २४ हजार मंत्रों का लघु अनुष्ठान किया। ता० ६ को सामूहिक हवन भी किया गया। श्रीमती स्वर्णलता देवी ने जप के साथ गायत्री चालीसा के १०८ पाठ भी किये। साधनाकाल एक विशेष अनुभव यह हुआ कि घण्टे की सी आवाज प्रातःकाल ही उठा देती थी और सूर्योदय के समय तक कानों में गूँजती रहती थी।

—हृदय प्रकाश

जोबट (झाबुआ) में नवरात्रि का अनुष्ठान नौ दिन तक किया गया। अन्तिम दिन ३५००आहुतियों का हवन किया गया। —चन्द्रशेखर चतुर्वेदी

खरियार (कालाहांडी-उड़ीसा) में नवरात्रि के अनुष्ठान में जप, हवन गायत्री चालीसा का पाठ,भगवद्गीता का पाठ किया गया। कन्याओं को भोजन कराया गया। —प्रतापचन्द प्रधान

झारडेश्वर महादेव (झाबुआ) में नवरात्रि के अनुष्ठान में ६ दिन बराबर प्रभातफेरी निकलती रही जिससे बड़ा उत्साहदायक वातावरण रहा। कुल ४८५१ आहुतियाँ दी गईं। जप, पाठ और २४०० मंत्रलेखन हुआ। गायत्री चालीसा वितरण किये गये। इसका श्रेय संत जगदीश भारती जी को विशेष रूप से है। पाठक राम नारायण पुरोहित आदि सज्जनों का कार्य भी सराहनीय रहा।

—एक प्रत्यक्षदर्शी

खेडी (बरार) की गायत्री शाखा के १४सदस्यों में से प्रत्येक ने २४ हजार जप और दशांस हवन किया। २५ कन्याओं और २० विद्यार्थियों को भोजन कराया गया। —किसन जाणु वाघमारे

कोयला (कोटा) में सभी सदस्यों ने लघु अनुष्ठान किये और उसकी पूर्णाहुति बड़े समारोह से हुई। गायत्री चालीसा प्रसाद स्वरूप वितरण किये गये। यहाँ शुरू में गायत्री-परिवार के दस सदस्य थे जिनकी संख्या अब ३२ तक पहुँच गई है जो प्रति रविवार को ६०० से १००० तक आहुतियों का हवन करते रहते हैं। —सरदारमल गौतम

चींचौड़ा (देतूज) में १२ सदस्यों ने ३ लाख १८ हजार जप और १०८ गायत्री चालीसा का पाठ किया और बड़ी धूमधाम से गायत्री माता का उत्सव मनाया। —कुञ्जीलाल बाईकट

कैमोर (जबलपुर) में श्री० मदनसेन तियारी के यहाँ सामूहिक अनुष्ठान हुआ। प्रतिदिन दो घण्टा रोज हवन भी किया जाता था। पूर्णाहुति के दिन १०० नर-नारियों से भी अधिक ने यज्ञ में भाग लिया और कई सौ दर्शक भी उपस्थित थे।

—गौतम बाबू

हरदुआ (अलीगढ़) में गायत्री अनुष्ठान नौ दिन तक निर्विघ्न समाप्त हो गया। नवमी को हवन और कन्याओं को भोजन कराया गया।

—रामसेवक बहरे

सेगाँव (निमाड़) में गायत्री प्रचार के फल स्वरूप कई स्थानों पर जप और हवन किया गया। नवमी के दिन सामूहिक रूप से भी जप और हवन का आयोजन किया। एक सामूहिक हवन। विश्वनाथ जी के यहाँ भी पुरुषोत्तम महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। एक-दो बार ऐसे सामूहिक रूप से होने पर यहाँ शाखा की स्थापना भली प्रकार हो जायगी। —पेंढरीनाथ चतुर्वेदी

डेढ़रोटा (सांबरकांठा, बम्बई) में नवरात्रि का अनुष्ठान उत्साहपूर्वक का किया गया।

—किशोरसिंह जी दौलतसिंह झाला

बिहटा (पटना) में २४०० हवन और गायत्री चालीसा के २४० पाठ का अनुष्ठान किया गया। २४२० संत्र लेखन भी किया गया।

—रामप्रीत गुप्ता

चाँपा (बिलासपुर) में सामूहिक अनुष्ठान किया गया और पूर्णाहुति के पश्चात् लगभग २०० कन्याओं को भोजन कराया गया।

—वैद्य पुनीराम

कसरावद (निमाड़) के गायत्री परिवार के पन्द्रह सदस्यों ने तीन लाख ६० हजार जप और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

३६०० आहुतियों से यज्ञ किया। गायत्री चालीसा के २८४४ पाठ किये गये। प्रत्येक सदस्य ने तन, मन, धन से सहयोग किया।

—संतोषचन्द्र व्यास

बिलासपुर में ४० व्यक्तियों ने नवरात्रि की सामूहिक साधना में भाग लिया। अन्तिम दिन ६६०० नियमित आहुतियों के अतिरिक्त उपस्थति सभी व्यक्तियों को २४-२४ आहुतियाँ देने का अवसर दिया गया। लाउड स्पीकरों मे आधा नगर यज्ञ ध्वनि से गूँजता रहा। —सुधाराम महाजन

भिन्ड (ग्वालियर) में अष्टमी को २४ घंटे का अखंड कीर्तन व रामायण पाठ हुये। नवमी को यज्ञ हुआ। जिसमें ४००० आहुतियों दी गईं। जनता ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर यज्ञ भगवान के दर्शन किये। दूसरा गायत्री यज्ञ ११ अप्रेल को रामदासजी के गुप्ता के यहाँ हुआ जिसमें समस्त गायत्री परिवार ने भाग लिया और ३६०० आहुतियाँ दी गईं। इन यज्ञों से जनता में गायत्री-प्रचार बढ़ रहा है। श्री सत्यदेव जी शास्त्री का प्रयत्न इस दिशा में सराहनीय है। —केदारनाथ गुप्त

बड़ोरा (कोटा) में वृजमोहन जी, कल्याण प्रसाद जी, कस्तूर चन्द्र जी आदि ७ सदस्यों के प्रयत्न से सवालक्ष गायत्री जप और आहुतियों का हवन हुआ। —नाथूलाल दाधीच

छालियाँ (खरगोन) में चार सदस्यों ने २४ हजार जप के अनुष्ठान हुए। दो सदस्यों ने गायत्री चालीसा का पाठ किया।

—राधेश्याम काशीनाथ शर्मा

धमतरी (रायपुर) में के उपासकों ने सामूहिक अनुष्ठान किया और हवन भी किया गया, जिस में आस-पास के बहुसंख्यक व्यक्तियों ने भाग लिया। कन्याओं को भोजन कराया गया। —जेठालाल

बाँदा (यू०पी०) में गायत्री का सामूहिक अनुष्ठान और गायत्री चालीसा का नित्य प्रति २७ पाठ हुए। नवमी को हवन और ब्राह्मण भोजन भी सम्पन्न हुआ। —सुखदयाल निगम

लखनऊ में सामूहिक हवन जप और २४०गायत्री चालीसा का पाठ का अनुष्ठान सानन्द पूरा होगया। पूर्णाहुति के अवसर पर १५० व्यक्तियों का समूह था। लाउड स्पीकर के लग जाने से और भी प्रभावशाली रहा। —मदनमोहन शुक्ल

रायपुर (मध्य-प्रदेश) में ५२८०० जप तथा दशांश हवन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। ३५६ पाठ गायत्री चालीसा के किये गये। कई महिलाओं ने भी इसमें भाग लिया।

—हरीशङ्कर अग्रवाल

नरयावली (सागर) में २४००० का लघु अनुष्ठान किया गया। यहाँ के सब सदस्य एक माला प्रतिदिन जप करते हैं। अब चन्दा करके गायत्री पुस्तकालय स्थापित किया जायगा।

—नारायण प्रसाद रावत

इचाक (हजारीबाग) में ७२००० जप का अनुष्ठान किया गया। नवमी को हवन तथा कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। २४० गायत्री चालीसा जनता में वितरण किये गये।

—बद्रीनाथ तिवारी

बागोद (निमाड़) में मंत्र लेखन का अनुष्ठान किया गया और ६ ता० को सब सदस्यों ने हवन भी किया। श्री लक्ष्मन प्रसाद वर्मा का अनुष्ठान भी पूर्ण हो चुका है।

—रतनलाल सक्सेना

जावरा (न०प्र०) में गायत्री परिवार ने सवालक्ष जप और दशांश हवन का अनुष्ठान किया। साथ में रामायण का नवाह्निन पारायण भी हुआ।

—वंशीधर शर्मा

सतना (रीवां) में गायत्री चालीसाका सामूहिक अनुष्ठान किया गया और नवमीके ब्रह्मभोजके स्थान पर गायत्री चालीसा का ही वितरण किया गया।

—मुकुन्दलाल 'मुकुल'

बरेली (यू०पी०) में देवी जी के मन्दिर में गायत्री यज्ञ किया गया। जिसमें ५ लाख जप, ४८ हजार आहुतियाँ और ४०० गायत्री चालीसा का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पाठ सामूहिक रूप से किया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर मझला कुआ (शाहजहाँपुर) से स्वामी केवलानन्दजी पधारे थे। पूर्णाहुति में गोला और नारियल बहुत चढ़ाये गये। —चिम्मनलाल शूरी

उमरिया (म० प्र०) में सामूहिक अनुष्ठान में १,१६००० जप, ५५६१ आहुतियाँ और ८७४ गायत्री चालीसा के पाठ किये गये। यज्ञमंडप खूब सजाया गया था, कीर्तन भी हुआ और कन्याओं को भोजन कराया गया। गायत्री चालीसा बाँटा गया।

—स्वामी गणेशप्रसाद

अलीगढ़ (यू०पी०) में नवमी के दिन ११ हवनकुण्डों में २७५०० आहुतियों का हवन किया गया। जिसमें लगभग १०० स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। मोहन भोग और खीर की भी आहुतियाँ दी गईं। सभी उपस्थित जनों ने हवन करने में भाग लिया। ५०० गायत्री चालीसा बांटे। कन्याओं को भोजन कराया गया। —श्रीराम पाण्डेय

धरणगाँव (पूर्वखानदेश) में २४००० जप तथा २४० गायत्री चालीसा के पाठ का अनुष्ठान किया गया। साथ में सात दिन तक 'अखंड नाम-सप्ताह' भी मनाया गया। —कृष्णदास भाटिया

शाहजहाँपुर (यू०पी०) में पाँच सदस्यों ने लघु अनुष्ठान किये। सोमवार को श्री शमसेर बहादुर के यहाँ यज्ञ हुआ। संध्या के समय श्री रामसिंह जी के स्थान पर एक हजार आहुतियों का हवन किया गया। १५ हजार मंत्र लिख कर शाखा कार्यालय में आ गये हैं। —रंगेलाल शुक्ल

खामगाँव (बरार) के नागझरी तीर्थ में सामूहिक जप और गायत्री की आहुतियों का हवन किया गया। २४० गायत्री चालीसा वितरण किया गया।

—कन्हैयालाल तिवारी

लश्कर (ग्वालियर) में बलवन्तगढ़ देवी जी के मन्दिर में सामूहिक जप किया गया। ५० ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। इस समारोह का श्रेय पं० बद्री प्रसाद शर्मा को है वे अब एक बहुत बड़ा यज्ञ कराने की योजना कर रहे हैं। —मुरलीधर डंडौतिया

खूँटी (राँची) में गायत्री सदस्यों ने १-१ हजार आहुतियों के हवन किये। सामूहिक प्रीतिभोज और ब्रह्मभोज भी हुआ। —देवेन्द्रनाथ साह

नागपुर के तेलनखेड़ी स्थित "कल्याणेश्वर महादेव" के मन्दिर में नागपुर गायत्री शाखा के सदस्यों ने सामूहिक हवन किया। दस सदस्यों ने नवरात्रि में लघु अनुष्ठान भी किये। —कृपाशङ्कर

टीकमगढ़ (बुन्देलखंड) में कुन्डेश्वर मन्दिर पर लगभग १०० व्यक्तियों ने ७ ता० को सामूहिक हवन किया जिसका श्रेय श्रीदेवीदत्तजी पांडेय 'काका' को है। ८ ता० को एक अन्य सदस्य श्रीराधाचरणजी खरे के घर पर हवन हुआ। —जगतराम पस्तोरे

एरंडा (राँची) नवमी को गायत्री शाखा के सदस्यों का सामूहिक हवन हुआ जिसमें एक हजार आहुतियाँ दी गईं। सदस्यों ने जप भी पूरे किये।

—बनवारीलाल जायसवाल

आसिकपुर (मुंगेर) में गायत्री शाखा के सदस्यों ने सामूहिक जप व हवन किया जिसमें ४३२० आहुतियाँ दी गईं। मंत्र लेखन भी किया गया।

—राजपतिप्रसाद

सटई (बुन्देलखंड) में रामनवमी के दिन २४०० आहुतियाँ का यज्ञ किया गया। ता० ७ को धर्म फेरी की गई और गायत्री-उपासक सम्मेलन भी हुआ। २६६०१ गायत्री मंत्र भी लिखे जा चुके हैं।

—शिवप्रसाद शर्मा

जोधपुर (राजस्थान) में मंगला माताजी के मंदिर में १० सदस्यों ने २४-२४ हजार के लघु-अनुष्ठान किये। श्रीमद्भागवत का परायण व रामचरितमानस का २४ घन्टे का पाठ किया गया। अष्टमी को २४ हजार आहुतियों का हवन किया गया। भजन और कीर्तन भी बहुत उत्तम रहा। आगे के लिये सवालक्ष आहुतियों का यज्ञ करने का विचार किया जा रहा है। —कन्हैयालाल मिश्र

कांकणपुर (गोधरा) के गायत्री परिवार के कई-सदस्यों ने फलाहार पर रह कर २४ हजार जप व २४ सौ मंत्र लेखन के अनुष्ठान किये। शतांश का हवन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ा० १२ अप्रेल को किया गया। —लचुभाई मेहता

खलघाट (धार) में नवरात्रि का अनुष्ठान बड़े उत्साह से हुआ ; नौमी को २४ सौ आहुतियों का हवन व ब्राह्मण भोजन हुआ। प्रसाद में गायत्री-चालीसा और चित्र बांटे गये। गायत्री चालीसा का सामूहिक पाठ हारमोनियम पर बड़े सुन्दर-ढङ्ग से हुआ। —व्यंकटेश दयारामशर्मा

मुहम्मदाबाद-युसफपुर (गाजीपुर) में गायत्री-शाखा के १४ सदस्यों ने नित्य १० हजार जप किया। श्रीमोहनलालजी ने नित्य ५० माला का जप किया। नौमी को हवन किया गया।

—रामयत्नराम विशारद्

वरूर (निगाड़) में सवालक्ष जप, १६०० आहुति, १०१ चालीसा के पाठ और दस हजार मंत्र लेखन का अनुष्ठान हुआ। परिवार के १२ सदस्यों ने भाग लिया। समारोह में और भी जनता ने भाग लिया।

—मांगीलाल पटेल

नुनार (झाँसी) में ११ हजार आहुतियों का यज्ञ किया गया। बरुआ सागर में भी एक बड़ा यज्ञ हुआ जिसमें गायत्री महामंत्र की आहुतियाँ दी गईं।

सालिगराम पांडे

बहराइच (यू० पी०) में नवरात्रि का सामूहिक अनुष्ठान बड़े उत्साह और सुव्यवस्थित ढंग से हुआ। एक कमरे में गायत्री माता की मूर्ति बड़े सुन्दर ढंग से सजाई गई थी और वहीं १४ साधक निरन्तर बने रहते थे। विश्राम आदि की व्यवस्था भी वहीं थी। नौवे दिन पूर्णाहुति हुई। इस बार के अनुभव से सब को यह विश्वास हो गया कि व्यक्तिगत अनुष्ठान की अपेक्षा सामूहिक अनुष्ठान में अनौखा ही आनन्द मिलता है। —भगौतीलाल

बीसापुर (सुल्तानपुर) में ८६०७ जप और हवन का अनुष्ठान किया गया। शाखा का कार्य बढ़ रहा है। ६ नये सदस्य बने हैं। —हरिगोविन्द त्रिपाठी

जासलपुर (होशंगाबाद) में गायत्री परिवार के साधकों द्वारा सामूहिक जप और हवन हुआ। कीर्तन और रामायण पाठ भी हुये। —पु० आ० साक्षरै

खैरापलारी (सिवनी) में सामूहिक अनुष्ठान में ६५ हजार जप किये और गायत्री चालीसा का भी पाठ होता रहा। नवमी को दशांश हवन किया गया।

—रामनाथ शुक्ल

अजीतगढ़ (सीकर, राजस्थान) में सदस्यों ने लघु अनुष्ठान किये। जिनकी समाप्ति पर हवन भी हुए। यज्ञ में सभी सदस्यों ने भाग लिया। गायत्री चालीसा वितरण किये गये।

—जगदीशनारायण मिश्र

जहरा (बुलन्दशहर) में नवरात्रि भर लगातार हवन किया गया। कुछ ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत दिये गये। —स्वामी आत्मानन्द

फुलवरिया (चम्पारन) में २४ हजार आहुतियों का हवन गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया। शाखा के १० नये सदस्य बनाये गये हैं।

—रामकर्ण मिश्र

हस्वा (फतेहपुर) में सामूहिक जप और १६०० आहुति का हवन किया गया। संध्या समय कीर्तन भजन आदि होते रहे। —रामावतार शर्मा

कौंडागाँव (बस्तर) में गायत्री अनुष्ठान बड़े सज-धज और समारोह से किया गया जिसमें अनेकों माता ओं और भाइयों ने भाग लिया। —शिवराम कौशिक

सराय तरीन (मुरादाबाद) में नवरात्रि के अवसर पर पं० मिश्रीलालजी के यहाँ १० हजार आहुतियों का बड़ा हवन किया गया। जिसमें गायत्री परिवार के सभी सदस्यों ने भाग लिया। अन्य सदस्यों ने भी अपने यहाँ यज्ञ किये। —इच्छापूर्ण गौड

साले चौकारोड़ (नरसिंहपुर) में नवरात्रि भर एक माला रोज का सामूहिक हवन चलता रहा। भैयालालजी सोनी के घर पर सायंकाल को आरती और स्वाध्याय का क्रम जारी रहा।

—रामस्वरूप जैसवाल

डुमरिया (संथाल परगना) में कितने ही सदस्यों ने २४ हजार का अनुष्ठान किया। नवमी को सात सदस्यों ने २४० आहुत प्रति सदस्य के हिसाब से दीं।

—पद्माकर झा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

फुसावली (बदायूँ) में नवरात्रि का समारोह बड़े ही अच्छे ढङ्ग से चला। सब उपासकों को रात के ३ बजे उनके घरों पर जाकर उठा दिया जाता था और ४ बजे से कार्यक्रम आरम्भ हो जाता था। ६ ता० को हवन होने के पश्चात् नगर निवासियों को हलुवा का प्रसाद वितरण किया गया। गायत्री चालीसा, चित्र व छोटे सैट भी बांटे गये। कन्याओं को भोजन कराया गया। —गायत्री प्रसाद गुप्ता

सेरसा (झाँसी) के गायत्री परिवार के सदस्यों ने ८१ हजार जप तथा २० हजार आहुतियों का हवन किया गया। प्रातःकाल धर्म फेरी लगाई गई। कीर्तन, प्रवचन, कन्या भोजन और प्रसाद वितरण हुआ।

—नाथूराम तिवारी

मनसूरपुर (मुजफ्फर नगर) में गायत्री अनुष्ठान के लिये मंडप बड़े उच्च पैमाने पर सजाया गया था। नौ सदस्यों ने २४० हजार के हिसाब से जप किये। २० हजार आहुतियों का सामूहिक कृत्य भी किया गया। —बनारसीदत्त शर्मा

बिजनौर में महिला गायत्री मंडल की १६ सदस्याओं ने २६ माला रोज जप तथा चालीसा के ३ पाठ नित्य किये। ४८ बहिनों ने हवन में भाग लिया। —सरस्वती देवी गुप्ता

चीरीमीरी (सरगुजा) में २४ हजार जप और १२५० आहुतियों का अनुष्ठान किया गया। ब्रह्म-भोज में १० कन्याओं को भोजन कराया।

—नारायण जटा शंकर व्यास

जमशेदपुर (बिहार) में गायत्री शाखा के आठ सदस्यों ने अनुष्ठान किया जिसकी पूर्णाहुति एक हजार आहुतियों की बुधवार को की गई। नव-रात्री में दो दिन छोड़कर नित्य ही शाखा में हवन होता रहा। —ज्ञानचन्द

रानी मूँड़ा (काला हांडी) में सामूहिक यज्ञ और जप बड़े समारोह से हुआ। शाखा का काम अग्रसर हो रहा है। —हरिकृष्ण शर्मा

उरदई (जालौन) में सामूहिक जप, अखंड-ज्योति, ६ दिन का मौन, चालीसा पाठ, रामायण पाठ किया गया। नित्य प्रति हवन भी होता रहा। अन्तित दिन कन्याओं को भोजन कराया गया।

—शिवकान्ती देवी मिश्र

हसनपुर (मुरादाबाद) में प्रतिदिन गायत्री का सत्सङ्ग होता रहा और १०८ आहुतियों का यज्ञ भी नित्य किया गया। श्रीमती ज्ञानवती रस्तोगी ने विशेष अनुष्ठान किया। —रामानन्द रस्तोगी

बिसनगर (उत्तर गुजरात) में ५ साधकों ने २४-२४ हजार का अनुष्ठान किया और ८ ता० को २४०० आहुतियों का सामूहिक यज्ञ किया।

—चन्द्रकान्त म० याज्ञिक

अण्डा (जालौन) में सामूहिक गायत्री जप, ४८६ गायत्री चालीसा का पाठ, ४०८०६ गायत्री मन्त्र लेखन हुआ। ता० ६ को १०२५ आहुतियों से पूर्णाहुति हवन किया गया।

—राम खिलावन द्विवेदी

कुन्देरा (सीतापुर) में सामूहिक जप व हवन किया गया। गायत्री चालीसा का पाठ भी हुआ।

—सोहनलाल वैद्य

बंधी (जबलपुर) में सामूहिक जप हवन व २४० गायत्री चालीसा के पाठ हुये। अन्तिम दिन भूसधाम से हवन किया गया।

—शारदाकांत श्रीवास्तव

चेचट (कोटा) में गायत्री जप व रामचरित मानस के पाठ का मिला जुला कार्यक्रम बनाया गया। मानस के अखंड पाठ के साथ गायत्री चालीसा के भी ४०पाठ नित्य प्रति हुये। अखंड दीप, पूजन,व रात्रिमें सत्सङ्गकी भी व्यवस्था अच्छी रही।

—मोतीलाल शर्मा

डेरापुर (कानपुर) में परिवार के अनेक सदस्यों ने २४ हजार के अनुष्ठान किये। नवमी को सामूहिक यज्ञ भी ससारोह पूर्वक हुआ।

—अतीश नारायण मिश्र

बुलन्दशहर में गायत्री अनुष्ठान के पूर्व २४ घन्टे का अखंड रामायण पाठ किया गया। गायत्री परि-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वार के सब साधकों ने २४–२४ हजार के अनुष्ठान किये और गायत्री चालीसा का पाठ किये ।

—रामचरन सिंह

मकोला (पीलीभीत) में सब सदस्यों ने मिल कर सामूहिक जप व हवन किया । २४ मन्त्र लेखन व गायत्री चालीसा के पाठ नित्य हुये ।

—लक्ष्मण सिंह मनराल

रेडरी (सीतापुर) में सामूहिक जप व हवन किया गया । —बजरङ्गसिंह

झालावाड़ (राजस्थान) में श्री माधोलाल शर्मा ने ५०हजार जप व ५ हजार आहुतियों का यज्ञानुष्ठान किया । श्री विश्वम्भर प्रसाद ने भी उत्साह पूर्वक अनुष्ठान किया । इन्होंने पहले भी ऐसा अनुष्ठान किया था ।

परिवार के अन्य सदस्यों ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया ।

गोविन्दपुर (काला हाँडी) में सब सदस्यों द्वारा सामूहिक अनुष्ठान किया गया । सदस्यों में काफी उत्साह है । —रविशंकर वेहेरा

विक्रमपुर (बरेली) में सामूहिक अनुष्ठान में ३ लाख २० हजार जप व ३२ हजार आहुतियां दी गई । समीपस्थ शाखाओं के सदस्यों का सहयोग बड़ा ही सराहनीय रहा । कीर्तन व चालीसा पाठ का कार्यक्रम भी बड़ा आकर्षक रहा ।

—चतुर्भुज गंगवार

गया (बिहार) के गायत्री परिवार के सभी सदस्यों ने २४-२४ हजार के अनुष्ठान किये । गायत्री चालीसा का पाठ हारमोनियम के साथ किया गया । मंत्रलेखन भी किया गया । रामनौमीको २४०० आहुतियों का हवन किया गया । आत्मदानी प्रेमप्रभा जी ने इस कार्य सराहनीय सहयोग दिया । ब्रह्मभोज, कन्या भोज तथा ब्रह्मदान (चालीसा) वितरण भी हुआ । —धर्मेन्द्रसिंह अध्यापक

खानपुर (झालावाड़) में नवरात्रि में साधकों ने अनुष्ठान का जप किया । रामनवमी के ब्रह्माणी देवी पर सामूहिक हवन व भोज हुआ । ता० ६ से ११ तक हरीगढ़ ग्राम के साधकों ने २४ हजार आहुतियों का यज्ञ कराया । जिसमें आसपास के बहुसंख्यक साधकों ने भाग लिया ।

—मन्त्री, शाखा सभा

कनगेटी (मन्दसोर) में सात सदस्यों ने चालीसा के २४०–२४० पाठ किये और एक–एक पुरश्चरण भी किया । —वैद्य गेंदालाल समाधिया

मलेहटा (हमीरपुर) में गायत्री–परिवार के १३ सदस्यों ने २४–२४ हजार के अनुष्ठान किये और ३१२० आहुतियों का हवन किया गया । साथ में भजन, कीर्तन, रामायण, ब्राह्मण भोजन का कार्यक्रम रहा । —विष्णुदत्त शर्मा

कांकेर (बस्तर) में ७ सदस्यों ने २४–२४ हजार जप तथा २४० चालीसा का पाठ किये । ता० १० को सामूहिक यज्ञ हुआ जिसमें १४४० आहुतियाँ दी गईं ।

—महतरदास कश्यप

गोंडा में सभी सदस्यों ने नित्य प्रति हवन किया और नवमी के १५ हजार आहुतियों यज्ञ किया गया । बच्चों की आहुतियाँ इससे अलग थीं । २५ कन्याओं और १५ साधुओं को भोजन कराया गया । ज्ञानदान में गायत्री चालीसा और ८ ट्रैक्टों के सेट बाँटने का संकल्प किया गया । —राम सेवक त्रिपाठी

श्योपुर कलां (मुरेना) में सवालक्ष जप और १२५० आहुतियों का अनुष्ठान नवमी को सकुशल पूर्ण हो गया । कुछ रूढ़िवादी विघ्न डालना चाहते थे पर माता की कृपा से समय पर वे सब अनुकूल हो गये । —देवी शङ्कर वैद्य

खुसरूपुर (पटना) के गायत्री मन्दिर पर नवरात्रि के लिये नौ नये कुण्ड बनाये गये जिसमें समारोह पूर्वक यज्ञ किया गया । ध्वजारोपण के साथ चालीसा और प्रसाद का वितरण भी किया गया । —बालकृष्ण वैद्य

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कसहीबहरा (रायपुर) में ५६ हजार जप और २५२० आहुतियों का अनुष्ठान किया गया। गायत्री चालीसा का प्रचार किया गया।

—राम गरीब अग्रवाल

मेरमाचाह (कोटा) में सात सदस्यों ने गायत्री जप व हवन का अनुष्ठान बड़े उत्साह से किया।

—माधौलाल गुप्ता

लुधियाना में गायत्री शाखा के सभी सदस्यों ने गायत्री के जप तथा गायत्री चालीसा के पाठ का अनुष्ठान बड़ी श्रद्धा से किया। इसका समस्त श्रेय माता विद्यावती जी (बिजनोर) को है।

—कृष्णकुमार छावड़ा

हथगाँव (फतेहपुर) में २ लाख ८८ हजार जप और तदनुसार आहुतियों का अनुष्ठान बड़े समारोह से हुआ जिसमें दस महिला सदस्याओं ने भाग लिया। १० वे दिन पूर्णाहुति के यज्ञ में ५० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया व गरी के गोले यज्ञ भगवान को चढ़ाये। चालीसा वितरण व कन्या-भोजन भी हुआ। —जगमोहन लाल निगम

बिजौली (फतेहपुर) में गायत्री अनुष्ठान बड़े उत्साह से मनाया गया। सामूहिक यज्ञ चौधरी गजराजसिंह के यहाँ किया गया। पश्चात् तीन आदमियों की टोली प्रचार हेतु बिजौली से कौंहराम गई और ५ नये सदस्य बनाये। —राम सनेही वर्मा

भगौनापुर (फतेहपुर) में गायत्री परिवार के सदस्यों ने २४-२४ हजार जप के अनुष्ठान किये। चालीसा का पाठ हारमोनियम पर समस्त शाखा-बन्धुओं द्वारा किया जाता रहा। कीर्तन भी होता था। नवमी को सामूहिक हवन हुआ।

—मोहनलाल वर्मा

भाजपुरा (इटावा) में शाखा के सब सदस्यों ने अनुष्ठानमें भाग लिया। कुल २८४० आहुतियोंका हवन हुआ। कन्याओं को भोजन कराके दक्षिणा दी गई। —दम नारायण बरूआ

सागौनभाड़ी (कालाहांडी, उड़ीसा) में ६शाखाओं के १०५ सदस्यों ने सम्मिलित होकर १५ लाख जप और दस हजार आहुतियों का हवन किया। दो हजार चालीसा पाठ व दस हजार मंत्र लेखन भी किया गया। उपासक गण नित्य कार्यक्रम के अनुसार उपासना करके हविष्यान्न करते थे और एक रात में तीन बजे उठकर नदी में स्नान करते थे।

—विनायक प्रसाद शर्मा

एलिचपुर (बरार) में सात दिन तक स्वामी शंकरानन्द जी के स्थान पर गायत्रीका जप व हवनकार्य सम्पन्न हुआ। जिसमें बहुसंख्यक नर-नारियों ने भाग लिया। आखिरी दिन गरीब तथा श्रद्धालु भक्तों को ब्रह्मभोज दिया गया। स्वामी शंकरानंद जी ने इस कार्य में हर तरह से प्रेरणा और सहायता दी।

—गोविन्द नारायण मिश्र

तनोड़िया (शाजापुर) में श्री नाहरसिंह जी राजपूत और नारायण सिंह जी राजपूत के यहाँ दो सामूहिक हवन सात हजार आहुतियों के सम्पन्न हुए। हर रविवार को सामूहिक यज्ञ का कार्यक्रम निश्चय कर लिया गया है। —मुन्नालाल कनेरियन

मनसूरपुर (मुजफ्फरपुर) में ता० ३१।३।५७ को एक हजार आहुतियों का यज्ञ किया, जिसमें बहुसंख्यक साधकों ने भाग लिया। दस अन्य सदस्य भी अनुष्ठान कर रहे हैं, जिसके पूर्ण होने पर एक लाख आहुतियों के सामूहिक यज्ञ की तैयारी की जायगी।

—बनारसी दत्त शर्मा

चतरखेड़ा (औरंगाबाद) में नवरात्रि में सदस्यों ने जप व गायत्री चालीसा के २७ पाठ प्रतिदिन किये। भिलाड़िया में श्री गुलाबसिंह के यहाँ हवन हुआ। —दत्तात्रय जाणशी

लसूड़िया (उज्जैन) में ५ सदस्यों ने २४-२४ हजार के अनुष्ठान किये और तीन सदस्यों ने १०८-१०८ चालीसा के पाठ किये। २१५० आहुतियों का हवन किया गया। —सेवादास वैष्णव

नीमरानी (खरगोन) की शाखा में सामूहिक अनुष्ठान किया गया। जिसमें सब सदस्यों ने सहयोग दिया। —रामेश्वर सोहनी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

रोसड़ा (दरभंगा) में गायत्री परिवार की तरफ से ४८ हजार जप व २८०० आहुति का अनुष्ठान भरतदासजी के मन्दिर में हुआ।

—विरेन्द्रप्रसाद नायक

हरीगढ़ (कोटा) में अनेक सदस्यों ने २४-२४ हजार के अनुष्ठान किये। ३०० आहुतियों का हवन नित्य प्रति होता रहा और ६ अप्रेल को २४ हजार आहुतियों का यज्ञ किया गया।

—मदनगोपाल बोहरा

गोरहाट (आसाम) में १० अप्रेल को नवरात्रि के उपलक्ष में सामूहिक हवन किया गया जिसमें २० सज्जन सम्मिलित थे। —वेददत्त

श्रीपतपुर (कानपुर) में नवरात में नित्य प्रति हवन किया गया। अन्तिम दिन २४० आहुतियाँ दी गईं। शाखा का कार्य सफलतापूर्वक अग्रसर हो रहा है। —रूपनारायण त्रिपाठी

फल्यापुर (नीमाड़) नवरात्रि की पुनीत वेला पर पत्येक सदस्य ने व्यक्तिगत अनुष्ठान और चालीसा पाठ करके सामूहिक पुरश्चरण एवं यज्ञ किया १६८०० आहुतियाँ डाली गईं। पाँच दिन सत्संग हुये जिनमें गायत्री उपासना में समय-समय पर उत्पन्न होने वाली सदस्यों की कठिनाइयों का समाधान किया गया।

—वना रूपचंद पटेल

खामगाँव (बुलढाना) में नवरात्रि का हवन सोमवार की रात्रि को १० बजे से ११। बजेतक ३१०० आहुतियों का किया गया। वहाँ सजावट तो किसी प्रकार की न थी, पर साधकों तथा दर्शकों की भावना से वह भरापूरा था। मङ्गल के दिन कन्या और बालकों का भोजन हुआ। यथासंभव अनेक सज्जनों के घर पर भी प्रसाद पहुँचाया गया।

—जयनारायण ब्रह्मचारी

इन्दौर में श्री बाबूराव जमीदार ने चैत्र शुक्ला १ से २४ लक्ष जप का पुरश्चरण शुरू किया है। रविवार को उनके यहाँ ४७५ आहुतियों का हवन किया गया।

—प्रत्यक्षदर्शी

कोडक्या (राजस्थान) में प्रतिदिन मंडी पर ३ हजार आहुतियों का यज्ञ किया गया और अष्टमी को २४ हजार की पूर्णाहुति की गई। प्रति दिन रामायण का परायण होता था। खीर-खांडका भोजन बालकों व साधुओं को कराया गया और गाँव वालों को भी प्रसाद में मिठाई बाँटी गई। स्कूल के लड़कों ने २१६० मंत्र लेखन किया। —जगन्नाथ व्यास

बावईकलां (नरसिंहपुर) में सामूहिक जप व २४०० आहुति का अनुष्ठान किया गया।

—लेखराम दुबे

पारादान (फतेहपुर) में नवरात्रि का जप व हवन फलाहार पर रह कर किया। नौमी को सामूहिक हवन किया गया। कन्याओं को भोजन कराया गया। —हनुमानप्रसाद वर्मा

नवाबगंज (बरेली) की गायत्री शाखा की अध्यक्षता में ता० ७ और ८ अप्रेल को विभिन्न स्थानों में यज्ञ हुये जिनमें ४ स्थानों पर एक-एक हजार आहुतियाँ दी गईं। —रामाभिलाष त्रिपाठी

बिजनौर (यू०पी०) में लगभग ५० महिलाओं ने समारोह में भाग लिया। ६ महिलाओं ने २४-२४ हजार के अनुष्ठान और गायत्री चालीसा २१ पाठ किये। गायत्री चालीसा वितरण किये गये।

—शान्तीदेवी

सुकेत (कोटा) में दस सदस्यों ने २४-२४ हजार का लघु अनुष्ठान किया और ता० ६ को २५०० आहुतियों का यज्ञ किया गया। यज्ञशाला बंदनवारों और चित्रों से सजाई गई थी। जिसमें गाँव के दो सौ से अधिक स्त्री-पुरुष इकट्ठे हुये। स्त्रियों को भी हवन में सम्मिलित किया गया। गायत्री चालीसा और मंत्र बांटे गये।

चाँचौड़ा (म० प्र०) के गायत्री परिवार ने चैत्र शुक्ला सप्तमी को श्री भगवान स्वरूपजी शूल के घर पर स्तवन और यज्ञ किया। चैत्र शुक्ला अष्टमी को तपोभूमि बगवाजेश्वर पर सामूहिक जप और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गायत्री हवन किया गया जिसमें श्री चम्पालाल जी वकील का विशेष सहयोग रहा। मधुसूदन गढ़ में नवमी को राम चरितमानस का पारायण तथा गायत्री मन्त्रों से हवन हुआ। श्री राम जन्मोत्सव के उपलक्ष में सज-धज कर जुलूस निकाला गया।

—श्रीकृष्ण कौशल्य

वडैरा (ग्वलियर) में आठ साधकों ने जप व आठ ने गायत्री चालीसा का अनुष्ठान किया। कुल जप १ लाख ६२ हजार हुआ और चालीसा के १६२० पाठ हुये। सबने मिलकर ३८ ४० आहुतियों का हवन किया। कन्याओं को भोजन कराया गया।

—लालाराम राजपूत

जांजगीर (बिलासपुर) में नौ दिन तक गायत्री मन्त्र का जप व रामायण का पाठ किया गया। नवमी हवन के उपरान्त ब्रह्म भोज आनन्द से पूरा हुआ।

—राम औतार तिवारी

खेड़ी (बुलडाना) में १४ सदस्यों ने अनुष्ठान में भाग लिया। ५ सदस्यों ने मंत्र लेखन किया।

—मंत्री, शाखा सभा

महबूबाद (हैदराबाद) में नवरात्री व हनुमान जयंती का कार्यक्रम बड़े उत्साह से मनाया गया। यज्ञ में ४ से ६ हजार तक आहुतियाँ डाली गईं।

—विलासीराम

केवला (दमोह) में २४ हजार हवन का अनुष्ठान किया गया। कन्या भोजन भी कराया गया।

—जगन्नाथ प्रसाद तिवारी

कामठी (नागपुर) में २०५ माला और चालीसा के १०६८ पाठ किये रामचरितमानस का पाठ भी किया गया। २४०० मंत्र लिखे गये।

—शिवशङ्कर मिश्र

वापी (सूरत) में गायत्री परिवार के १६ उपासक एकत्रित होकर दमण गये और वहाँ से तुंगारेश्वर जाकर गायत्री प्रचार और यज्ञ किया। चैत्र सुदी दशमी को ब्रह्म भोज व ब्रह्मदान किया।

—कृष्णराव हरीभाऊ घोड़े

हर्रई (छिन्दवाड़ा) में अनुष्ठान विधि पूर्वक किया गया। कन्याओं को भोजन कराया गया। दसवें दिन 'जवारों' का जलूस बैण्ड के साथ निकाला गया जिसमें २, २॥ फर्लांङ्ग तक भीड़ थी।

—भूरेलाल ब्रह्मचारी

सागर (मध्य प्रदेश) में समस्त अनुष्ठान विधि पूर्वक किया गया। हवन में १०० व्यक्ति उपस्थित थे। पश्चात् २५ कन्याओं को भोजन कराया गया व २४० चालीसा बाँटा गया। यज्ञ मंडप चित्रकारी से सजाया गया था और हारमोनियम ढोलक आदि बाजों की भी व्यवस्था थी। हवन श्री कन्छेदी लाल की भूमि पर किया गया, जिन्होंने इस कार्य में हर तरह से सहायता दी।

—अयोध्या प्रसाद

कुर्रा (हमीरपुर) में १५ साधकों ने २४-२४ हजार जप व चालीसा २४० पाठ किये। सब ने हवन करके प्रसाद वितरण किया। ब्रह्म भोज में ५४० चालीसा वितरण किये गये। तुलसीदास जी गुप्ता ने अष्टमी के दिन सवा लाख गायत्री मंत्र लेखन और नवलकिशोर जी सर्राफ ने २४ हजार मंत्र लेखन का संकल्प किया और उसी दिन से लिखना आरम्भ कर दिया।

—भवानीदीन शर्मा

राय पुरिया (झाबुआ) में रामजी मन्दिर पर गायत्री मंत्र का १०० आहुतियों का हवन हुआ। सत्सङ्ग भी होता रहा।

—मन्त्री, शाखा सभा

मोरवी (सौराष्ट्र)में नवरात्रि का अनुष्ठान विधि पूर्वक किया गया। नित्य सामूहिक जाप और चालीसा का पाठ किया गया।

—करुणा शंकर जग जीवन जानी

लामटा (बाला घाट) में ४ सदस्यों ने अनुष्ठान जप किया जिसका सामूहिक हवन पूर्णिमा को किया गया।

—हरदयाल प्रसाद सोनी

फतुन्ना (फर्रुखाबाद) में गायत्री-परिवार के सदस्यों ने सामूहिक रूप से अनुष्ठान किया जिसके

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पूर्णाहुति नवमी को समारोह पूर्वक की गई। जनता के हृदय पर इस आयोजन का बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। —पातीराम त्रिपाठी विशारद

ई० एस० डी० मन्दिर (२४ परगना) में २४ सौ आहुति का हवन किया गया जिसमें कितने ही अधिकारियों ने श्रद्धा पूर्वक भाग लिया।

—रामप्रसाद मिश्र

सतना (रीवां)में २ लाख जप, २१०० चालीसा पाठ व २० हजार आहुतियों का अनुष्ठान सब सदस्यों ने मिलकर किया। अधिकांश साधकों ने अनुष्ठान के प्रायः सभी नियम पालन किये। कुछ तो यज्ञ भूमि में ही निवास करने लगे थे। २४ घन्टे का अखण्ड चालीसा पाठ भी किया गया।

—राधारमन मिश्र

टाटा नगर में नौ सदस्यों ने २४--२४ हजार का जप किया। बुधवार ता० १० अप्रेल को पूर्णाहुति हुई। —राजदेव कुमारी

आगरा के रावली मौहल्ले में रामनौमी को ८-८ होताओं की ८ टोलियों ने लगभग १२५० आहुतियों का हवन किया। इसमें छीपीटोला बालूगंज आदि के सदस्यों ने भी भाग लिया था। रामानन्द जी शास्त्रीका गायत्री की महिमा पर प्रवचन हुआ। श्री व्यास जी का रामायण पर विद्वतापूर्ण भाषण हुआ। बालकों की अन्ताक्षरी हुई और महिलाओं ने कीर्तन किया।

—जगदीश नारायण श्रीवास्तव

खेरालु (उ० गुजरात) में अष्टमी के दिन दस हजार आहुतियों का हवन किया गया। परिवार के ३० सदस्यों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। मुख्य आचार्य श्री जोहताराम भाई थे। पूर्णाहुति के समय दर्शकों बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

—श्याम शंकर त्रिवेदी

डबरा (म० प्र०) में गायत्री परिवार के अनेक सदस्यों ने अनुष्ठान में भाग लिया। एकादशी को पूर्णाहुति व ब्रह्म--भोज हुआ।

—जमुना प्रसाद बड़ौरिया

रनायल (निमाड़) में चार सदस्यों ने २४--२४ हजार के अनुष्ठान किये। नवमी को रामायण का परायण किया गया। १० वीं को पूर्णाहुति में १०० सज्जन उपस्थित थे। ब्रह्म--भोज में ५० व्यक्तियों के लिये सामान बनाया पर वह १०० आदमियों के खाने के बाद भी बहुत सा बच रहा और गरीबों को बाँट दिया गया। जनता को यह एक चमत्कार ही जान पड़ा।

—भगवती प्रसाद पाण्डे

जगेली (पुर्निया) में गायत्री परिवार के सदस्यों सामूहिक जप व हवन आदि अनुष्ठान विधि पूर्वक किया। पूर्णाहुति में बहुत से दर्शक भी उपस्थित थे। नगर कीर्तन भी किया गया।

—मोतीलाल गोस्वामी

लालास (नागौर, राजस्थान) की शाखा के नौ सदस्यों ने २४--२४ का जप किया। गायत्री चालीसा पाठ और रामायण का नवान्हिक पारायण भी सानन्द समाप्त हुआ। हवन के दिन पीतवस्त्र धारी होताओं को देखकर गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति का स्मरण होता था। महन्त लादूदास जी ने ब्राह्मण भोजन और चाँदमल जी ने कुँवारी कन्याओं को भोजन कराया।

—राम गोपाल जोशी

डुमरिया (भागलपुर) में गायत्री परिवार के सदस्यों ने २४--२४ हजार जप के अनुष्ठान किये और बा० कुमुदानंदझा की अध्यक्षता में हवन किया गया।

—पद्माकर झा

फत्तेपुर (उन्नाव) में गायत्री परिवार के सदस्यों ने संकल्प से अधिक जप किया। हवन के बाद प्रसाद वितरण, कन्याओं को भोजन तथा शाम को कीर्तन का आयोजन रहा। लोगों ने बड़ी श्रद्धा से जप किया।

—नर्मदा सिंह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धर्मात्माओं के सराहनीय सत्प्रयत्न

महूड़िया (नीमच) में चैत्र वदी अमावस्या को गायत्री यज्ञ हुआ जिसमें काफी ग्रामवासी जनता ने भाग लिया। संगीत का कार्यक्रम बड़ा मनोरंजक और प्रभावशाली हुआ। यहाँ के गायत्री उपासक सोहनलालजी ने माता से प्रार्थना की। जिससे उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। —नन्दलाल शर्मा

हथगाँव (फतेहपुर) में सवा दो लाख जप और आहुतियों का यज्ञ किया गया। —जगमोहनलाल

मोर्वी (सौराष्ट्र) में गायत्री महायज्ञ सानंदपूर्ण हुआ। जिसमें पौने दो करोड़ जप किया गया। साठ व्यक्तियों ने तीन दिन तक हवन किया और १५०० ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। महाराज लखधीरजी और राजमातुश्री भी उपस्थित थे, उन्होंने यज्ञ के लिये ढाई हजार रु० सहायतार्थ दिया। उन्हीं के हाथों से दक्षिणा दिलाई गई। आचार्य पद पर श्री० रमाकान्त कालिदास शुक्ल थे।

—हेमन्तकुमार शंकरलाल दवे

गरोठ (मध्यप्रदेश) में गायत्री महायज्ञ सकुशल समाप्त हो गया। पाँच कुण्डों में पचास उपासकों ने सवालाख आहुतियाँ दी। १५ सदस्यों को यज्ञोपवीत दिये गये। यज्ञ में सभी वर्ग के सज्जनों का सहयोग रहा और लोग गायत्री परिवार के सदस्य बने। स्वामी प्रेमानंदजी तथा नत्थासिंहजी के उपदेश और भजनों से जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। —हरीराम वैद

भगवानपुर (शाहजहाँपुर) में ता० १ मार्च से १५ मार्च तक स्वामी योगानन्दजी के उपदेश और भाषण होते रहे। १६ मार्च को एक हजार आहुतियों का हवन हुआ। २१ मार्च को सनेता सफीपुर ६०० आहुतियों का हवन और ४७१ मंत्र लेखन हुआ। भविष्य के लिये यहाँ ६ कुण्डों में सवालक्ष आहुतियों के यज्ञ की तैयारी हो रही है। अखत्यारपुर में नव-रात्रि में पाँच सदस्यों ने एक लाख बीस हजार जप किया और हर रोज हवन हुआ तथा अन्तिम दिन २४०० आहुतियों का हवन किया गया।

—रघुराजसिंह सोलंकी

बल्लनी बाजार (बिलासपुर) में गायत्री शाखा स्थापित होगई है जिसके सदस्य पशुबलि निषेध के लिये जोरदार आंदोलन कर रहे हैं। भटगाँव में देवी के मंदिर में होने वाली पशु हिंसा को रोकने के लिये एक नोटिस भी वितरण किया गया है।

—मोहनलाल गुप्त

जमशेदपुर में २४ लाख जप और २४ घण्टे तक आहुतियों का यज्ञ हुआ। गायत्री चालीसा और ज्ञान अङ्क वितरण किये गये। माता की कृपा से किसी तरह की अशान्ति नहीं हुई। —ऋषेश्वरनाथ

पिलखना (इटावा) की शाखा ने प्रति मास एक यज्ञ करने का निश्चय किया है। होली पर बड़े उत्साह से लाउडस्पीकर द्वारा मन्त्रोच्चारण करके यज्ञ अनुष्ठान किया गया। —कृष्णलाल द्विवेदी

मऊरानीपुर (झाँसी) में यज्ञ में प्रति-दिन २५ ब्राह्मणों द्वारा २५०० गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ ११ दिन तक दी गईं। यज्ञ की अग्नि अरणीमन्थन द्वारा प्रकट की गई। —सालिगराम पाण्डे

जुल्मी शाखा (कोटा) में हवन का कार्यक्रम एक सप्ताह से बन्द होगया था। यह देखकर सब को धक्का पहुँचा और सबने प्रेरणा की कि गायत्री का साप्ताहिक हवन बन्द नहीं होना चाहिये। इसके फल से सब सदस्यों ने जिन में दो तीन महिलाएँ भी थीं, इकट्ठा होकर हवन किया और हवन के नियम को आगे कभी खंडित न करने का निश्चय किया। गाँव-बदरखान (चेचट) में नई शाखा खोली गई है। खेड़ा रुद्धा, अलोद और राजपुरा गाँवों में भी प्रचार किया गया और वहाँ ५-५ कुण्डों के यज्ञों की व्यवस्था हो रही है। —रामकिशन शर्मा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सोरासा (सौराष्ट्र) के गायत्री-केन्द्र में माताजी की बहुत बड़ी तस्वीर बनवाकर रखी गई है। १५० धार्मिक पुस्तकें भी पुस्तकालय के लिए एकत्रित की गई हैं। सवालाख गायत्री मंत्र लिखा गया है 'राम नाम' भी ८ लाख लिखा है।

—नर्मदाशंकर एम० जोषी

गरोठ (म०प्र०) में श्री कमलाप्रसादजी मास्टरके यहाँ विश्वशाँति हेतु गायत्री यज्ञ हुआ जिसमें ट्रेनिंग स्कूल के मास्टरों और विद्यार्थियों ने भी श्रद्धापूर्वक श्रद्धापूर्वक भाग लिया तथा कन्हैयालाल गुप्ता मास्टर का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया।

—हरी राम वैद

मालेगाँव सिटी (नासिक) में तपोमूर्ति पूज्य गायत्री स्वरूप जी का आगमन स्वर्गाश्रम (हरिद्वार) से हुआ और शाखा-सभा में कई दिन तक उनके सारगर्भित उपदेश होते रहे।

—जगन्नाथ बद्री नारायण भँवर

ब्यावर में प्रत्येक रविवार को विभिन्न स्थानों पर यज्ञ किये जाते हैं। यह क्रम १ वर्ष तक चलता रहेगा। सेठ मुकुन्ददास राठीने गायत्री पुस्तकालय के लिए सम्पूर्ण गायत्री साहित्य के २ सेट मँगाकर दिए हैं। सेठ दुर्गा प्रसाद जी ने एक हजार चालीसा स्वाध्यार्थ बाँटे हैं। —मोहनलाल शर्मा

ग्राम गुल्हार (विदिशा) झाँसी में गायत्री-यज्ञ बड़े समारोह से हुआ। जिसमें झाँसी के पं० शिव कुमार शास्त्री के प्रभावशाली उपदेश हुए। यज्ञ श्री बदसरण प्रसाद जी ने कराया था जिसमें हजारों ग्रामवासियों ने भाग लिया। इसमें तीन सौ रुपये व्यय किया गया। —चालकृष्ण अग्रवाल

कसेरकलां (बुलन्दशहर) क्षेत्र में स्वामी ब्रह्मस्वरूप जी ने गायत्री-प्रचार करके बुलन्दशहर, अनूपशहर, चरौरा, कसेरकलां और संभल (मुरादाबाद) में शाखाओं की स्थापना कराई। —एक सदस्य

अमलार (शुजालपुर) में श्री प्यारेलाल वकील के यहाँ यज्ञ हुआ। इसमें गायत्री सदस्य श्री नारायण प्रसाद शर्मा ने बहुत सहयोग दिया। हनुमान जयंती पर खेड़पती हनुमान जी के स्थान पर मास्टर लक्ष्मी नारायण जी आदि के सहयोग से हवन किया गया।

—राधाकिशन तिवारी

बकानी(झालावाड़)गुरुकुल में ता०१२से१४अप्रेल तक गायत्री महायज्ञ श्री स्वामी रामेश्वर आश्रम जी महाराज की अध्यक्षता में हुआ। अ० भा० गायत्री परिवार के कुलपति पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, मथुरा ने भी इस समारोह में पधारने की कृपा की थी। अन्य विद्वान और उपदेशक भी पधारे थे। इस समारोह का आस-पास की जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा और गायत्री के प्रचार में आशातीत वृद्धि हुई।

—भँवरलाल शर्मा

झाँसी में आगामी १७, १८, १९ मई को सवालक्ष आहुति और २४ लक्ष जप का यज्ञ करने का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर "अ०भा० बुन्देलखंड गायत्री परिवार सम्मेलन करने का भी आयोजन है। —बालकृष्ण अग्रवाल

बीना (सागर) में २४ लक्ष जप तथा २४ हजार आहुतियों के यज्ञ का अनुष्ठान सानन्द पूर्ण होगया। यज्ञ का स्थान नरसिंह जी के मन्दिर में रखा गया था जिसमें अनेक धर्म प्रेमियों ने तन, मन, धन से सहयोग किया। रात्रिमें रामलीला होती रही। पूर्णाहुति के बाद ४०० व्यक्तियों का सहभोज हुआ।

—शालिगराम दुबे

मनसूरपुर (मुजफ्फरनगर) में एक गायत्री उपासक के यहाँ सवालाख मंत्र व हवन का अनुष्ठान विधिपूर्वक किया गया। जिसमें गायत्री परिवार के १२ सदस्यों ने भाग लिया।

—बनारसी दत्त शर्मा

तनोड़िया (शाजापुर) में गायत्री आश्रम का आठवाँ सामूहिक हवन डाक्टर एल० पी० आनन्द के यहाँ हुआ जिसमें ३२५० आहुतियाँ दी गईं। इस यज्ञ में संस्कृत के विद्वान और गायत्री के अनन्य प्रेमी मद्रास निवासी श्री अनन्तराम शास्त्री ने भी भाग लिया था।

—गुन्नालाल 'कर्मयोगी'

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नरसिंहपुर (म०प्र०) में श्री हरिप्रसाद जी के स्थान पर सवालाख जप व २४ हजार आहुति, सवा हजार गायत्री चालीसा, रामायण, पुराण आदि का पारायण का आयोजन किया गया है। यह यज्ञ २८, २९ अप्रेल को होगा। —मन्त्री शाखा

घोड़ाघाट ग्राम (बहादुरगञ्ज, पुर्नियाँ) में सामूहिक गायत्री हवन किया गया। साथ में गीता-यज्ञ, मानस-यज्ञ, अष्टयाम संकीर्तन का भी आयोजन था। यह यज्ञ विश्व कल्यार्थ किया गया था। घाट, स्थानों पर गायत्री-परिवार की शाखायें स्थापित करने के लिए ४५ प्रतिज्ञा-पत्र दिये गये। श्री चतुरानन्द झा ने इस यज्ञ में आये ५०० सज्जनों के भोजन का प्रबन्ध अपने ऊपर लिया और यज्ञ की सामग्री भी दी। इस तरह का सफल यज्ञ इस इलाके में बहुत समय से नहीं हुआ था। —खुशीनाथ

आरंग (रायपुर) में गायत्री शाखा की ओर से आपके ब्रह्मास्त्र अनुनान के संकल्प के अनुसार एक वर्ष तक नित्य २४हजार जप का आयोजन किया गया है। —विद्याप्रसाद मिश्रा

पेटलावद (स्टेशन वामनिया म०प्र०) में विश्व कल्याणार्थ नीलकंठेश्वर महादेव के मंदिर पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन ४ मई से ६ मई तक के लिये किया गया है। साथ में रुद्रयज्ञ, विद्वानों के भाषण, हरिकथा, ब्राह्मण भोजन, आदि भी होंगे।

—सोमेश्वर चतुर्वेदी

गोविन्दपुर (भागलपुर) में पं० द्वारका प्रसाद गोस्वामी के यहाँ यज्ञ हुआ। उस अवसर पर आगन्तुक सज्जनों में प्रचार करने बकिया, कुमादपुर, नयाटोला, पकरा, परभेली के २८ सदस्य बने और चार शाखायें स्थापित हुईं। —मोतीलाल गोस्वामी

भगौनपुर (फतेहपुर) में सदस्यों द्वारा दो कुण्डों में सामूहिक हवन हुआ। ४ सदस्यों ने यज्ञोपवीत धराण किया। सठिगवाँ, पारादान, विजौली पतारी, सैंठी, बबुरिहापुर आदि स्थानों की शाखाओं सदस्य भी पधारे थे। —मोहनलाल शर्मा

तूँगा (जयपुर) में जो वेस्टर्न रेलवे बाँदीकुई जंकशन के पास है, २४ लाख जप व २४ सौ आहुतियों का यज्ञ ५ हवन कुण्डों में १०० होताओं द्वारा सम्पन्न होगा। इसकी तिथियाँ गंगादशहरा से आषाढ़ कृष्णपक्ष ५ तक रखी गई हैं। तूँगाके पास के स्टेशन बस्सी है। —कन्हैयालाल मिश्र

झाँसी की गायत्री शाखा की ओर से श्रीगिरिजा सहायजी खरे प्रचारार्थ आये। उनकीप्रेरणासे जतारा में पूर्णमासी के दिन श्री रघुवीर सहाय श्रीवास्तव अ० डि० इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स के यहाँ यज्ञ हुआ। अन्त में यज्ञ और गायत्री के महत्व पर प्रकाश डाला गया। टीकमगढ़ में ला० मनोहरलाल श्रीवास्तव के मकान पर यज्ञ हुआ। नये सदस्य भी बनाये गये। वानपुरमें श्रीप्रभुदयालजी श्रीवास्तवके यहाँ यज्ञ किया गया। शाखा के पुराने सदस्यों से ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान को सफल बनाने के विषय में अनुरोध किया गया।

—वैजनाथ सोनकिया

खेर्डा (खामगाँव) में हनुमानजयंती के उपलक्ष में ७५०० आहुतियों का यज्ञ किया गया। यज्ञशाला में ८ कुण्ड थे और उसकी सजावट देखने योग्य थी, श्री मुरलीधर पाटील का यज्ञ-महिमा पर भाषण हुआ। श्री किसन सखाराम जी के हाथ से पूर्णाहुति कराई गई। अन्त ५०० गायत्री प्रेमियों का ब्रह्मभोज हुआ। जिसमें आस-पास के दस गाँवों के व्यक्ति हुए। —किसन सखाराम परलीकर

गुदरावन (राजस्थान) में गायत्री महायज्ञ ३ दिन तक सुचारु रूप से चलता रहा। स्वामी प्रेमानंद जी के उपदेश और कुँवर नत्थासिंह जी के भजनों का बड़ा प्रभाव पड़ा। उत्तराखण्ड निवासी तपस्वी रामलखनदास जी भी पूर्णाहुति के दिन आ गये और उनका सत्संग भी कल्याणकारी था। उस दिन तीन हजार से अधिक व्यक्ति उपस्थिष्ट थे। रामलीला भी नित्य प्रति होती थी। सर्व श्री दामोदर जी, जयदेव जी, रामनारायण जी, मथुरालाल जी व भेरूलाल जी आदि का परिश्रम सराहनीय रहा।

—बाबूलाल शर्मा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

* गायत्री तपोभूमि समाचार *

गायत्री तपोभूमि में गतमास से बिजनौर के आत्मदानी वकील श्री० अशर्फीलालजी के स्थायीरूप से निवास करने के लिए आ जाने और यहाँ की व्यवस्था अपने हाथ में ले लेने से यहां कई महत्व पूर्ण सुधार हुए हैं। आचार्यजी अनेक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण तपोभूमि की व्यवस्था पर पूरी तरह ध्यान न दे पाते थे इस कारण यहाँ सुव्यवस्था में जो कमी रहती थी वह अब धीरे-धीरे दूर होती चली जा रही है। आशा है कुछ ही दिनों में तपोभूमि आदर्शों की दृष्टि से ही नहीं व्यवस्था की दृष्टि से भी एक आदर्श आश्रम बनेगी।

प्रसन्नता की बात है कि देश भर में इसबार नवरात्रि में गायत्री उपासना का आयोजन बड़े विशाल रूप में हुआ। ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान के निर्धारित जप,पाठ लेखन हवन में अभी कमी है। उपासकों को अभी कुछ और अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तभी निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति होगी।

तपोभूमि में तीन मेजिक लालटेन मशीनें रंगीन चित्रपट दिखाकर जनता में सांस्कृतिक प्रचार करने के लिए मंगाली गई है। अब इन्हें दिखाने के लिए प्रचारक शिक्षित किये जा रहे हैं। जो देश भर में समय-समय पर होते रहने वाले यज्ञ आयोजनों में, जा-जा कर इन मशीनों की सहायता से धर्म प्रचार करते रहें, ऐसे सुयोग्य धर्म प्रचारकों की तपोभूमि में अभी बहुत कमी है। धर्म प्रचार के लिए अपने परिवार के कुछ ऐसे उत्साही सज्जन देश भर में भ्रमण करते रहने को कटिबद्ध हो जावें तो निस्संदेह एक बड़े अभाव की पूर्ति हो सकती है।

धर्म सेवा शिक्षण-शिविर

गतमास गायत्री परिवार की शाखाओं से अनुरोध किया गया था कि अपने अपने यहां से कुछ ऐसे व्यक्ति यहां शिक्षण के लिए भेजें जो उनके शाखा संचालन कार्य में सहायक सिद्ध हो सकें। इस प्रकार की धर्म सेवा का शिक्षण शिविर ता० १४ मई से १४ जून तक एक महीने चलेगा। जिन छात्रों को स्वीकृति दी जा चुकी है वे १३ मई की शाम तक आजावें ताकि ता० १४ से शिक्षण आरम्भ किया जासके।

अ० भा० गायत्री परिवार सम्मेलन

इस वर्ष गायत्री जयन्ती के अवसर पर अ० भा० गायत्री परिवार सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया है। इसकी तिथियाँ ज्येष्ठ सुदी १० (गायत्री-जयन्ती) से लेकर ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा तक तदनुसार ७, ८, ९, १०, ११, १२ जून होंगी।

अब तक नवरात्रियों में गायत्री परिवार के सदस्य मथुरा आया करते थे और अनुष्ठान, हवन, तीर्थ-यात्रा, प्रवचन आदि का लाभ उठाते थे। अब यह नीति निर्धारित करदी गई है कि नवरात्रियों का आयोजन सभी उपासक अपने-अपने यहाँ करें और वर्ष में एक बार परिवार के प्रमुख सदस्य एकत्रित होकर परस्पर मिल-जुल लिया करें। सम्मेलन के उद्देश्य यह हैं :—

(१) गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं का एक दूसरे से अधिक परिचय एवं परस्पर घनिष्ठ सम्बन्धों की स्थापना। (२) अपनी उपासना सम्बन्धी प्रगति, शंका, कठिनाई एवं आगामी कदम के सम्बन्ध में परामर्श। (३) इस वर्ष के अत्यन्त महत्वपूर्ण ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान पर विचार-विनिमय। (४) गायत्री परिवार की शाखा संस्थाओं की प्रगति एवं भावी योजनाओं का निर्धारण। (५) सांस्कृतिक पुनरुत्थान योजना के लिए आगामी वर्ष की रूप रेखा। (६) परिजनों के व्यवहारिक जीवन में उपस्थित समस्या पर आवश्यक मार्ग-दर्शन। (७) विश्व की मानव जाति की,वर्तमान स्थिति को समझना और उनके सुलझाने का मार्ग ढूँढ़ना।

इन पंक्तियों को ही निमन्त्रण पत्र मान कर गायत्री प्रेमी इस अवसर पर पधारने की तैयारी करें।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.